हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

रायपुर, बुधवार 30 अप्रैल 2025

अक्षय तृतीया की मंगलकामनाएं

20 वर्ष का साथ हमारा,
कोटि-कोटि धन्यवाद आपका!

SUMEET JEWELLERS CELEBRATING 20 YEARS OF SUCCESS

THIS
अक्षय तृतीया
Bring Home Gold Luck
28th April - 6th May

LOWEST GOLD PRICE

PURITY	MARKET PRICE	OUR PRICE*
22 Ct	₹ 88100	₹ 82550
20 Ct	₹ 81000	₹ 75450
18 Ct	₹ 72150	₹ 66600

*conditions apply *GST as applicable

HALLMARKED GOLD
GOLD YOU CAN TRUST

SUMEET
JEWELLERS

follow us on f |

RAIPUR | DURG | RAJIM | RAJNANDGAON

SUNDAY OPEN

राजधानी के शहीद स्मारक भवन में मंगलवार को वन नेशन, वन इलेक्शन पर विशेष सामान्य सभा हुई। वन नेशन वन इलेक्शन के प्रस्ताव पर चर्चा करने सभापति सूर्यकांत राठौर ने नगर निगम रायपुर की ओर से विशेष सामान्य सभा बुलाई। यह सभा करीब 30 वर्ष बाद निगम मुख्यालय के बाहर शहीद स्मारक भवन में हुई। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया। अब उसे राज्य शासन के मायम से राष्ट्रपति को भेजा जाएगा।

चर्चा के बाद प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित

वन नेशन-वन इलेक्शन के समर्थन में प्रस्ताव पारित, भाजपा पार्षदों ने सदन में लगाये नारे

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

सुबह साढ़े दस बजे सभा में सबसे पहले पहलगाम के आतंकी हमले में दिवंगत रायपुर निवासी दिनेश मिरानिया सहित अन्य दिवंगतों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद वन नेशन वन इलेक्शन प्रस्ताव का समर्थन सभी भाजपा पार्षदों ने किया। महापौर मीनल चौबे ने कहा कि देश के लिए यह बहुत अहम विषय है। इसके पारित होने से चुनाव में धन और समय की बचत होगी। साथ ही विकास कार्य बाधित नहीं होंगे क्योंकि बार-बार चुनावों में आचार संहिता लगाई जाती है। विकास प्रभावित होता है। वहीं जलसंकट पर चर्चा नहीं कराने के विरोध में कांग्रेस पार्षद दल ने सदन से बहिर्गमन किया।

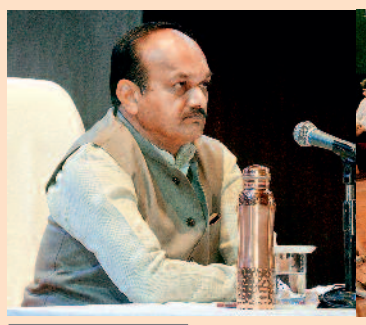

आकाश तिवारी की अनुपस्थिति की रही चर्चा

बैठक में पीसीसी द्वारा नियुक्त नेता प्रतिपक्ष और पंडित रविशंकर शुक्ल वार्ड पार्षद आकाश तिवारी नहीं आये। उनकी अनुपस्थिति को लेकर सदन के बाहर चर्चा होती रही। वहीं सदन में दो नेता प्रतिपक्ष को लेकर चल रही अटकलों पर विराम लग गया। बजट सभा के बाद संदीप साहू ने दूसरी बार नेता प्रतिपक्ष के रूप में सदन में बेबाकी से अपनी बात रखी।

कांग्रेस ने किया सदन का अपमान, प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित : मीनल

महापौर मीनल चौबे ने सदन को संबोधित करते हुए कहा कि महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के दौरान विपक्ष पलायन कर चुका है, कांग्रेस ने सदन का अपमान किया है। देश चाहता है कि सार्थक विचार-विमर्श हो, इसलिए सभा में चर्चा की जाए। मेरा दायित्व है कि जल संकट पर भी सोच-विचार करूं। देश हित में सोचते हुए विशेष सामान्य सभा रखी गयी। इसमें सर्वसम्मति से प्रस्ताव भी पारित हुआ है।

विपक्ष ने वक्तव्य में व्यवधान डालने का लगाया आरोप

नेता प्रतिपक्ष के वक्तव्य पर टोका टाकी को लेकर विपक्ष ने सभा की कार्यवाही में व्यवधान डालने का आरोप लगाया। मौलाना अब्दुल रउफ वार्ड पार्षद अर्जुमन ढेबर ने आतंकी हमले के बीच चुनावी प्रस्ताव के लिए विशेष सभा बुलाने का विरोध किया। उन्होंने पानी और सफाई जैसे मुद्दों पर चर्चा न कर राजनीतिक मुद्दा लाने पर सवाल उठाया। इस पर भाजपा पार्षद कृतिका जैन ने कटाक्ष करते हुए कहा कि हम सिर्फ नाली और पानी के लिए पार्षद नहीं बने। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारा भी मत एक देश एक चुनाव में लिया जा रहा है। पार्षद शेख मुसीर ने कहा एक देश एक चुनाव लागू करना इतना आसान और व्यवहारिक नहीं लगता।

खबर संक्षेप

नहीं रहे सक्ती राजा सुरेंद्र बहादुर

सक्ती। सक्ती रियासत के राजा एवं अविभाजित मध्य प्रदेश शासन में कैबिनेट मंत्री रहे राजा सुरेंद्र बहादुर का मंगलवार 29 अप्रैल को अपरान्ह 2.30 बजे निधन हो गया। 83 वर्ष के राजा सुरेंद्र बहादुर पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे और वे अपने महल में ही स्वास्थ्य लाभ ले रहे थे। उल्लेखनीय है कि राजा सुरेंद्र बहादुर ने सक्ती विधानसभा क्षेत्र से कई बार प्रतिनिधित्व किया और वे सक्ती विधायक होने के साथ अविभाजित मध्य प्रदेश शासन काल में कैबिनेट मंत्री रहे। करीब 2 वर्ष पूर्व उन्होंने अपने दत्तक पुत्र धर्मेंद्र बहादुर का राज्याभिषेक किया था। राजा सुरेंद्र बहादुर का पार्थिव देह उनके हरिगुजर महल में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है, इधर राजा सुरेन्द्र बहादुर के निधन की सूचना मिलते ही जन प्रतिनिधियों के साथ स्थानीयजन की भीड़ लगने लगी।

सिविल सर्जन को नया जिला, दो डाक्टर बस्तर, तीसरे को एमसीबी भेजा गया

जांजगीर-चांपा जिला अस्पताल के विवादों का अंत सिविल सर्जन सहित चार डाक्टरों का तबादला

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

करीब दो महीने से जांजगीर-चांपा जिला अस्पताल में चला आ रहा विवाद शासन के तबादला आदेश के बाद थम गया। विवादों से घिरे सिविल सर्जन को सारंगढ़-बिलाईगढ़ भेजा गया है। वहीं दो डाक्टरों की पोस्टिंग दोरनापाल और नारायणपुर में की गई है।तीसरे डाक्टर को भरतपुर-चिरमिरी जिले के स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ किया गया है। जिला अस्पताल जांजगीर-चांपा में पदस्थ सिविल सर्जन डा. दीपक जायसवाल ने मार्च के पहले सप्ताह में एक नर्सिंग स्टाफ को फटकार लगाई थी जिसके बाद मामले ने तूल पकड़ लिया था।

नर्सिंग स्टाफ के साथ डाक्टरों और अन्य कर्मचारियों ने डा. जायसवाल के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। उन पर विभिन्न तरह के गंभीर आरोप लगाए गए थे और डाक्टरों ने काम करना बंद कर दिया था। डाक्टरों ने सिविल सर्जन के खिलाफ मुख्यमंत्री से भी शिकायत की थी। विभिन्न तरह के आरोपों के बीच जिले के कलेक्टर ने जांच समिति का गठन किया था। इसके अलावा मामले को देखते हुए स्वास्थ्य संचालनालय से भी जांच के लिए टीम वहां के अस्पताल तक पहुंची थी। विभिन्न प्रक्रियाओं के बाद भी विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा था। इस बीच शासन ने पिछले दिनों तबादला आदेश जारी कर विवाद का हल निकाल लिया। आदेश के जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. दीपक जायसवाल को सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिला अस्पताल का प्रभारी सिविल सर्जन नियुक्त किया है। वहीं विवाद के बीच फ्रंट में रहने वाले चिकित्सा अधिकारी डा. इकबाल हुसैन को सीएचसी नारायणपुर, दंत चिकित्सक विष्णु पैगवार को दोरनापाल सीएचसी, डा. दीपक साहू को एमसीबी जिले के खड़गंवा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में पदस्थ किया गया है। वहीं भरतपुर-चिरमिरी जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डा. एस कुजुर को जांजगीर ठाकुर जिला अस्पताल जांजगीर, पैथालॉजिस्ट डा. लोकेश साहू को धमतरी से सिविल सर्जन बेमेतरा, नारायणपुर सीएचसी के डा. केशव सिंह ठाकुर को सीएचसी बरौली महासमुंद में पदस्थ किया गया है।

आंदोलन का नेतृत्व करने वालों को सजा

जांजगीर जिला अस्पताल के चिकित्सा अधिकारी एवं सीडा के अध्यक्ष डा. इकबाल हुसैन का कहना है कि न प्रमोशन होगा,न सीनियरिटी का फॉलो किया जाएगा और न ही भर्ती नियम बनाया जाएगा। अगर कोई संगठन आवाज उठाएगा तो दमनकारी नीति अपनाई जाएगी।उन्होंने कहा कि वे हार मानने वाले नहीं है मांगों को लेकर उनका आंदोलन जिला से राज्य स्तर पर किया जाएगा।

कबीरधाम कोर्ट का फैसला

नशीली दवाओं की तस्करी के दोषियों को 15 साल की कैद

कवर्धा। नशीली दवाओं की तस्करी के मामले में अतिरिक्त न्यायाधीश, कबीरधाम की कोर्ट ने दोषियों को 15-15 वर्ष की कठोर कारावास की सजा सुनाई। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने 6 आरोपियों को दोषी करार दिया है। इन्हें 20 मई 2022 को एनसीबी इंदौर द्वारा 885.150 किलो गांजा रखने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। जांच और साक्ष्यों के संग्रह के बाद, मामले में शिकायत 5 नवंबर 2022 को दर्ज की गई। मामले की सुनवाई 14 नवंबर 2022 को शुरू हुई। जांच से पता चला कि आरोपी गांजा की अंतर-राज्यीय तस्करी में शामिल थे। उन्होंने ओडिशा से तस्करी का सामान मंगवाया था।

29 अप्रैल 2025 को 7वें अतिरिक्त न्यायाधीश कबीरधाम की अदालत ने उन्हें दोषी करार दिया और 15 साल के कठोर कारावास (आरआई) और एक लाख रुपए जुर्माने की सजा सुनाई। जब्त किए गए दोनों वाहनों को जब्त कर लिया गया है।

एनसीबी चाहता है सहयोग

मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ लड़ने के लिए, एनसीबी नागरिकों से सहयोग चाहता है। कोई भी व्यक्ति राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन टोल फ्री नंबर-1933 पर कॉल करके मादक पदार्थों की बिक्री से संबंधित जानकारी साझा कर सकता है। सूचना देने वाले की पहचान गोपनीय रखी जाती है।

इंदौर से पकड़े गए थे आरोपी : दशारंगपुर चौकी के पास एनसीबी इंदौर की टीम में गांजा तस्करों को पकड़ा था। इस केस में कबीरधाम की कोर्ट ने सजा सुनाई है।

-**राजेश सोनी**, अधिवक्ता, कबीरधाम

सुशासन तिहार 2025

साय सरकार
आपके गाँव, आपके द्वार

संवाद से समाधान तक

हर समस्या का हो रहा समाधान

www.dprcg.gov.in

ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com | रायपुर, बुधवार 30 अप्रैल 2025

घेराबंदी से बौखलाए नक्सली

शांति के लिए एक और पत्र, सात राज्यों में युद्ध विराम के साथ बातचीत की पेशकश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर/बीजापुर

हरिभूमि लगातार

बीजापुर- तेलंगाना की सीमा पर स्थित करेंगुट्टा की पहाड़ी में नक्सलियों के खिलाफ चलाए जा रहे सबसे बड़े एंटी नक्सल ऑपरेशन के बीच नक्सलियों की केन्द्रीय कमेटी प्रवक्ता ने तीसरा पत्र जारी कर सरकार से शांतिवार्ता की पेशकश की है। प्रवक्ता अभय ने पर्चे के माध्यम से अपील की है कि युद्ध विराम की घोषणा कर केन्द्र व राज्य सरकार वार्ता करते हुए छग समेत सात नक्सल प्रभावित राज्यों में समय सीमा के साथ युद्ध विराम की घोषणा करें। जारी पत्र में लिखा है कि जनवरी 2024 से केंद्र और राज्य के पुलिस, अर्धसैनिक, कमांडो बलों ने ऑपरेशन कगार के नाम से सैकड़ों माओवादियों एवं निर्दोष आदिवासियों की हत्याएं की है। यह अभी भी जारी है। इन हत्याओं का भर्त्सना करते हुए देश-दुनिया में कई जनवादी, क्रांतिकारी जन संगठनों, पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं एवं कार्यकताओं, प्रगतिशील, जनवादी एवं ▶▶|शेष पेज 5 पर

नक्सलियों की केन्द्रीय कमेटी प्रवक्ता अभय ने की अपील युद्ध विराम की घोषणा कर बातचीत करे सरकार

केन्द्रीय कमेटी व दंडकारण्य उत्तर-पश्चिम सब जोनल ब्यूरो की ओर से पत्र

प्रवक्ता ने कहा कि शांति वार्ता को लेकर मैंने केंद्रीय कमेटी की ओर से इससे पूर्व 28 मार्च को एक बयान जारी किया था। जिसमें हमने सरकार के साथ शांति वार्ता करने के लिए तैयार है तथा शांतिवार्ता के लिए अभी तक मेरी तरफ से जारी यह दूसरा पत्र है। इससे पूर्व दंडकारण्य के उत्तर-पश्चिम सबजोनल ब्यूरो की तरफ से कामरेड रूपेश द्वारा दो प्रेस विज्ञप्ति जारी किया गया था। जारी पर्चे में कहा है कि संविधान के अधिकार को कुचला जा रहा, जबकि हमारी ओर से पीएलजीए बलों की सशस्त्र कार्रवाइयों को रोकने हमारे कामरेड आदेश जारी कर चुके हैं।

पार्टी के नेतृत्व की भी हत्या करने की हो रही कोशिश

केन्द्रीय कमेटी की ओर से जारी पर्चे में कहा गया है कि केंद्र व राज्य सरकारें मिलकर झारखंड राज्य में बोकारो हत्याकांड में हमारे केंद्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड विवेक आदि कामरेडो की हत्या को अंजाम दिया और चेतावनी दे रहे हैं कि बाकी माओवादी आत्मसमर्पण करें नहीं तो उनका भी हश्र यही होगा। भारत देश के संविधान में लोगों को जीने का अधिकार जो दिया गया है जिसे स्वयं उनके द्वारा ही कुचला जा रहा है। सरकार कहती है कि बंदूक का समाधान बंदूक से ही होगा। छत्तीसगढ़-तेलंगाना की सीमा इलाके में करेंगुट्टा इलाके का नाकेबंदी कर तेलंगाना, छत्तीगढ़ व महाराष्ट्र से 10 हजार पुलिस, अर्धसैनिक व कमांडो बलों की तैनाती कर एक बड़ा ऑपरेशन चलाया जा रहा हैए जिसमें न सिर्फ हमारे 3 कामरेडों की हत्या की, बल्कि पार्टी के नेतृत्व की भी हत्या करने की कोशिश की जा रही है।

INDIAN PREMIER LEAGUE स्कोर बोर्ड

कोलकाता 204/9 VS दिल्ली 190/9

14 रनों से जीता कोलकाता

सुनील नरेन, 3 विकेट, 27 रन
मैन ऑफ द मैच

आज का मैच

चेन्नई VS पंजाब

समय : शाम 7.30 बजे

हाईलेवल मीटिंग में प्रधानमंत्री ने तीनों सेनाओं को दी खुली छूट

आतंकवाद को मिलेगा करारा जवाब सेना तय करेगी टारगेट और टाइमिंग

पहलगाम हमले पर जवाबी कार्रवाई के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सेना को खुली छूट दी है। हाई लेवल मीटिंग करने के बाद प्रधानमंत्री ने कहा कि सेना की क्षमता पर पूरा भरोसा है। उन्होंने कहा कि सेना समय और टारगेट तय करेगी। आतंकवाद को करारा झटका देना हमारा राष्ट्रीय संकल्प है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि सशस्त्र बलों को पहलगाम आतंकवादी हमले के खिलाफ भारत की जवाबी कार्रवाई का तरीका, लक्ष्य और समय निर्धारित करने की पूरी अभियानगत छूट है। मोदी ने यहां रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल और तीनों सेनाओं के प्रमुखों सहित शीर्ष रक्षा अधिकारियों के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता के दौरान यह टिप्पणी की। सरकारी सूत्रों के मुताबिक, बैठक में मोदी ने कहा, 'आतंकवाद ▶▶|शेष पेज 5 पर

आतंकवाद पर करारा प्रहार हमारा संकल्प

बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आतंकवाद पर करारा प्रहार करना हमारा राष्ट्रीय संकल्प है। उन्होंने देश के सशस्त्र बलों की पेशेवर क्षमताओं पर पूरा भरोसा जताया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सशस्त्र बलों को कार्रवाई के तरीके, लक्ष्य और समय तय करने की पूरी छूट दी गई है।

हमले का मास्टरमाइंड आतंकी हाशिम मूसा

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए भीषण आतंकी हमले की जांच में बड़ा खुलासा हुआ है। सुरक्षा एजेंसियों ने हमले के मास्टरमाइंड की पहचान कर ली है। यह आतंकी कोई और नहीं बल्कि पाकिस्तान में सक्रिय लश्कर-ए-तैयबा और द रेजिस्टेंस फ्रंट से जुड़ा कुख्यात आतंकवादी हाशिम मूसा है। हाशिम मूसा उन चार आतंकवादियों में भी शामिल जिन्होंने इस घटना को अंजाम दिया था।

इधर, कश्मीर के 48 पर्यटन स्थल बंद

जम्मू-कश्मीर सरकार ने कश्मीर घाटी के 87 में से 48 पर्यटन स्थलों को अस्थायी रूप से बंद करने का फैसला लिया है। यह कदम सुरक्षा बलों की कार्रवाई को आसान बनाने और पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया है। सरकार ने जिन 48 जगहों को बंद किया है, उन्हें या तो एक्टिव ऑपरेशन जोन माना गया है या फिर वे संभावित खतरे वाले इलाकों में आते हैं। ये अस्थाई रूप से फिलहाल के लिए बंद है और हालात के अनुसार समय-समय पर इसकी समीक्षा की जाएगी।

पुलिस कर रही जांच

तीसरी मंजिल में लिफ्ट का खुला था गेट, गिरकर युवक की मौत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिलाई

सुपेला थाना अंतर्गत चंद्रा-मौर्या टाकीज के पास स्थित चौहान स्टेट में एक युवक की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि तीसरी मंजिल में लिफ्ट का गेट खुला हुआ था। युवक सीधे घुसा और नीचे जा गिरा। मृतक ग्राम डुंडेरा निवासी राजा बंदे बताया गया है। पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले में पुलिस की जांच जारी है। पुलिस ने बताया कि मंगलवार की सुबह करीब 5 बजे की घटना है। युवक के सिर समेत अन्य हिस्सों में चोट आई थी। सूचना पर ▶▶|शेष पेज 5 पर

फुटेज खंगाले जा रहे

घटना के बाद सीसी कैमरे के फुटेज खंगाले जा रहे हैं। लिफ्ट में चौथी मंजिल पर संचालित होटल एंड रेस्टोरेंट जुमांजी के लिए जाती है, लेकिन लिफ्ट ग्राउंड फ्लोर में होने के बाद भी दरवाजा खुला था। बहरहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मंत्रिमंडलीय उप समिति ने तय की दर, बेस रेट या अधिक दर आने पर सौदा किया जाएगा

किसानों से धान खरीदा 3100 में नीलामी का बेस रेट 1900 से 2100

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

खास खबर

छत्तीसगढ़ सरकार ने 35 लाख मीट्रिक टन धान की खुली नीलामी करने न्यूनतम मूल्य (बेस रेट) तय कर दिया है। राज्य सरकार ने ग्रेड ए धान नए बारदाने में 2100 रुपए और ग्रेड ए धान पुराने बारदाने में 2050 रुपए में या अधिक बोली लगाने वालों को बेचेगी। वहीं सामान्य धान नए बारदाने में 1950 और सामान्य धान पुराने बारदाने में 1900 रुपए या इससे अधिक के बेस रेट पर बेचेगी। अगर नीलामी में इससे कम रेट आता है, तो रीटेंडर कर धान को बेचा जाएगा। नीलामी में सबसे अधिक बोली लगाने वाले से सौदा किया जाएगा। यानी खरीदार खुद धान की कीमत तय करेंगे। उल्लेखनीय है कि 17 से 23 ▶▶|शेष पेज 5 पर

होगा करोड़ों का नुकसान

राज्य सरकार ने जो बेस रेट तय किया है, उसे देखा जाए तो धान की खरीद, परिवहन और भंडारण की लागत जोड़ने पर प्रति क्विंटल धान पर 2800 तक खर्च आता है। राज्य सरकार ने 1900 से 2100 को बेस रेट तय किया है, जिससे सरकार को करोड़ों रुपए का नुकसान उठाना होगा। वहीं, खुले बाजार में चावल की कीमत इन दिनों 2000 प्रति क्विंटल है। व्यापारियों का कहना है कि कस्टम मिलिंग किए बिना भी उन्हें सस्ता चावल मिल रहा है, जिससे बोली कम आने की आशंका है।

35 लाख टन धान की नीलामी

वर्ष 2024-25 में छत्तीसगढ़ सरकार ने 25.49 लाख किसानों से 149 लाख टन धान की खरीदी की 3100 रुपए प्रति क्विटल की दर से की थी। इसमें से 123 लाख टन धान को एफसीआई और नागरिक आपूर्ति निगम के जरिए कस्टम मिलिंग के लिए भेजा जा चुका है। शेष 35 लाख टन धान अब भी संग्रहण केंद्रों में रखा है। मार्कफेड ने जानकारी दी है कि यह नीलामी "जैसे हैं, वैसे की स्थिति" में की ▶▶|शेष पेज 5 पर

पैरेंट्स को मिली पावर

अब नहीं चलेगी प्राइवेट स्कूलों की कोई मनमानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

दिल्ली के मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय राजधानी के निजी और सरकारी स्कूलों में फीस को विनियमित करने के प्रावधान वाले एक विधेयक को मंगलवार को मंजूरी दे दी। इस फैसले से हर साल मनमाने ढंग से फीस बढ़ाने का मुद्दा उठाने वाले अभिभावकों को बड़ी राहत मिलेगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि सरकार के निर्देशों का पालन न करने पर स्कूलों ▶▶|शेष पेज 5 पर

फीस के लिए समिति

शिक्षा मंत्री के अनुसार, पहले स्तर पर प्रत्येक स्कूल एक स्कूल स्तरीय फीस विनियमन समिति का गठन करेगा। इस समिति में स्कूल प्रबंधन के अध्यक्ष, सदस्य सचिव के रूप में प्रिंसिपल, तीन शिक्षक व पांच अभिभावक शामिल होंगे, जिनमें एससी/एसटी समुदाय के सदस्य और कम से कम दो महिलाएं शामिल होंगी।

तीन साल में एक बाद बढ़ेगी फीस

शिक्षा मंत्री सूद ने कहा कि स्कूल अब मनमाने ढंग से फीस नहीं बढ़ा सकेंगे तथा कोई भी बढ़ोतरी हर तीन साल में एक बार ही की जाएगी। फीस बढ़ाने का फैसला 18 महत्वपूर्ण मापदंडों पर आधारित होगा, जिसमें कक्षाओं व इमारतों की स्थिति, स्कूल के वित्तीय भंडार और विज्ञान प्रयोगशालाएं प्रमुख होंगी।

गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिरों के कपाट आज खुलेंगे

चारधाम यात्रा, 22 लाख श्रद्धालुओं ने कराया पंजीयन

एजेंसी ▶▶| देहरादून

उत्तराखंड के उच्च गढ़वाल हिमालयी क्षेत्र में स्थित गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिरों के कपाट छह माह बंद रहने के बाद अक्षय तृतीया के पर्व पर बुधवार को फिर श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे। अधिकारियों ने बताया कि गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिरों के कपाट खुलने के साथ ही इस वर्ष की चारधाम यात्रा की शुरुआत हो जाएगी। हालांकि केदारनाथ और बदरीनाथ के कपाट क्रमशः दो मई और चार मई को खोले जाएंगे।

उन्होंने बताया कि चारधाम यात्रा को लेकर सुरक्षा व्यवस्था से लेकर अन्य सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अधिकारियों ने बताया कि चारधाम ▶▶|शेष पेज 5 पर

6000 पुलिसकर्मी, 17 पीएसी कंपनी

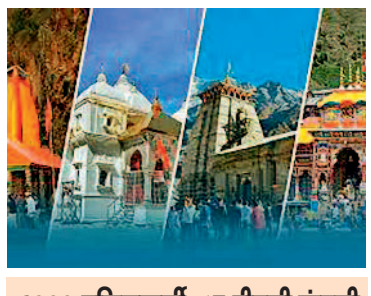

तीर्थयात्रियों की सुरक्षा के लिए 6000 पुलिसकर्मी, 17 पीएसी कंपनी और केंद्र की तरफ से भेजी गई 10 कंपनी सुरक्षा बलों को चारधाम और यात्रा मार्गों पर तैनात करने की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालुओं से बिना किसी चिंता के तीर्थयात्रा करने को कहा। पूरे यात्रा क्षेत्र को इस बार 15 'सुपर जोन' में बांटा गया है, जिसमें करीब 2000 से अधिक 'क्लोज सर्किट कैमरे' लगाए गए हैं।

खुफिया एजेंसियां सक्रिय, संदिग्धों पर नजर

जन सुरक्षा के साथ-साथ उत्तराखंड पुलिस का ध्यान यातायात व्यवस्था को सुचारू करने पर भी होगा। अधिकारी ने बताया कि एहतियात के तौर पर खुफिया एजेंसियां भी सक्रिय रहेंगी। संदिग्धों पर निगरानी रखी जाएगी। पुलिस महानिदेशक ने ट्रांजिट कैंप ऋषिकेश में यात्रियों से बातचीत कर उनकी प्रतिक्रिया ली।

ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन के 20 काउंटर

जिला पर्यटन अधिकारी सुशील नौटियाल का कहना है कि ऑफलाइन रजिस्ट्रेशन ऋषिकुल मैदान में प्रारंभ कर दिए गए हैं। उन्होंने आगे बताया कि हमारे द्वारा जर्मन हैंगर में यह सुविधा प्रदान की गई है। 20 काउंटर हमने लगाए। 20 काउंटर के अंतर्गत दिव्यांग का, विदेशी नागरिकों और विकलांगों के लिए अलग से काउंटर बनाए हैं। करीब 1200 से 1300 आदमियों का कैपेसिटी हमने डिसाइड की है। वहीं, जो अन्य लोग होंगे उनके करीब हजार आदमियों के बैठने की व्यवस्था की गई है।

पहलगाम हमले के बाद कश्मीर में पड़ने लगा पर्यटन पर असर

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले में 26 पर्यटकों की मौत के बाद पर्यटन पर असर दिखने लगा है। खासकर पश्चिम बंगाल के पर्यटक, जो पहले गर्मी की छुट्टियों में कश्मीर जाने की योजना बना रहे थे, अब हिमाचल प्रदेश के शिमला या तमिलनाडु के ऊटी जैसे शांत और सुरक्षित स्थानों की ओर रुख कर रहे हैं। इससे पहलगाम के पर्यटन कारोबार पर असर पड़ा है।

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

ट्रैवल एजेंटों का कहना है कि जिन लोगों ने पहले से कश्मीर की यात्रा की बुकिंग कर रखी है, उनमें से ज्यादातर लोग अभी उसे रद्द नहीं कर रहे हैं। वे स्थिति का जायजा ले रहे हैं और सरकार से आगे के निर्देशों का इंतजार कर रहे हैं। ट्रैवल एजेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के पूर्वी भारत प्रतिनिधि अनिल पंजाबी ने बताया, 'मई और जून के लिए कश्मीर की कई बुकिंग्स पहले ही हो चुकी हैं। पर्यटक तब तक इंतजार कर रहे हैं जब तक सरकार कोई नई गाइडलाइन नहीं देती।'उन्होंने कहा, 'हालांकि, जो पर्यटक अब गर्मियों की योजना बना रहे हैं, वे कश्मीर के बजाय शिमला, ऊटी और उत्तराखंड के दूसरे हिल स्टेशनों को प्राथमिकता दे रहे हैं।' कश्मीर जाने के बारे में कोई पूछताछ नहीं कर रहा है और न ही कोई वहां जाने की योजना ही बना रहा है।

कश्मीर छोड़कर अब शिमला-ऊटी की ओर बढ़ा सैलानियों का रुझान

कई पर्यटक कर रहे हैं नई गाइडलाइंस का इंतजार

नए प्लान में कश्मीर से दूरी : पर्यटन विशेषज्ञ दिव्येंदु घोष का कहना है कि अभी तक बहुत ज्यादा रद्दीकरण के अनुरोध नहीं आए हैं। 'लोग देख-समझकर फैसला ले रहे हैं। लेकिन जो अभी प्लान बना रहे हैं, वे कश्मीर से दूरी बना रहे हैं।' वहीं, ग्लोबल टूरिज्म काउंसिल के अध्यक्ष और ट्रैवल एजेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के पूर्व प्रमुख इकबाल मोल्लाह ने बताया कि इस आतंकी हमले का खासा असर पर्यटन उद्योग पर पड़ा है। 'इस बार कश्मीर कई पर्यटकों की पहली पसंद था, खासकर विदेशी पर्यटकों के बीच। अब हमें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है।'

पटनीटॉप, नाथाटॉप और सन्नासर में सैलानियों की कमी

जम्मू संभाग के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल पटनीटॉप, नाथाटॉप, सन्नासर में भी कम हुई रौनकचिनाइनी। पहलगाम हमले के बाद पर्यटन स्थल पटनीटॉप, नाथाटॉप और सन्नासर में पर्यटकों की संख्या कम हो गई है। पटनीटॉप में सामान्य से 50-70% तक सैलानियों की गिरावट दर्ज की गई है, जिससे होटल और स्थानीय व्यापार प्रभावित हुए हैं। पटनीटॉप के होटल प्रबंधक रंगील सिंह और राजेश ठाकुर ने बताया कि केवल वही पर्यटक आ रहे हैं जो पहले से यात्रा पर निकले थे। स्थानीय सैलानियों की संख्या भी कम हुई है। फोटोग्राफर यूनियन के अध्यक्ष सुभाष चंद्र ने कहा, सैलानियों की कमी से हमारा व्यवसाय ठप पड़ गया है। टैक्सी यूनियन के प्रधान प्रकाश चंद ने बताया कि बुकिंग लगभग बंद हो गई है।

खबर संक्षेप

देश के अगले जस्टिस होंगे गवई, राष्ट्रपति ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने जस्टिस बी.आर. गवई को भारत के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में

मंजूरी दे दी है। जस्टिस भूषण रामकृष्ण गवई (बीआर गवई) 14 मई, 2025 को भारत के 52वें मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ लेंगे। बता दें कि इससे पहले वर्तमान चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया संजीव खन्ना ने उनके नाम की सिफारिश की थी। सीजेआई संजीव खन्ना का कार्यकाल 13 मई को खत्म हो रहा है। बीआर गवई पद संभालने के 6 महीने बाद तक सीजेआई रहेंगे और नवंबर 2025 में रिटायर होंगे।

पीओके पर दावा का इससे बेहतर समय नहीं हो सकता

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग उठ रही है।

इसको लेकर जम्मू-कश्मीर के पूर्व डीजीपी एसपी वैद्य ने बड़ा बयान दिया है। पीओके पर दावा करने के लिए आज से बेहतर समय नहीं हो सकता। एसपी वैद्य ने कहा कि पीओके को वापस लेने के लिए हमारी संसद में प्रस्ताव भी है। आज पाकिस्तान के अंदर जिस तरह के हालात हैं, उससे साफ है कि पाकिस्तान टूटने को तैयार है।

एक बूंद भी एक्स्ट्रा पानी नहीं देंगे : सीएम मान

चंडीगढ़। पंजाब और हरियाणा के बीच लंबे समय से चले आ रहे

जल विवाद ने एक बार फिर तूल पकड़ लिया है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने मंगलवार को एक वीडियो संदेश में स्पष्ट रूप से कहा है कि पंजाब हरियाणा को अपनी जल सीमा से बाहर कोई अतिरिक्त पानी नहीं देगा। मुख्यमंत्री मान ने कहा, 'हरियाणा अपनी पूरी हिस्सेदारी का पानी इस्तेमाल कर चुका है।

वक्फ कानून के खिलाफ करेंगे 'बत्ती गुल' : ओवैसी

नई दिल्ली। वक्फ संशोधन अधिनियम के खिलाफ ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने विरोध के लिए नया तरीका पेश किया है। इसके तहत एआईएमपीएलबी ने लोगों से 'लाइट-ऑफ विरोध' करने की

बात कही हैं। इसके समर्थन में अब एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी बड़ा बयान दिया है। रात 9 बजे 15 मिनट के लिए ब्लैक आउट करें। बातचीत में ओवैसी ने कहा, ' मैं आप सभी से अपील करना चाहता हूं कि वक्फ (संशोधन) अधिनियम के खिलाफ 30 अप्रैल को रात 9 बजे से 9.15 बजे तक एआईएमपीएलबी द्वारा ब्लैकआउट विरोध प्रदर्शन के आह्वान का समर्थन करें।'

एनआईए ने की जिपलाइन ऑपरेटर से पूछताछ

आतंकी बरसा रहे थे गोलियां, जिपलाइन ऑपरेटर चिल्ला रहा था 'अल्लाह हू अकबर'

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम हमले के वायरल वीडियो में दिखे जिपलाइन ऑपरेटर मुज़म्मिल से एनआईए पूछताछ कर रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के अमुसार, मुजम्मिल और आतंकियों के मिलीभगत को लेकर अभी कुछ पुख्ता सबूत नहीं मिला है। चश्मदीद पर्यटक ऋषि भट्ट ने ऑपरेटर पर हमले के वक्त 'अल्लाह-हू-अकबर' बोलने का आरोप लगाया, जबकि मुजम्मिल के भाई मुख्तार ने बताया कि वह डरा हुआ था। एनआईए को हमले में 3 आतंकियों के शामिल होने और गोली मारने से पहले पीड़ितों की पहचान पूछने के सुराग मिले हैं।

नहीं मिला है अब तक कोई पुख्ता सबूत

चश्मदीद पर्यटक ने हमले के वक्त 'छोड़ने' का लगाया था आरोप

एनआईए की जिपलाइन ऑपरेटर मुजम्मिल से पूछताछ

एनआईए अधिकारी मंगलवार को जिपलाइन ऑपरेटर मुज़म्मिल से पूछताछ की है। सुरक्षा से जुड़े सूत्रों के अनुसार, अधिकारियों ने बताया है कि 'अल्लाह-हू-अकबर' बोलना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। जैसे हिंदुओं में है राम बोला जाता है कई दफा घबराहट में और अचानक कुछ सामने हो तो. एनआईए को फिलहाल मुजम्मिल का इस आतंकी हमले में सीधा कोई भी इन्वॉलमेंट नहीं लग रहा है। हालांकि, मुजम्मिल ने गोली चलने के बाद जिप से ऋषि भट्ट को क्यों छोड़ा इस सवाल पर अलग-अलग बयान दे रहा है।

जिपलाइन ऑपरेटर मुजम्मिल के भाई से बातचीत

जिपलाइन ऑपरेटर मुजम्मिल के भाई मुख्तार से एक न्यूज चैनल ने बातचीत की है। मुख्तार ने बताया, 'हमले के बाद उसका भाई जब घर आया तो बहुत घबराया हुआ था। उसे दिल से जुड़ी बीमारी है, इसलिए डर की वजह से कुछ बोल भी नहीं सका। उसके भाई से पहले भी 23 अप्रैल को पूछताछ की गई थी और फिर छोड़ दिया गया था। हालांकि, पर्यटक ऋषि भट्ट के बयान के बाद उससे एनआईए दोबारा पूछताछ कर रही है।

पीडीपी ने कहा- यह हमारी संस्कृति

समाचार एजेंसी एएनआई से बातचीत करते हुए पीडीपी प्रवक्ता मोहम्मद इकबाल ट्रंबू ने कहा, 'यह लोग हमारे संस्कृति के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं। जब भी कोई आपदा होती है तो हर कश्मीरी अल्लाह-हू-अकबर बोलते हैं। हमले के समय हम लोग अल्लाह को याद कर रहे थे। यह सब इसलिए किया जा रहा है ताकि असफलता को छुपाया जा सके। पुलिस और सुरक्षाबलों को अपना सिस्टम बदलने की जरूरत है। इसका आतंकवाद से कोई लेना-देना नहीं है।

खंगाली जा रही कुंडली

एनआईए अब जिपलाइन ऑपरेटर की पूरी कुंडली खंगाल रही है। उससे जुड़े लोगों और हमले के वक्त वह किसके संपर्क में था, उसका इरादा क्या था, इसकी एक-एक डिटेल खंगाल रही है। सूत्रों के मुताबिक, यह पता लगाया जा रहा है कि क्या ऑपरेटर का कोई आतंकी संगठन या पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई से संबंध था, या उसका व्यवहार केवल लापरवाही का नतीजा था। यह भी देखा जा रहा है कि कहीं डर की वजह से तो उसने धार्मिक नारेबाजी तो नहीं की। हमले के बाद ऑपरेटर को 23 अप्रैल को पूछताछ के लिए बुलाया गया था, लेकिन तब उसे छोड़ दिया गया। वायरल वीडियो सामने आने के बाद उसे दोबारा हिरासत में लिया गया है।

पाकिस्तानी हैकरों ने किया राजस्थान शिक्षा विभाग की वेबसाइट को हैक

साइट पर लिखा- अगला हमला गोलियों से नहीं टेक्नोलॉजी से होगा

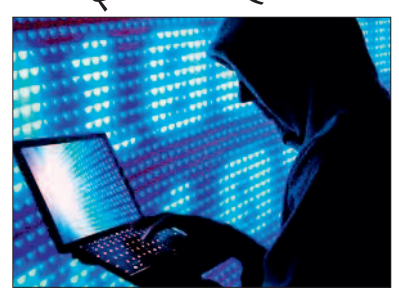

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। इस बार यह संघर्ष केवल सीमाओं तक सीमित नहीं रहकर साइबर स्पेस में भी अपना रंग दिखा रहा है। इसी के चलते मंगलवार को पाकिस्तान समर्थित हैकरों ने राजस्थान सरकार की शिक्षा विभाग की वेबसाइट को हैक कर लिया। यह साइबर हमला केवल तकनीकी क्षति तक सीमित नहीं था, बल्कि इसके जरिए भारत विरोधी और पाकिस्तान समर्थित संदेश भी सार्वजनिक किए गए। जानकारी के अनुसार मंगलवार सुबह राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग की ऑफिशियल वेबसाइट पर पाकिस्तानी हैकरों ने हमला कर दिया और वेबसाइट हैक करने के बाद उस पर पाकिस्तान साइबर फोर्स के नाम से एक आपत्तिजनक संदेश पोस्ट किया। इस पोस्ट में पहलगाम हमले को 'अंदरूनी काम' बताते हुए भारत सरकार पर झूठ फैलाने का आरोप लगाया गया है। साथ ही भारत के सुरक्षा बलों और खुफिया तंत्र पर भी सवाल खड़े किए गए हैं।

- कई सरकारी वेबसाइटों को भी बनाया निशाना

सेना से जुड़ी कई वेबसाइट्स को भी बनाया निशाना

सूत्रों का कहना है कि हैकर्स ने आर्मी पब्लिक स्कूल (एपीएस) श्रीनगर और एपीएस रानीखेत की वेबसाइट्स को भड़काऊ प्रचार के साथ निशाना बनाया गया। एपीएस श्रीनगर को भी इस साइबर अटैक का सामना करना पड़ा। इसी तरह आर्मी वेलफेयर हाउसिंग ऑर्गनाइजेशन (एडब्लूएचओ) डेटाबेस में सेंध लगाने का प्रयास भी पकड़ा गया, जबकि भारतीय वायुसेना प्लेसमेंट ऑर्गनाइजेशन पोर्टल से समझौता करने का भी प्रयास किया गया। पता चलते ही इन सभी चारों साइटों को तुरंत अपने काबू में लिया गया और कार्रवाई की गई; हालांकि इससे किसी भी स्तर पर कोई परिचालन या नेटवर्क प्रभावित नहीं हुआ।

शाहदरा में किराएदार बेच गया दिल्ली वक्फ बोर्ड की संपत्ति

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

एक तरफ जहां वक्फ बोर्ड पर आम लोगों की संपत्तियों को हड़पने के आरोप लग रहे हैं, वहीं दिल्ली के शाहदरा में एक किरायेदार ने वक्फ बोर्ड की संपत्ति को ही बेच दिया। खास बात है कि यह संपत्ति वक्फ बोर्ड की गजट-नोटिफाइड संपत्ति थी, लेकिन किराएदार ने रजिस्टर्ड सेल डीड के साथ यह संपत्ति बेच दी। इसके खिलाफ कार्रवाई की मांग वाली याचिका पर आज दिल्ली हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। मामले को जानकर दिल्ली हाईकोर्ट ने भी आश्चार्य जताया। बहरहाल, अब दो सप्ताह बाद मामले की सुनवाई होगी। यह जानकारी याचिकाकर्ता के वकील वजीह शफीक ने दी है। उन्होंने मीडिया से बातचीत में कहा कि शाहदरा के इस किराएदार ने बाकायदा सेल डीड से दिल्ली वक्फ बोर्ड की संपत्ति को बेच दिया है। जब इस बारे में पता चला तो 13 जनवरी को इसकी सूचना पुलिस को दी गई। 14 जनवरी को वक्फ बोर्ड को लिखित शिकायत दी। इसके बाद 16 जनवरी को एमसीडी को लिखित शिकायत दी गई।

- हाईकोर्ट ने जताया आश्चर्य

वक्फ बोर्ड करेगा एक्शन

यह मामला मंगलवार को हाईकोर्ट में सूचीबद्ध हुआ। हाईकोर्ट ने इस मामले पर आश्चर्य जताया है। उन्होंने कहा कि दिल्ली वक्फ बोर्ड के स्थायी वकील ने हाईकोर्ट को दिल्ली वक्फ बोर्ड द्वारा कार्रवाई का आश्वासन दिया है। साथ ही, भारत संघ की ओर से पेश वकील ने भी कार्रवाई के लिए निर्देश लेने को कहा है। हालांकि वकील वजीह शफीक ने वक्फ संशोधन विधेयक 2025 से आने वाली परेशानी साझा की। उन्होंने कहा कि धारा 52 ए के तहत वक्फ संपत्ति की बिक्री/खरीद संज्ञेय है और 8 अप्रैल 2025 तक यह गैर जमानती अपराध है। अब संसद द्वारा संशोधन के बाद यह गैर संज्ञेय और जमानती हो गया है।

अहमदाबाद के 'मिनी बांग्लादेश' में सबसे बड़ा बुलडोजर एक्शन

50 जेसीबी, 2000 पुलिसकर्मी

अहमदाबाद। गुजरात के अहमदाबाद नगर निगम ने मंगलवार को अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों के अवैध निर्माण के खिलाफ सबसे बड़ा अभियान चलाया है। 50 जेसीबी और 2000 पुलिसकर्मी के साथ एएमसी ने चंदोला झील के पास अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों को हटाया गया।सर्वे में पता चला कि इलाके में अवैध निर्माण हुआ है। यह निर्माण मुख्य रूप से सियासतनगर बंगाल वास में हुआ है। यहां कई बांग्लादेशी नागरिक अवैध रूप से रह रहे थे। पुलिस अधिकारी ने बताया कि सियासतनगर बंगाल वास एक बस्ती के रूप में कार्य करता था। जहां अधिकांश बांग्लादेशी घुसपैठिए रहते थे। अहमदाबाद नगर निगम की ओर से एक सर्वेक्षण किया गया। इसमें अवैध निर्माण की पहचान की गई।

विधिवत प्रतिष्ठित किया गया 42 फीट ऊंचा ध्वज दंड

राम मंदिर में ध्वज दंड स्थापित, 203 मीटर हुई मंदिर की ऊंचाई

5 जून से परिसर में स्थित सभी मंदिरों में दर्शन के लिए जा सकेंगे श्रद्धालु

एजेंसी ▶▶| अयोध्या

रामनगरी एक बार फिर ऐतिहासिक लम्हे की साक्षी बनी। वैशाख शुक्ल द्वितीया तिथि पर मंगलवार को भगवान परशुराम जयंती के पावन दिन प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के मुख्य शिखर पर 42 फीट ऊंचा दिव्य ध्वज दंड विधिवत प्रतिष्ठित किया गया। ध्वज दंड लेकर अब मंदिर की कुल ऊंचाई 203 फीट हो गई है। सुबह आठ बजे श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य शिखर पर विधि विधान पूर्वक ध्वज दंड स्थापित किया गया। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महामंत्री चंपत राय के अनुसार ध्वज दंड 42 फीट ऊंचा है । इसे स्थापित करने की प्रक्रिया सुबह 6:30 बजे से शुरू होकर आठ बजे पूरी हुई। शंखनाद और वेद मंत्रों की गूंज के बीच यह ध्वज दंड मंदिर के शिखर पर स्थापित हुआ तो जैसे संपूर्ण अयोध्या की आत्मा श्रीराम के जयघोष से आकाश को स्पर्श कर गई। शिखर कलश समेत मंदिर की ऊंचाई 161 फीट है। अब इसमें 42 फीट का ध्वज दंड भी जुड़ गया है।

ब्रह्मांड की ऊर्जा पहुंचाने का एंटीना

राम मंदिर के ट्रस्टी डॉ. अनिल मिश्र ने बताया कि राम मंदिर में ब्रह्मांड की भी ऊर्जा पहुंचे, इसके लिए विशेष प्रकार का धर्म ध्वज दंड निर्मित कराया गया है। यह एक अनोखा एंटीना होता है, जो ब्रह्मांड की ऊर्जा को भगवान के गर्भगृह तक ले जाता है। तेज हवा में पताका इधर-उधर न हिले इसको लेकर इंजीनियरों ने खास संरचना की। उसी डिजाइन के अनुरूप ध्वज दंड निर्मित हुआ है।

5 जून को पूरा हो जाएगा कंस्ट्रक्शन

उत्तर प्रदेश के अयोध्या में निर्माणाधीन राम मंदिर का निर्माण कार्य 5 जून को पूरा हो जाएगा। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेंद्र मिश्रा ने यह जानकारी दी। मिश्र ने आगे कहा कहा, 'मंदिर परिसर में महर्षि वाल्मीकि, श्री वशिष्ठ जी, अहिल्या जी, निषादराज महाराज, शबरी माता और अगस्त्य मुनि के मंदिर भी 5 जून के बाद आम लोगों के लिए खोल दिए जाएंगे। राम दरबार और मंदिर के परकोटे पर बने छह मंदिरों की पूजा 5 जून को की जाएगी। चंपत राय जी 5 जून के लिए विस्तृत कार्यक्रम की घोषणा करेंगे। राम मंदिर के निर्माण के पूरा होने के दिन यानी 5 जून के एक या दो दिन बाद श्रद्धालु परिसर में स्थित सभी मंदिरों में दर्शन के लिए जा सकेंगे।'

चीन के लियाओनिंग में हुआ दर्दनाक हादसा

रेस्टोरेंट में आग लगने से 22 की मौत, 3 घायल

एजेंसी ▶▶| बीजिंग

चीन के लियाओनिंग में दर्दनाक हादसा हुआ है। यहां एक रेस्टोरेंट में आग लगने से 22 लोगों की मौत हो गई है। आग की चपेट में आने से कम से कम 3 लोग घायल हो गए हैं। आग लगने के कारणों के बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं मिल सकी है। स्थानीय लोगों के मुताबिक आग लगने के बाद मौके पर हड़कंप मच गया। इमारत की खिड़कियों और दरवाजों से आग की लपटें निकलती हुई नजर आईं। आग लगने की सूचना मिलने के बाद फायर ब्रिगेड की गाड़ियां मौके पुर पहुंची हैं। फायर ब्रिगेड के अधिकारियों का कहना है कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। रेस्टोरेंट के आसपास बनी इमारतों को खाली करा लिया गया है।

किचन से फैली आग

जानकारी के मुताबिक आग रेस्टोरेंट के किचन में लगी थी। लियाओनिंग पहले एक बड़ा औद्योगिक केंद्र था। फिलहाल, आबादी के पलायन की वजह से यह मुश्किल दौर से गुजर रहा है। चीन में आग लगने की दुर्घटनाएं अक्सर होती हैं। आमतौर पर प्रशिक्षण की कमी या अपने वरिष्ठों के दबाव के कारण कर्मचारी सुरक्षा सुविधाओं की अनदेखी करते हैं। बता दें कि, अप्रैल महीने में ही उत्तरी चीन के हेबेई प्रांत में एक नर्सिंग होम में आग लग गई थी।

रायपुर
बुधवार, 30 अप्रैल 2025
वैशाख शुक्ल पक्ष तृतीया
वर्ष : 23, अंक : 282
पृष्ठ : 14+8 = 22 मूल्य : 5 .00**

मौसम
अधि. 38.5
न्यून. 22.8

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

अक्षय तृतीया की मंगलकामनाएं

haribhoomi.com

अक्षय तृतीया 100 सालों बाद दुर्लभ राजयोग, 6 घंटे 37 मिनट का उत्तम मुहूर्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली/रायपुर

रोहिणी नक्षत्र व बुधवार के दिन पड़ने वाली अक्षय तृतीया को अत्यधिक शुभ माना जाता है, जो कल है। इस बार अक्षय तृतीया पर 6 घंटे 37 मिनट का उत्तम मुहूर्त- सुबह 05:41 बजे से दोपहर 12:18 बजे तक, जिसकी अवधि - 6 घंटे 37 मिनट तक है। पंडित सौरभ मिश्रा ने बताया कि इस वर्ष अक्षय तृतीया पर एक दुर्लभ राजयोग का निर्माण हो रहा है, जो लगभग 100 वर्षों बाद बन रहा है। अक्षय तृतीया को गजकेसरी राजयोग,राजयोग, रवि योग, चतुग्रही योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, रवि एवं शोभन योग और लक्ष्मी ▶▶|शेष पेज 5 पर

शुभ योग

कल सर्वार्थ सिद्धि योग पूरे दिन, शोभन योग दोपहर 12:02 बजे तक व रवि योग शाम 04:18 बजे से 05:40 ए एम, मई 01 तक रहेगा। रोहिणी नक्षत्र शाम 04:18 बजे तक व तृतीया तिथि दोपहर 02:12 बजे तक समाप्त हो जाएगी।

सोने की पूजा का मुहूर्त
सुबह 7:50 से दोप. 12:20 बजे

सोना-चांदी खरीदी लाएगी समृद्धि

पं.दिनेश गिरी गोस्वामी के मुताबिक अक्षय तृतीया पर सुबह 4 बजे से शुभ मुहूर्त की शुरुआत हो जाएगी। आज सोने और चांदी की खरीदी व्यवहारिक जीवन में सुख-समृद्धि लेकर आएगी। वैदिक शास्त्र के अनुसार, अक्षय तृतीया को विवाह के लिए देव लग्न माना गया है। इस दिन शिव मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठान और शिवलिंग पर कलश स्थापित किया जाता है।

इसलिए पड़ रही युक्तियुक्तकरण की जरूरत, शहरों में बेवजह जमे बैठे टीचर्स हटेंगे

राज्य में 5000 से ज्यादा स्कूलों में सिर्फ एक या दो शिक्षक, 300 में तो एक भी नहीं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायपुर

हरिभूमि फॉलोअप

स्कूल शिक्षा विभाग में युक्तियुक्तकरण का आदेश जारी होने के बाद पांचो संभाग के जिला शिक्षा एवं विकासखंड जिला अधिकारियों की कार्यशाला बुधवार को रखी गई है। जिलों के स्कूलों में शिक्षकों की पदस्थापना और अतिशेष शिक्षकों के बारे में पूरी जानकारी कार्यशाला की बैठक के दौरान एकत्रित किए जाने के बाद जून से इसकी प्रक्रिया शुरू होगी। शिक्षा विभाग की ओर से एकल शिक्षक और शिक्षक विहीन स्कूलों के आधार पर युक्तियुक्त करण का आदेश जारी किया गया है। इसी को बैलेंस करने के लिए युक्तियुक्त प्रक्रिया अपनाई जाएगी। स्कूल शिक्षा विभाग के अनुसार, राज्य में 5,484 स्कूल ऐसे हैं, जहां एक ▶▶|शेष पेज 5 पर

प्राइमरी स्कूलों में 3418 अतिशेष शिक्षक

प्रायमरी स्कूलों में 3418 अतिशेष शिक्षक हैं। रायपुर में 424, बिलासपुर में 264, जांजगीर 198, रायगढ़ 217, बलौदा बाजार 211, बालोद 170, धमतरी 180 अतिशेष शिक्षक हैं। प्रायमरी स्कूलों में सबसे अधिक बस्तर में 425 स्कूल में एकल शिक्षक के भरोसे चल रहे हैं। बीजापुर 272, कांकेर 318, सुकमा 222, कोरबा 325, रायगढ़ 251, मोहला-मानपुर 190, धमतरी 165, गरियाबंद 173, बलरामपुर 251, जशपुर 181, सूरजपुर 236, सरगुजा में 196 सिंगल शिक्षक वाले स्कूल हैं।

रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, रायगढ़ में सबसे अतिशेष शिक्षक, 4000 स्कूलों में अटैच

स्कूलों और शिक्षकों के युक्तियुक्तकरण का आदेश जारी, 13 हजार टीचर्स का होगा तबादला

252 स्कूल शिक्षकविहीन

मीडिल स्कूलों में एकल शिक्षकीय वाले 231 स्कूल हैं तो शिक्षक विहीन 45 स्कूल हैं। प्रायमरी में 5484 स्कूल एकल वाले हैं, तो शिक्षक विहीन भी सबसे अधिक 252 स्कूल। शिक्षक विहीन स्कूलों में बस्तर 32, बीजापुर 51, कांकेर 9, सुकमा 6, कोरबा 13, रायगढ़ 3, मोहला-मानपुर 7, धमतरी 3, गरियाबंद 5, बलरामपुर 23, जशपुर 10, सूरजपुर 5, सरगुजा में 9 स्कूल शामिल हैं।

मिडिल स्कूलों में 3887 अतिशेष शिक्षक

छत्तीसगढ़ के मिडिल स्कूलों में 3887 शिक्षक अतिशेष हैं। सबसे अधिक बस्तर में 301, कांकेर 242, कोंडागांव 245, बिलासपुर 211, दुर्ग 303, रायपुर 250, जशपुर 246, सरगुजा 285, सूरजपुर 228 शामिल हैं। मीडिल स्कूलों में एकल शिक्षकीय स्कूल सबसे अधिक गरियाबंद 48, बीजापुर 28, कोरबा 18, रायगढ़ 16 और कवर्धा 10 हैं। वहीं इन जिलों में 17 स्कूल शिक्षक विहीन हैं।

आधार आधारित EMI | हायपोथेकेशन नहीं

Hero MotoCorp Ltd. Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No.2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj - Phase -II, New Delhi - 110070, India. | CIN: L35911DL1984PLC017354 | For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorised outlet or call our toll-free no.: 1800 266 0018 or visit us on www.HeroMotoCorp.com. Accessories and features shown may not be a part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two-wheeler. **Finance offer is at sole discretion of the financer, subject to its respective T&Cs. Offers are valid in select states for a limited period or till stock lasts. For more details, please visit your nearest authorized Hero outlet. Ex-showroom prices are applicable in Chhattisgarh. #Offer Valid on Passion + variants. Offer Valid on HF DLX kick and Self Variants. $Green Bonus is applicable Pan India on select Hero products and bonus amount may vary as per model/variant. *Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलरः रायपुरः छत्तीसगढ़ हीरो, 9289922351, आरसन हीरो, 9289922864, राजधानी हीरो, 9289922414, राजनांदगांवः जय हीरो, 9289922357, धमतरीः सत्योम हीरो, 9289922525, कांकेरः राहुल हीरो, 9289922834, महासमुंदः वत्स हीरो, 9289922623, बलोदाबाजारः अग्रवाल हीरो, 9289922959, आरंगः श्री राम हीरो, 9289922968, बेमेतराः श्री साईं हीरो, 9289922835, कवर्धाः सरस्वती हीरो, 9289922958, जगदलपुरः विजयपाल हीरो, 9289923064, दंतेवाड़ाः जय विजय हीरो, 9289922990, दल्लीराजहराः लक्ष्मी हीरो, 9289922983, भाटापाराः कुशल हीरो, 9289923052, भिलाईः इंडियन हीरो, 9289922355, चौहान मोटर्स, 9289233817, दुर्गः उत्सव हीरो, 9289923114, उत्सव हीरो (स्टेशन रोड), 7000595300, एसोसिएट डीलरः रायपुरः संजय ऑटोव्हील, 9289924245, 0771-4266555, पंडरियाः ललित सर्विसेज, 8770383767, अभनपुरीः ओम ऑटो एजेंसी, 6261535855, दोमुहानीः किरण मोटर्स, 9754069392, लवनः गणपति ऑटो, 9926601111/9340379300, भिंभौरीः श्री राम मोटर्स, 8462900026/9340005833, गुरूरः श्री गुरुनानक ऑटो, 8349484458/7224880123, बोड़लाः विक्की मोटर्स, 9755583102, पांडातराईः शक्ति ऑटोमोबाइल्स, 9179035073, अभनपुरः राजधानी ऑटोमोबाइल्स, 9325529033, छुरियाः अंकित ऑटो, 9425240565, नवागढ़ः श्री मोटर्स, 9165525555/9009866899, राजिमः गुरुदेव ऑटोमोबाइल्स, 9977280000, खरोराः अग्रवाल मोटर्स, 9424212141, सरायपालीः बंसल ऑटो, 9425513611, डोंगरगढ़ः युवराज मोटर्स, 8085160380, तिल्दाः आरसन मोटर्स, 9340335266, नगरीः हर्ष ऑटो, 8109502100, पाटनः दिव्या ऑटो, 9893492107, बागबाहराः प्रियंका ऑटोकेयर, 9131058752, कोण्डागांवः आहूजा ऑटोमोबाइल्स, 9131794017/9993861888, नारायणपुरः गुरुनानक ऑटो, 9425596290, केशकालः साहिल ऑटो सेल्स, 9893199247, झलमंडीः किरन ऑटोकेयर, 9754069392, फरसगांवः राजा ऑटोमोबाइल्स, 9425594144, बेरलाः कोल्हा मोटर्स, 98931058752/6260472025, कसडोलः बजरंग मोटर्स, 9425511973, बालोदः नैन ऑटोकेयर, 9425563502, सिमगाः मां सरस्वती ऑटोमोबाइल्स, 9301361155, गरियाबंदः छत्तीसगढ़ ऑटो केयर, 8319358443, परोदाः सत्यम ऑटोमोबाइल्स, 9977155055, गुंडरदेहीः एम.एम. ऑटो, 9893542300/8720051135, जामुलः जय अम्बे ऑटो एजेंसी, 9826386346, रिसालीः भारत मोटर्स, 9993417123, पिंगेश्वरः अभिषेक ऑटो, 9977737000/9300093200, भिलाई-3: महावीर मोटर्स, 8109100019, कुरूदः शिव ऑटो, 8305711110/9993454103, भानुप्रतापपुरः संस्कार मोटर्स, 8085053343/7898813343, गोहरा पादरः गोविंद ऑटो केयर, 9303664769, इरपिनारः अंशु ऑटो, 6261421161, डीलर एक्सटेंशन काउंटरः रायपुरः आरसन हीरो (फाफाडीह), 7428587575, 0771-4000233, भिलाई (सुपेला): इंडियन हीरो, 0788-4911301, 8305597651, एडिशनल वर्कशॉपः रायपुरः आरसन मोटर्स (फाफाडीह), 7697868545/0771-4000233, आरसन मोटर्स (टिकरापारा), 2274333/666, राजधानी ऑटो केयर, (रिंग रोड नं.1, तेलीबांधा चौक) 0771-2420037, जेन्युइन स्पेयर पार्ट्स के लिए संपर्क करें: अधिकृत स्टॉकिस्टः संजय ऑटोमोबाइल्स, 2226732/7474, Hero Sure (Buy, Sell, Exchange Any Used Two Wheeler) रायपुरः आरसन हीरो, 9285052266, भिलाईः इंडियन हीरो, 9289922355, दल्लीराजहराः लक्ष्मी हीरो, 9289922983

L&K | SAATCHI & SAATCHI

चिंतन

आतंकवाद के खिलाफ 'खुली छूट' वक्त का तकाजा

पहलगाम आतंकी हमले के बाद से देश में आक्रोश है। लोग जल्द से जल्द हमलावर आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई चाहते हैं। इसी कड़ी में पीएम नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय बैठक हुई। बैठक में प्रधानमंत्री ने साफ संदेश दिया है कि आतंकवाद को कुचलना राष्ट्रीय संकल्प है। सरकार ने आतंकियों के खिलाफ एक्शन के लिए सेना को खुली छूट दी है। पहलगाम हमले को अंजाम देने वाले आतंकियों, उनके मददगारों व साजिशकर्ताओं के खिलाफ एक्शन के लिए सेना अपने हिसाब से तरीका, टारगेट और समय तय करेगी। 22 अप्रैल को पहलगाम में पर्यटकों पर हमला कर आतंकियों ने 27 बेकसूर निहत्थे लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। हमले की जिम्मेदारी लश्कर के छद्म गुट द रिजसटेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली, जिससे इस हमले से पाकिस्तान का तार जुड़ा। लश्करे तैयबा पाकिस्तान स्थित आतंकी गुट है। हमले के बाद से सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं, जिनसे पाकिस्तान को भी संदेश दिया गया है और घरेलू स्तर पर भी आतंक के खिलाफ कार्रवाई की गई है। अच्छी बात है कि इस संकट की घड़ी में देश पूरी तरह एकजुट है, राजनीतिक रूप से भी व सामाजिक-धार्मिक रूप से भी। वक्त का तकाजा है कि सरकार इस हमले के दोषियों को अंजाम तक पहुंचाए और इसलिए प्रधानमंत्री ने तीनों सेनाओं को जवाबी कार्रवाई क्या होगी, कब होगी और क्या टारगेट होगा, ये तय करने की पूरी तरह से ऑपरेशनल छूट दी है। इस बीच विश्व स्तर पर भी पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा हुई है और विश्व के अधिकांश राष्ट्रों ने भारत के प्रति एकजुटता दिखाई है। भारत ने कहा है कि हमले के बाद वैश्विक नेताओं की ओर से 'मजबूत, स्पष्ट' समर्थन और एकजुटता, आतंकवाद के प्रति अंतरराष्ट्रीय समुदाय की कतई बर्दाश्त नहीं करने की नीति का प्रमाण है। 2008 में हुए 26/11 के भीषण मुंबई हमलों के बाद पहलगाम आतंकवादी हमले में इतनी अधिक संख्या में आम नागरिक मारे गए हैं। दशकों से सीमा पार आतंकवाद का शिकार होने के कारण भारत इस बात को अच्छी तरह समझता है कि इस तरह के कृत्यों का पीड़ितों, उनके परिवारों और समाज पर दीर्घकालिक असर पड़ता है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री केअर स्टॉर्मर, इतालवी प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंतोनियो गुतारेस सहित वैश्विक नेताओं ने भारत के साथ एकजुटता व्यक्त की। पिछले हफ्ते 15 सदस्यीय संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने एक प्रेस वक्तव्य जारी कर जम्मू कश्मीर में आतंकवादी हमले की 'अत्यधिक कड़े शब्दों में' निंदा की। सुरक्षा परिषद ने जोर दिया कि इन हत्याओं के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए और ''आतंकवाद के इस निंदनीय कृत्य'' को अंजाम देने वाले और उसके प्रायोजकों को न्याय के कठघरे में लाया जाना चाहिए। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने खुलेआम कबूल किया है कि उनके देश का आतंकवादी संगठनों का समर्थन और वित्तपोषण करने का इतिहास रहा है और यह कबूलनामा उजागर करता है कि पाकिस्तान वैश्विक आतंकवाद को बढ़ावा देने वाला देश है। भारत के लिए आतंकवाद के खिलाफ कड़ा एक्शन लेने का यह अच्छा मौका है, क्योंकि अधिकांश वैश्विक समर्थन नई दिल्ली के पक्ष में हैं और पाकिस्तान की ओर से भी आतंकवाद को पालने- पोसने की स्वीकारोक्ति है।

पहलगाम हमला

रविशंकर

आतंकवाद पर करारी चोट जरूरी

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद केंद्र सरकार की कश्मीर नीति पर भी सवाल उठ रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल करना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार का एक बड़ा वादा था। साल 2019 में सरकार ने अनुच्छेद 370 हटाया था। इसके ज़रिए जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा ख़त्म किया गया। उस समय प्रधानमंत्री मोदी ने अनुच्छेद 370 की निंदा की थी। उन्होंने कहा था कि अनुच्छेद 370 एक औज़ार है। इसका इस्तेमाल करके कश्मीर में आतंक, हिंसा और भ्रष्टाचार फैलाया जा रहा था। तब से लेकर पहलगाम हमले तक, मोदी सरकार का दावा रहा है कि उनके शासन के 10 सालों के दौरान जम्मू-कश्मीर में शांति और अहिंसा का एक नया दौर आया है। लेकिन पहलगाम में आतंकी हमले के बादल अब बहुत सारे सवाल उठ रहे हैं। इनमें सबसे बड़ा सवाल सरकार की कश्मीर नीति पर है, जो उसने दावे किए।ऐसे में यह सवाल भी उठाया जा सकता है कि उसकी कश्मीर नीति सफल रही है,या विफल? या उससे कोई फर्क नहीं पड़ा है।

जम्मू-कश्मीर में सामान्य स्थिति बहाल करना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार का एक बड़ा वादा था। साल 2019 में सरकार ने अनुच्छेद 370 हटाया था। इसके ज़रिए जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा ख़त्म किया गया। उस समय प्रधानमंत्री मोदी ने अनुच्छेद 370 की निंदा की थी। उन्होंने कहा था कि अनुच्छेद 370 एक औज़ार है। इसका इस्तेमाल करके कश्मीर में आतंक, हिंसा और भ्रष्टाचार फैलाया जा रहा था। तब से लेकर पहलगाम हमले तक, मोदी सरकार का दावा रहा है कि उनके शासन के 10 सालों के दौरान जम्मू-कश्मीर में शांति और अहिंसा का एक नया दौर आया है। लेकिन पहलगाम में आतंकी हमले के बादल अब बहुत सारे सवाल उठ रहे हैं।

जरा याद कीजिए, साल 2019 में अनुच्छेद 370 हटाने के पांच साल बाद प्रधानमंत्री मोदी ने साल 2024 में पहली बार जम्मू कश्मीर का दौरा किया। उनका यह दौरा लोकसभा चुनाव के कुछ दिन पहले हुआ था। श्रीनगर में एक बड़ी सभा में प्रधानमंत्री ने कहा था कि कश्मीरी अब आजादी से सांस ले रहे है। अनुच्छेद 370 के हटने के बाद कश्मीर प्रगति और समृद्धि की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। दशकों तक कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने अनुच्छेद 370 के बारे में जम्मू-कश्मीर और देश के लोगों को गुमराह किया। हालांकि, इस दौरान कठिनाइयां भी आई। साल 2017 में अमरनाथ यात्रियों पर चरमपंथियों ने हमला किया। इसमें आठ यात्रियों की मौत हो गई। साल 2019 में अनुच्छेद 370 हटने से पहले, घाटी के पुलवामा में चरमपंथी हमले में 40 सीआरपीएफ़ जवान मारे गए। ना जाने इस तरह की और भी कई छोटी-बड़ी घटनाएं घाटी में घटित हुई। 2014 में मोदी और उनकी पार्टी जब चुनाव प्रचार कर रही थी तब उन्होंने वादा किया था कि कश्मीर के मामले में अब तक जो निरर्थक रवैया अपनाया जाता रहा है उसके विपरीत वे सख्त रवैया अपनाएंगे। सरकार की कमजोरी का उदाहरण देने के लिए कश्मीरी पंडितों की बदहाली का हवाला दिया जाता था और कहा जाता था कि सेकुलर पार्टियों ने 1990 में उन्हें किस तरह निराश किया। कहा जाता था कि मोदी सरकार आतंकवादियों को, चाहे वे भारतीय हों या पाकिस्तानी, दिखा देगी कि उनके दिन अब लद गए। लेकिन उसके बाद से महीना-दर-महीना आतंकवादी यह दिखाते रहे कि वे ऐसा नहीं मानते। अनुच्छेद 370 को रद करने के फैसले का तो हम स्वागत करते हैं मगर घाटी के हालात को असंतोषजनक भी क्यों कहते हैं। इसकी वजह यह है कि संविधान से जुड़ा वह फैसला उच्चतर राजनीतिक-रणनीतिक दायरे में किया गया, जमीनी हकीकत के मद्देनजर नहीं। इसलिए यह अपेक्षा रखना खामख्याली ही होगी कि इससे आतंक, हिंसा,अलगाव और आप कहना चाहें तो घाटी में इस्लामी जिहाद आदि सब खत्म हो जाएंगे। आप कह सकते हैं कि यह मोदी सरकार और बीजेपी की ही गलती है कि उसने इस कदम को एक नई साहसिक सुबह लाने वाला और अंधेरे को खत्म करने वाला कदम बताकर खूब प्रचारित

किया। मालूम हो,जब तक अनुच्छेद 370 संविधान में मौजूद था और कश्मीर को भारत में विशेष दर्जा हासिल था,तब तक सारा संसार और पाकिस्तान यह मान रहा था कि जम्मू-कश्मीर के दर्जे पर बातचीत हो सकती है। इसलिए वे भी उम्मीद लगाए बैठे थे। लेकिन पांच अगस्त ने वह सब खत्म कर दिया है। इसके बाद से,भारत की ओर से संदेश यह जा रहा था कि जम्मू-कश्मीर भारत के दूसरे सभी राज्यों जैसा ही एक राज्य है और बातचीत उस क्षेत्र के बारे में हो सकती है जिस पर आपने कब्जा कर रखा है और जिसका नाम 'पीओके' है।

मोदी सरकार की सफलता यह है कि संयुक्त राष्ट्र समेत पूरी दुनिया इस बात को लगभग तय मान चुकी है। इसीलिए हमने इस फैसले को साहसिक बदलाव कहा। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि मोदी सरकार की कश्मीर नीति राज्य का दर्जा बदलने और वार्ता के मुद्दे को पुनर्परिभाषित करने के मामले में सफल रही है। लेकिन चूंकि उसने इसे अपने समर्थकों के बीच बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया इसलिए वह जमीन पर विफल हुई नजर आ रही है। पुलवामा या गलवान के विपरीत,जहां रक्षाकर्मी शहीद हुए, बैसरन में आतंकवादियों ने निर्ममतापूर्वक नागरिकों को चुन-चुनकर निशाना बनाया। यह हमला ऐसे समय में हुआ जब केंद्र सरकार राज्य में आतंकवाद के खात्मे के दावे कर रही थी। बीते वर्षों में लगातार यह कहा जाता रहा कि आतंकियों की संख्या घट गई है और आतंकी नेटवर्क लगभग समाप्ति की ओर है। लेकिन यदि यह स्थिति वास्तव में इतनी बेहतर थी, तो पहलगाम जैसे सुरक्षित और संवेदनशील क्षेत्र में आतंकवादी कैसे खुलेआम गोलियां बरसाकर फरार हो गए? यह प्रश्न इसलिए भी गंभीर है क्योंकि यह इलाका न केवल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है, बल्कि अमरनाथ यात्रा का प्रमुख आधार स्थल भी है, जहां हर साल लाखों श्रद्धालु आते हैं। सुरक्षाबलों और खुफिया एजेंसियों की इतनी मौजूदगी के बावजूद हमले की पूर्व सूचना का न होना, संदिग्ध गतिविधियों की पहचान न कर पाना, और हमलावरों का आसानी से भाग निकलना यह दर्शाता है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्था अब भी सतही सफलता से ऊपर नहीं उठ सकी है। जब सरकार यह कहती है कि आतंकवाद अपने अंतिम दौर में है, तो क्या इसका मतलब यह है कि हम पहले से अधिक ढिलाई बरतने लगे हैं? क्या यह आत्ममुग्धता नहीं है कि हम केवल आंकड़ों और बयानों के सहारे अपनी पीठ थपथपा रहे हैं, जबकि जमीन पर आतंक अब भी जिंदा है? हम इस बात को नजरअंदाज नहीं कर सकते कि जम्मू-कश्मीर में 2019 से लेकर 2024 के बीच छोटे-बड़े सैकड़ों आतंकी घटनाएं घटित हुई हैं। साफ है, घाटी के हालात तब तक नहीं सुधर सकते जब तक वहां राजनीतिक निर्वात बना रहेगा। पहलगाम हमले में मारे गए निर्दोष पर्यटक केवल एक संख्या नहीं, बल्कि वे हमारी सामूहिक लापरवाही का प्रतीक हैं। यदि हम अब भी नहीं चेते, तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आने वाले समय में आतंकवाद और भी अधिक भयावह रूप में लौट सकता है। यह वक्त बयान देने का नहीं, बल्कि सख्त आत्ममंथन और निर्णायक कार्रवाई का है। जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद के खात्मे के लिए देश और इसके समूचे तंत्र की कितनी ऊर्जा लगी है, यह सभी जानते हैं।

विडंबना यह है कि दशकों पहले से जारी इस समस्या से पार पाने के लिए सरकारों ने दावे तो बहुत किए,वक्त के साथ नए उपाय भी किए गए,लेकिन आज भी वहां जिस स्तर की आतंकवादी गतिविधियां चल रही दिखती हैं,वह देश के सामने एक बड़ी चुनौती है। भारत की ओर से लगातार चेतावनी के बावजूद पाकिस्तान लश्कर-ए-तैयबा जैसे आतंकी संगठनों के खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई करने की जहमत नहीं उठाता, इसलिए देश की निगाहें अब एक बार फिर से मोदी पर होंगी।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

कूटनीति

विवेक शुक्ला

जंग हुई तो क्या चीन देगा पाक का साथ!

पहलगाम में 26 मासूम लोगों के कत्ल के बाद भारत-पाकिस्तान आमने-सामने हैं। क्या दोनों पड़ोसी मुल्कों के बीच जंग होगी? क्या जंग हुई तो चीन पाकिस्तान के साथ खड़ा होगा? इन सवालों पर समर नीति और कूटनीति के जानकार आजकल माथापच्ची कर रहे हैं। अगर बात कारगिल जंग (1999) की करें तो तब चीन ने पाकिस्तान का खुलकर या प्रत्यक्ष रूप से सैन्य या राजनयिक समर्थन नहीं किया था। भले ही चीन और पाकिस्तान के बीच गहरे रणनीतिक संबंध हैं, जिन्हें अक्सर सदाबहार दोस्ती कहा जाता है। पाकिस्तान के नेता हर संकट के वक्त बीजिंग पहुंच जाते हैं कटोरा लेकर। दरअसल कारगिल संघर्ष के दौरान चीन की प्रतिक्रिया काफी सधी हुई थी। चीन ने तब आधिकारिक तौर पर भारत और पाकिस्तान से संयम बरतने और बातचीत के माध्यम से मुद्दे को हल करने का आग्रह किया। यानी चीन उस समय पाकिस्तान के साथ खड़ा नहीं हुआ था। चीन ने नियंत्रण रेखा का सम्मान करने का दोनों पक्षों से आग्रह किया था। यह परोक्ष रूप से पाकिस्तान की आलोचना थी, क्योंकि पाकिस्तानी सेना ने नियंत्रण रेखा का उल्लंघन करके भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की थी। जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के चीनी विभाग के अध्यक्ष प्रो. तान चुंग का कहना था कि चीन बहुत प्रेक्टिल देश है। वह बहुत सोच-समझकर ही खुलकर किसी देश के साथ खड़ा होता है। जानकारों का कहना है कि जब कारगिल युद्ध के समय तत्कालीन पाकिस्तानी सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ़ समर्थन मांगने चीन गए, तो चीनी नेतृत्व ने उन्हें पीछे हटने और मामले को शांतिपूर्वक सुलझाने की सलाह दी। चीन इस संघर्ष को बढ़ते हुए नहीं देखना चाहता था। चीन का मत था कि दो परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध रहने चाहिए। दरअसल, तब चीन ने पाकिस्तान की कार्रवाई की सार्वजनिक रूप से निंदा नहीं की थी, पर उसने पाकिस्तान की कारगिल में सैन्य घुसपैठ का समर्थन भी नहीं किया था। 1965 और 1971 के भारत-पाक युद्धों में चीन ने पाकिस्तान का समर्थन जरूर किया था, लेकिन 'खुलकर साथ' होने की व्याख्या थोड़ी जटिल है और दोनों युद्धों में उसकी भूमिका थोड़ी अलग थी। चीन ने 1965 की जंग के वक्त भारत की कड़ी आलोचना की और पाकिस्तान को अपना पूर्ण राजनयिक समर्थन दिया। चीन ने भारत पर सिक्किम सीमा पर उल्लंघन का आरोप लगाते हुए सैन्य कार्रवाई की धमकी दी। उसने सीमा के पास अपनी सेना की कुछ गतिविधियां भी बढ़ाईं, जिससे भारत पर दूसरा मोर्चा खुलने का दबाव बना। यह पाकिस्तान के लिए एक महत्वपूर्ण नैतिक और रणनीतिक समर्थन था। हालांकि चीन ने धमकियां दीं और दबाव बनाया, लेकिन उसने भारत के खिलाफ सीधे तौर पर कोई बड़ी सैन्य कार्रवाई नहीं की। उसका समर्थन मुख्यतः राजनयिक और मनोवैज्ञानिक दबाव तक ही सीमित रहा। वह सीधे युद्ध में शामिल नहीं हुआ। चीन ने 1971 में भी पाकिस्तान का राजनयिक समर्थन जारी रखा और भारत के हस्तक्षेप की आलोचना की, खासकर संयुक्त राष्ट्र में। हालांकि 1971 में चीन का दबाव काफी कम था। कूटनीति मामलों के जानकार इसके कई कारण बताते हैं। भारत-सोवियत संधि (1971) ने चीन को हतोत्साहित किया, क्योंकि भारत पर हमले की स्थिति में सोवियत संघ के हस्तक्षेप की संभावना थी। चीन उस समय सोवियत संघ के साथ तनावपूर्ण संबंध रखता था। इसके साथ ही सर्दियों में हिमालय के दुर्गम दर्रों से बड़े पैमाने पर सैन्य कार्रवाई करना चीन के लिए बहुत मुश्किल था। मतलब चीन ने 1971 में भी कोई सीधा सैन्य हस्तक्षेप नहीं किया। एक बात समझ लें कि भले ही भारत-चीन के बीच सीमा विवाद है, पर चीन को मालूम है कि भारत उसके उत्पादों के लिए एक बड़ा बाजार है। यह बात उसे आजकल खासतौर पर समझ आ रही होगी क्योंकि अमेरिका उस पर भारी-भरकम टैरिफ लगा रहा है। फिलहाल भारत-चीन के बीच सालाना आपसी व्यापार 125 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया है। समझ लें कि भारत-चीन ने तय कर लिया है कि इनका जटिल सीमा विवाद का कोई हल निकले या ना निकले, पर ये अपने आपसी कारोबारी संबंधों को प्रभावित नहीं होने देंगे। हमारा चीन के साथ कुछ साल पहले तक व्यापार घाटा 29 अरब रुपए तक का हो गया था। पूर्व विदेश सचिव हर्षवर्धन श्रृंगला भी मानते हैं कि इस व्यापार घाटे को संतुलित करने की जरूरत है। पर फिलहाल सबकी निगाहें इस बात पर है कि भारत-पाक के बीच जंग वाली स्थिति बनी तो चीन किसका साथ देगा। तो जान लें कि चीन युद्ध की स्थिति में पाक का खुलकर साथ नहीं देगा।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

प्रसन्न रहने की शुरुआत घर से हो

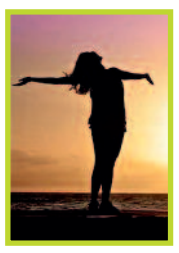

संकलित

दर्शन

महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रसन्न रहने की शुरुआत अपने घर से ही होनी चाहिए। हम बाहर तो बहुत खुश रहते हैं, लेकिन घर में अकारण क्रोध से भरे रहते हैं। सभी लोग, खासतौर पर युवा इस बात का ध्यान रखें कि उन्हें घर में भी प्रसन्न रहना है। युवाओं को यह बात याद रहे, इसलिए एक नया मंत्र दे रहा हूं। वे घर और परिवार में भी शांति रखें। कई लोग बाहर से घर में आते ही क्रोधित हो जाते हैं। वे अकारण गुस्सा कर घर वालों को मायूस कर देते हैं। यह हत्या कर देने जैसा अपराध है। मुश्किल यह है कि ये लोग अपनी कमी को मानते भी नहीं। कम से कम वे यह मान लें कि उसमें यह कमी है तो कभी न कभी वह कमी दूर भी की जा सकती है। लंका में कोई मानता ही नहीं था कि वहां कोई रोगी है। परिणाम सबके सामने है। जो माने ही नहीं कि अस्वस्थ है, वह स्वस्थ कैसे हो सकता है? एक और मंत्र याद रखें-छोटी-मोटी बातों को अनदेखा करें। व्यर्थ विवाद में मत उलझें। बात-बात में उलझने की आदत से अशांति ही पैदा होती है। सच्ची प्रसन्नता चाहिए तो इधर-उधर की बातें सुनना ही छोड़ दें। अस्तित्व के संगीत को सुनने की कोशिश करें। याद रखें, जिसे प्रसन्न रहना है, उसे कोई रोक नहीं सकता और जिसे दुखी ही रहना है, उसे कोई प्रसन्न नहीं कर सकता। कुछ लोगों को प्रसन्न रहना ही नहीं है। वे परेशान और दुखी होने के बहाने खोजते रहते हैं। इस आदत को बदलने की कोशिश ईमानदारी के साथ की जानी चाहिए।

योजना बनाकर किए काम में मिलती है सफलता

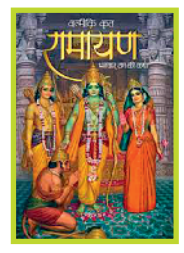

संकलित

प्रेरणा

रामायण में देवी सीता का हरण हो गया था। श्रीराम और लक्ष्मण सीता को खोज रहे थे। राम-लक्ष्मण उस जंगल में पहुंच गए, जहां सुग्रीव बाली की डर से छिपे हुए थे। सुग्रीव के साथ ही हनुमान जी भी थे। सुग्रीव ने दो राजकुमारों को देखा तो वे डर गए। सुग्रीव ने सोचा कि बाली ने मुझे मारने के लिए इन्हें यहां भेजा है। सुग्रीव ने हनुमान जी से कहा कि आप देखिए वहां दो राजकुमार दिख रहे हैं, वहां जाकर मालूम करो कि कहीं ये हमारे शत्रु तो नहीं हैं। अगर वे शत्रु हैं तो वहीं से इशारा कर देना, हम यहां से कहीं और भाग जाएंगे। अगर वे मित्र हैं तो वहीं से इशारा करना, हम यहीं रुक जाएंगे। हनुमान जी सुग्रीव की आज्ञा पाते ही उन दोनों राजकुमारों के सामने पहुंच गए। हनुमान जी वेष बदलकर गए थे। हनुमान जी ने बुद्धिमानी का उपयोग करते हुए अपना सही परिचय बताए बिना राम-लक्ष्मण की परख की। जब हनुमान जी को मालूम हुआ कि ये राम-लक्ष्मण हैं तो वे अपने असली रूप में आ गए और सुग्रीव को इशारा कर दिया कि ये हमारे शत्रु नहीं हैं। हनुमान जी ने राम-लक्ष्मण से कहा कि आप मेरे राजा सुग्रीव के पास चलिए और उनसे मित्रता कर लीजिए। हनुमान जी राम-लक्ष्मण को लेकर सुग्रीव के पास पहुंचे और इनकी मित्रता कराई। हनुमान जी समझ गए थे कि इन दोनों की समस्याएं एक-दूसरे की मदद से हल हो सकती हैं। इस मित्रता के बाद श्रीराम ने बाली वध किया और सुग्रीव को राजा बना दिया। इसके बाद सुग्रीव ने अपनी पूरी वानर सेना सीता की खोज में लगा दी। वानर सेना ने रावण से युद्ध में भी श्रीराम का साथ दिया था।

अंतर्मन

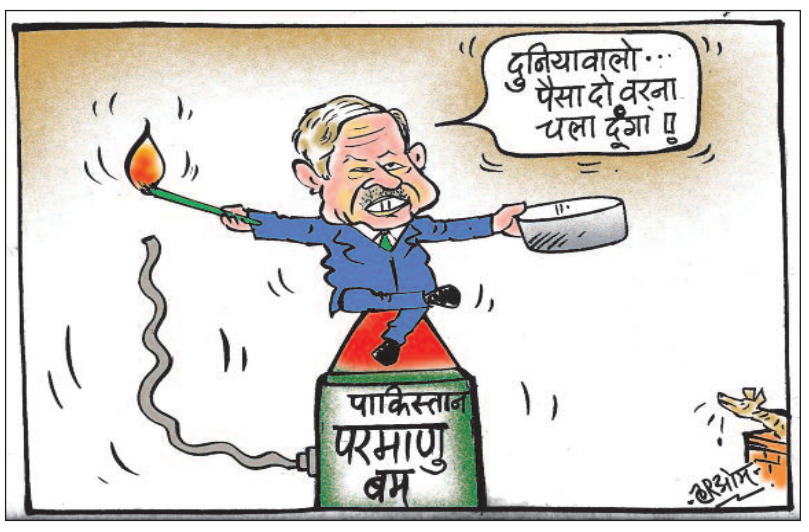

आज की पाती

सबसे पहले इन दुष्ट दानवों की लगाम कसी जाए

पहलगाम में आतंकियों के इस अत्यंत ही जघन्य, कायरतापूर्ण हमले के बाद सारे भारत में दुख, पीड़ा और आक्रोश की लहर फैल चुकी है। दुनिया भलीभांति जानती है कि भारत विश्वशांति का सबसे बड़ा समर्थक और संरक्षक रहा है, लेकिन आतंकवाद और उग्रवाद का जनक पाकिस्तान अगर ऐसे कायरता के दुष्कार्य करता रहेगा, तो भारत सहित दुनिया के लगभग सभी देशों द्वारा पाकिस्तान के नेताओं, उग्रवादियों को कड़ा सबक सिखाकर स्थाई समाधान करना अनिवार्य हो जाता है। स्वयं और समस्त संसार की रक्षा और सुरक्षा करना भी हम सभी का परम कर्तव्य है। मानवता और विश्वशांति को धता बताने वाले इन पाकिस्तानी दुष्टो, दानवों को तुरंत ही धर दबोच कर कठोर दंड दिया जाए। *- विनय दीक्षित, रायगढ़*

ट्रेंड

मार्क जे कार्नी को बधाई

मार्क जे कार्नी को कनाडा के प्रधानमंत्री के रूप में चुनने और लिबरल पार्टी को उनकी जीत पर बधाई। भारत और कनाडा साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता और लोगों के बीच जीवंत संबंधों से बंधे हैं। हमारी साझेदारी के लिए आपके साथ काम करने को उत्सुक हूं।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

अश्रुपूर्ण नमन

लेह-लद्दाख में वीरगति को प्राप्त हुए हरियाणा के लाल नवीन श्योराण को अश्रुपूर्ण नमन। प्रभु से दिवंगत आत्मा को शांति व शोकाकुल परिजनों को संबल प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ। दुःख की घड़ी में हम उनके परिजनों के साथ खड़े हैं।

-नायब सैनी, सीएम, हरियाणा

वैभव का निडर दृष्टिकोण

वैभव का निडर दृष्टिकोण, बल्लेबाजी की गति और अपनी पूरी शक्ति गेंद पर लगा देना उनकी शानदार पारी का नुस्खा था। इसका परिणाम यह था कि वह 38 गेंद पर 101 रन बनाने में सफल रहे।

-सचिन तेंदुलकर, क्रिकेटर

मुझे चुनने के लिए धन्यवाद

मुझे जो सम्मान दिया गया है, मैं उसे अपने राष्ट्र की भलाई के लिए काम करते रहने की जिम्मेदारी के रूप में स्वीकार करता हूँ और मैं भारत सरकार को इस सम्मान के लिए मुझे चुनने के लिए धन्यवाद देता हूँ।

-शेखर कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

श्रीलंका में बुद्ध के दांत के अवशेष की प्रदर्शनी संपन्न

भगवान बुद्ध के दांत के अवशेष की दुर्लभ प्रदर्शनी श्रीलंका के कैंडी शहर में संपन्न हुई। आधिकारिक बयान से यह जानकारी मिली। यह प्रदर्शनी 18 अप्रैल को शुरू हुई और रविवार को समाप्त हुई। मुख्य बौद्ध भिक्षुओं ने एक संयुक्त बयान में कहा कि प्रदर्शनी देखने के लिए रिकार्ड संख्या में लोग एकत्र हुए। 2.1 करोड़ आबादी वाले देश में 74 प्रतिशत सिंहली बौद्ध बहुसंख्यकों के लिए बुद्ध के दांत के अवशेष का विशेष आध्यात्मिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व है। हजारों बौद्ध श्रद्धालुओं ने 10 दिन की इस प्रदर्शनी में हिस्सा लिया जो 2009 के बाद से इस तरह का पहला आयोजन था। आयोजकों का अनुमान था कि करीब 20 लाख श्रद्धालु इसमें भाग लेंगे। हालांकि अधिकारियों का मानना है कि अनुमानित संख्या के आधे से भी कम लोग इसमें शामिल हुए क्योंकि अधिकारियों ने इतनी बड़ी संख्या में आए श्रद्धालुओं के लिए बुनियादी स्वच्छता सुविधाएं उपलब्ध कराने में असमर्थता जताते हुए लोगों के प्रवेश पर रोक लगा दी। कैंडी की नगर आयुक्त इंडिका कुमारी ने संवाददाताओं से कहा, 'हमें खुशी है कि यह कार्यक्रम सम्पन्न हो गया है। लेकिन हमारे पास कैंडी में बनाए गए विभिन्न अस्थायी ढांचों को हटाने का बड़ा काम रह गया है।'

ऑफ बीट

खुद सब्जियां उगाने वाले कम भोजन करते हैं बर्बाद

जीवन यापन के बढ़ते खर्च से लोगों, विशेष रूप से कम आय वाले (जिनका आहार अक्सर समुचित नहीं होता है), के लिए स्वस्थ आहार का खर्च उठा पाना कठिन होता जा रहा है। इसके बावजूद, ब्रिटेन में घरों में हर साल आश्चर्यजनक मात्रा में भोजन बर्बाद होता है। इसमें लगभग 68 किलोग्राम फल और सब्जियां भी शामिल है। खाने की बर्बादी न केवल आपकी जेब पर भारी पड़ती है, बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी हानिकारक है। वैश्विक स्तर पर, हर साल 1.3 अरब टन भोजन बर्बाद हो जाता है, जिससे दुनिया के ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का लगभग आठ प्रतिशत उत्पन्न होता है। ये उत्सर्जन खाद्य आपूर्ति श्रृंखला के सभी चरणों में अप्रयुक्त भोजन से उत्पन्न होता है। हमारे हालिया अध्ययन से हालांकि पता चला है कि जो लोग बगीचों और आवंटित जमीनों में फसल और सब्जियां स्वयं उगाते हैं, वे औसतन केवल 3.4 किलोग्राम फल और सब्जियां बर्बाद करते हैं – जो ब्रिटेन के औसत से 95 प्रतिशत कम है। इन परिवारों ने भोजन की बर्बादी को कम करने के लिए विभिन्न प्रथाओं को अपनाया, जिसमें अपनी अतिरिक्त उपज को संरक्षित करना या किसी अन्य को दे देना भी शामिल है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

Reliance
Growth is Life

SMART BAZAAR

हमारा नारा, फुल पैसा वसूल करेगा इंडिया सारा.

फुल पैसा वसूल सेल
30th APR - 4th MAY

Scan & Unlock Secret Offers

स्मार्ट कीमत ₹409 / ₹439
गुड लाईफ बादाम / काजू (W320) 500 g
एमआरपी ~~₹620 / ₹725~~
बचाइए ₹211 / ₹286

खुली चीनी S / तूअर दाल वैल्यू 1 kg
स्मार्ट कीमत ₹43.50 / ₹109
बाज़ार मूल्य ~~₹50 / ₹114~~

गुड लाईफ दुबराज / कालीमूंछ कच्चा चावल 10 kg
स्मार्ट कीमत ₹599 / ₹849
एमआरपी ~~₹840 / ₹1130~~
बचाइए ₹241 / ₹281

लाल किला मोटा पोहा 1 kg / चक्की आटा 10 kg
स्मार्ट कीमत ₹55 / ₹359
एमआरपी ~~₹99 / ₹425~~
बचाइए ₹44 / ₹66

किंग्स सोयाबीन 800 g / गुड लाईफ राइस ब्रान तेल 1 L
स्मार्ट कीमत ₹119 / ₹129
एमआरपी ~~₹169 / ₹185~~
बचाइए ₹50 / ₹56

न्यूनतम 25% छूट
डेयरी / फ्रोजन और बेकरी (चुनिंदा श्रेणी)
एमआरपी ₹25 या उससे अधिक

BUY ANY 2 GET ANY 1 FREE
बिस्किट्स / चॉकलेट्स / रस्क 118 g या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)
एमआरपी ₹100 या उससे अधिक /यूनिट

BUY ANY 3 GET ANY 1 FREE
कोल्ड ड्रिंक्स और ज्यूसेस 250 ml या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)
एमआरपी ₹40 या उससे अधिक /यूनिट

BUY 2 GET 1 FREE
रेड लेबल लीफ टी 1 kg
एमआरपी ~~₹560~~ या उससे अधिक /यूनिट

सनफीस्ट यिप्पी! / टॉप रैमेन / चिंग्ज / स्नॅकटैक / मैगी वेज आटा नूडल्स 240 g या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)
एमआरपी ₹80 या उससे अधिक
न्यूनतम 33% छूट

न्यूनतम 40% छूट
साबुन 125 g या उससे अधिक (मल्टी पैक)(चुनिंदा प्रकार)
एमआरपी ₹175 या उससे अधिक

शैम्पू 580 ml या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)
न्यूनतम 55% छूट
एमआरपी ₹890 या उससे अधिक

एमआरपी ₹208 या उससे अधिक
न्यूनतम 40% छूट
टूथपेस्ट 300 g या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)

डिटर्जेन्ट पाउडर 5 kg या उससे अधिक / लिक्विड 4 L या उससे अधिक (चुनिंदा प्रकार)
न्यूनतम 33% छूट
एमआरपी ₹770 या उससे अधिक

स्मार्ट कीमत ₹1999 या उससे अधिक
SINGER LYF Surya flame Kelvinator
3 बर्नर गैस स्टोव
एमआरपी ~~₹7560~~ या उससे अधिक

स्मार्ट कीमत ₹999
18 पीस ओपलवेयर डिनर सेट
एमआरपी ~~₹2095~~ या उससे अधिक

2000+ फैशन स्टाइल्स ₹399 के निचे
टी-शर्ट्स ₹199 | शर्ट्स ₹299
कुर्ते ₹299 | शॉर्ट्स ₹299 | जीन्स ₹399

पाइए मुफ्त एलईडी टीवी
ब्रैंडेड 1.5 टन 3 स्टार इन्वर्टर एअर कंडिशनर (चुनिंदा श्रेणी)
एमआरपी ~~₹55999~~ या उससे अधिक
स्मार्ट कीमत ₹32990* या उससे अधिक

कॉटन डबल बेडशीट पिलो कवर्स के साथ
फ्लैट 70% छूट
एमआरपी ~~₹1199~~ या उससे अधिक
स्मार्ट कीमत ₹360 या उससे अधिक

स्मार्ट कीमत ₹3999
पाइए मुफ्त ट्रॉली बैग
2 पीस क्रूझर हार्ड ट्रॉली सेट
एमआरपी ~~₹12800~~

रायपुर: अंबुजा सिटी सेंटर मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, विधानसभा रोड, मोवा. • मैग्नेटो द मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, जीई रोड. • सिटी सेंटर मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, पंडरी. • चंद्रा स्कवेयर, विधानसभा रोड़, मोवा • कलर्स मॉल, पचपेड़ी नाका. बिलासपुर : सिटी मॉल 36, पहली मंजिल, मुन्हेली रोड, मंगला स्क्वेयर • MMIPL कॉम्पलेक्स, दुबई स्वीट्स के सामने, तारबाहर रोड़, टैगोर चौक • रामा मैग्नेटो मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, श्रीकांत वर्मा मार्ग, • स्वर्ण प्लाजा, SECL कॉलोनी के पास, राज किशोर नगर, वसंत विहार चौक, सीपत रोड. • रायगढ़ : ग्रैंड मॉल, दूसरी मंजिल, गौरी शंकर मंदिर रोड के पास • शाह कॉम्पलेक्स, ट्रैफिक पुलिस ऑफिस के पास, दरोगापारा, गौशाला रोड़ भिलाई: सूर्या ट्रेज़र आइलैंड मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, स्मृति नगर कोरबा: द पाम मॉल, लोअर ग्राउंड फ्लोर, टी.पी. नगर जगदलपुर: बिनाका हेरिटेज, बिनाका मॉल के पास, चित्रकूट रोड़ अम्बिकापुर: चंडीग्राम प्लाज़ा, खारिसा रोड, अग्रसेन स्क्वेयर.

10% INSTANT DISCOUNT# SBI card
#Min. Trxn.: ₹3,000; Max. Discount: ₹500 per Credit Card; Validity: 30 Apr - 04 May 2025. T&C Apply.

ऑफ़र यहाँ भी उपलब्ध
fresh Signature. SMART SUPERSTORE

नियम तथा शर्तें लागू। ऑफर स्टॉक खत्म होने तक वैध। सभी ऑफ़र्स को सूचना दिए बिना बदला जा सकता है। प्रोडक्ट्स की दिखाई गई तस्वीरें/फोटोग्राफ्स केवल प्रतिनिधित्व के लिए हैं। होमवेअर और अपैरल ऑफ़र्स चुनिंदा स्मार्ट बाजार और स्मार्ट सुपरस्टोर पर वैध। सभी प्रोडक्ट्स की एमआरपी में सभी टैक्स शामिल हैं। छूट प्रतिशत को ऑफर मूल्य के लगभग प्रतिशत तक राउंड ऑफ किया गया है। सभी ऑफ़र्स 4 मई 2025 तक मान्य हैं। सभी विवाद केवल मुंबई में स्थित न्यायालयों केअनन्य क्षेत्राधिकार के अधीन हैं।

SMART BAZAAR

'धमाल-4' का क्लाइमेक्स मुंबई में होगा शूट

मुंबई। अभिनेता अजय देवगन आने वाले समय में एक से बढ़कर एक फिल्मों में नजर आएंगे। सुपरहिट कॉमेडी फ्रैंचाइजी 'धमाल' की चौथी किस्त 'धमाल 4' भी इन्हीं में से एक है। इस फिल्म का दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म की शूटिंग अपने अंतिम चरण पर है। अब 'धमाल 4' के क्लाइमेक्स से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी सामने आ रही है। आइए जानें फिल्म का क्लाइमेक्स कब-कहां शूट किया जाएगा और इसमें अजय के साथ कौन-कौन शामिल होगा। एक रिपोर्ट के अनुसार, 'धमाल 4' का आखिरी शेड्यूल 15 मई से मुंबई में शुरू होगा, जहां जंगल थीम वाला एक बड़ा सेट बनाया जा रहा है। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि यह शेड्यूल जून के आखिर तक पूरा हो जाएगा और इसके बाद पोस्ट-प्रोडक्शन का काम शुरू होगा। फिल्म के क्लाइमेक्स में अजय के साथ जावेद जाफरी, रितेश देशमुख और अरशद वारसी नजर आएंगे। और यह काफी मजेदार होने वाला है। अजय ने बीते 10 अप्रैल को 'धमाल' की चौथी किस्त का ऐलान किया था। उन्होंने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर फिल्म की स्टार कास्ट के साथ 2 तस्वीरें साझा की थीं।

माधुरी के साथ फिर करेंगी काम

मुंबई। बॉलीवुड अभिनेत्री तृप्ति डिमरी एक बार फिर माधुरी दीक्षित के साथ फिर काम करती नजर आ सकती है। माधुरी दीक्षित और तृप्ति डिमरी ने अनीस बज्मी की फिल्म भूल भुलैया 3 में स्क्रीन स्पेस शेयर किया है। भूल भुलैया 3 के बाद तृप्ति और माधुरी एक कॉमेडी ड्रामा में फिर से साथ काम करने के लिए तैयार हैं। माधुरी दीक्षित और तृप्ति डिमरी विक्रम मल्होत्रा के प्रोडक्शन बैनर अबुंदंतिया एंटरटेनमेंट के लिए एक कॉमेडी ड्रामा में स्क्रीन स्पेस शेयर करेंगी, जिसका नाम फिलहाल मां बहन बताया जा रहा है। यह एक नेटफ्लिक्स ओरिजिनल है और अगले महीने मुंबई में फ्लोर

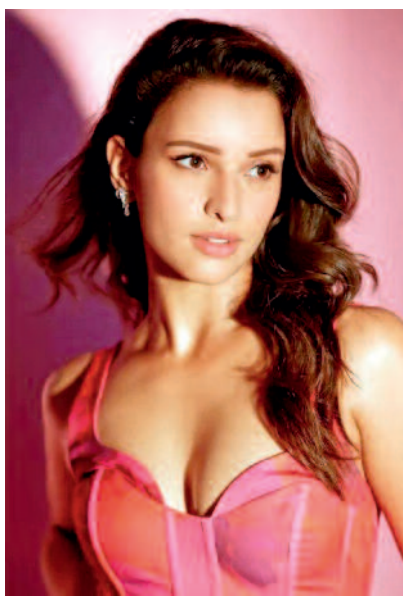

पर जाएगी। इस फिल्म का निर्देशन सुरेश त्रिवेणी कर रहे हैं, जिन्हें तुम्हारी सुलु और जलसा जैसी फिल्मों के निर्देशन के लिए जाना जाता है। यह फिल्म एक कॉमेडी-ड्रामा है, जो तीन किरदार पर आधारित है। इस फिल्म की सबसे खास बात है इसकी कहानी, जो एक मां और बेटी के रिश्ते को लेकर है। माधुरी जहां मां के किरदार में होंगी, वहीं तृप्ति उनकी बेटी का रोल निभाएंगी।दोनों के बीच की नोक-झोंक, प्यार, तकरार और समझदारी इस फिल्म की जान होगी। चर्चा है कि इस फिल्म में रवि किशन और कॉमेडियन धारणा दुर्गा की भी अहम भूमिका होगी।

प्रभास की 'बाहुबली' सिनेमाघरों में फिर हो रही री-रिलीज...

मुंबई। अभिनेता प्रभास की 'बाहुबलीः द बिगिनिंग' हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्मों में से एक है। एसएस राजामौली के निर्देशन में बनी यह फिल्म 10 जुलाई, 2015 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और इसने बॉक्स ऑफिस पर खूब नोट छापे। अब लगभग 10 साल बाद 'बाहुबली' एक बार फिर सिनेमाघरों में रिलीज होने जा रही है। यह फिल्म अक्टूबर, 2025 में सिनेमाघरों में दोबारा दस्तक देगी। निर्माताओं ने खुद इसकी पुष्टि की है। 'बाहुबली' को इस साल अक्टूबर में एक बार फिर सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख सामने नहीं आई है। निर्माताओं ने पोस्टर साझा करते हुए लिखा, 'बाहुबली बड़े पर्दे पर वापस आ रहा है। इस अक्टूबर में, चलिए और भी बड़ा जश्न मनाते हैं।' 'बाहुबली' में राणा दग्गुबाती, अनुष्का शेट्टी, तमन्ना भाटिया, राम्या कृष्णन, सत्यराज और नासिर जैसे कलाकार नजर आए थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 1788.06 करोड़ रुपये का कारोबार किया था।

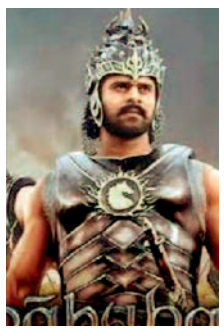

सबसे कमाऊ फिल्म के एटली थे निर्देशक

'मर्सेल' है सामंथा की सबसे कमाऊ फिल्म

मुंबई। सामंथा रुथ प्रभु की गिनती उन अभिनेत्रियों में की जाती है, जिन्होंने बॉलीवुड डेब्यू से पहले हिंदी पट्टी के दर्शकों के बीच खास पहचान हासिल कर ली है। 28 अप्रैल को सामंथा अपना जन्मदिन मनाया। उन्होंने 'द फैमिली मैन 2' से हिंदी दर्शकों के बीच पहचान बनाई। 'पुष्पा' के गाने 'ऊ अंतावां' ने भी उन्हें खूब शोहरत दिलाई। सामंथा ने कई सुपरहिट फिल्मों में काम किया है, लेकिन क्या आप उनकी सबसे कमाऊ फिल्म का नाम जानते हैं? सामंथा की सबसे कमाऊ फिल्म का नाम 'मर्सेल' है, जो साल 2017 में रिलीज हुई थी। इसका निर्देशन शाहरुख खान की फिल्म 'जवान' के निर्देशक एटली ने किया था।

सामंथा के साथ इस फिल्म में थलापति विजय, एस जे सूर्या और नित्या मेनन जैसे कलाकारों ने अभिनय किया था। 120 करोड़ रुपये की लागत में बनी फिल्म 'मर्सेल' ने बॉक्स ऑफिस पर 257 करोड़ रुपये का कारोबार किया था।यह फिल्म जी5, नेटफ्लिक्स और जियो हॉटस्टार पर उपलब्ध है।

कभी जूते किए पॉलिश, बेची चाय, सब्जियों के लगाए ठेले!

नई दिल्ली। आज के दौर में जितने अमीर हीरो- हीरोइन हैं, उतने ही स्टैंड-अप कॉमेडियन भी होते जा रहे हैं। कपिल शर्मा और भारती सिंह को ही ले लीजिए तो वे स्टार्स से कम नहीं हैं। अपनी हंसी मजाक के जरिए ही वे करोड़ों छाप रहे हैं। बहरहाल, यहां हम एक ऐसे कॉमेडियन के बारे में बात कर रहे हैं जिसने गरीबी से उठकर अमीर बनने में लंबा संघर्ष किया है। यहां तक कि सब्जी भी बेची है और जूते भी बनाए हैं, लेकिन आज वो लग्जरी लाइफ जी रहा है।

चाय की दुकानों में किया काम, आज है ऐश-ओ- आराम : जिसके बारे में हम यहां बात कर रहे हैं वो हैं सुदेश लहरी, जो कि एक भारतीय स्टैंड-अप कॉमेडियन हैं। वे टेलीविजन कॉमेडी कार्यक्रमों में दिखाई दिए हैं और स्टेज शो में प्रदर्शन किया है। सुदेश लहरी की गरीबी से अमीरी तक की कहानी एक हर किसी के लिए प्रेरणादायी है। अभिनेता-कॉमेडियन, जो कभी चाय की दुकानों, कारखानों में काम करते थे और आजीविका के लिए जूते बनाते थे। अब मुंबई में एक आलीशान अपार्टमेंट के मालिक हैं। उनकी संपत्ति में तीन बेडरूम, एक बड़ा डाइनिंग रूम, एक मॉड्यूलर किचन, एक निजी स्टूडियो, होम थिएटर और साथ ही एक बड़ा लिविंग रूम शामिल है।

ऐसा था लहरी का बचपन

इससे पहले, अर्चना पूरन सिंह के व्लॉग पर दिखाई देते हुए, सुदेश ने एक समय को याद किया था जब उन्हें अपना घर बेचना पड़ा था। बचपन को याद करते हुए सुदेश कहते हैं, 'मैंने बचपन में बहुत मेहनत की है। मैंने गरीबी देखी है। मैंने छोटी-छोटी दुकानों में काम किया है, चाय बनाई है, कई फैक्ट्रियों में काम किया है, जूते बनाए हैं। सब्जियां बेची हैं। अमीरों को झूठ नहीं बोलना पड़ता, लेकिन गरीब होने के कारण हमें अक्सर साहूकारों से पैसे मांगने पर झूठ बोलना पड़ता है। यह सब मेरे लिए एक्टिंग कोर्स की तरह काम करता है।

परिवार ने खुद डिजाइन किया सुदेश का घर

सुदेश लहरी ने हाल ही में पिंकविला को अपने घर का दौरा कराया, जहां उन्होंने कहा कि उन्होंने और उनके परिवार ने खुद ही घर को डिजाइन किया है। अभिनेता ने मजाक में कहा, 'हमने इंटीरियर डिजाइनर को नहीं रखा, क्योंकि वे महंगे हैं। हंसते हुए उन्होंने कहा कि वो फैंस को मुंबई के शानदार नजारों की एक झलक दिखाकर अपनी 'अमीरी' दिखाना चाहते हैं, जिसका वो अपने घर से आनंद ले सकते हैं। सुदेश लहरी ने अपने घर के दौरे की शुरुआत अपने लिविंग रूम से की, जिसे हाथ से चुने गए फर्नीचर और वॉलपेपर से सजाया गया है। उसके बाद अपना खुद का बेडरूम दिखाया, जहां उन्होंने एक खास चाय कॉर्नर भी बनवाया है। आपको बता दें कि सुदेश के घर के अंदर एक स्टूडियो भी है, जहां वे अपना संगीत रिकॉर्ड करते हैं. दौरे के दौरान, उन्होंने यह भी बताया कि वे घड़ियों के शौकीन हैं।

द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज सीजन 8 से मिली लोकप्रियता

बता दें कि सुदेश करीब दो दशक से इंडस्ट्री में बतौर कॉमेडियन और एक्टर सक्रिय हैं। हालांकि, द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज सीजन 8 में हिस्सा लेने के बाद वे मशहूर हुए। वो कपिल शर्मा के कॉमेडी शो समेत कई अन्य कार्यक्रमों में भी नजर आते हैं।

JHARKHAND RAIL INFRASTRUCTURE DEVELOPMENT CORPORATION LTD.
Regd. Office: Transport Department, FFP Building,
HEC Campus, Dhurwa, Ranchi-834004, (CIN: U45209JH2018SGC011593)
(A JV of Government of Jharkhand and Ministry of Railways)

VACANCY NOTICE
(Advt. No: JRIDCL/01/2025, Date:29.04.2025)

Jharkhand Rail Infrastructure Development Corporation Limited (JRIDCL) invites application for filling up the post of Chief Financial Officer on contract basis. The details of the post, pay, eligibility criteria and application form are available at the website of the company www.jridcl.org.in. The interested candidates, who fulfill the criteria, may apply latest by **03.06.2025**

Sd/-
General Manager (project)
JRIDCL

PR 351350 Jharkhand Industrial Infrastructure Dev Co Ltd(25-26).D

Corres. add- 2nd Floor, Nagar Prashasan Bhawan, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi-834004
Tel. : +91 651-2446131, Email: jridcl.jhr@gmail.com

कार्यालय, प्रबंध संचालक, छ.ग. राज्य कृषि विपणन (मण्डी) बोर्ड
सरदार वल्लभ भाई पटेल भवन सेक्टर-24, कयाबांधा, अटल नगर, नवा रायपुर - 492018
फोन 0771-2990592, email-mdcgmandiboard@gmail.com, website-www.agriportal.cg.nic.in

क्र./बी-6/वि.स. क्षेत्र तखतपुर / 28 / 2025-26 / 779 रायपुर, दिनांक 28/04/2025

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना
Main Portal: http://eproc.cgstate.gov.in
Sub Portal : http://samb. eproc.cgstate.gov.in

कृषि उपज मंडी समिति तखतपुर जिला बिलासपुर अंतर्गत छ.ग. राज्य कृषि विपणन (मंडी) बोर्ड द्वारा ऑनलाईन निविदाएँ छ.ग. लोक निर्माण विभाग की एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत, सक्षम श्रेणी में पंजीकृत निविदाकारो से प्रपत्र 'अ' प्रतिशत दर पर अधोलिखित निर्माण कार्यों हेतु निविदाएँ आमंत्रित की जाती है :-

ऑनलाईन निविदा डालने की अंतिम तिथि - 23.05.2025
फिजिकल सबमिशन की अंतिम तिथि - 29.05.2025

क्र.	कार्य का नाम / स्थल	अनुमानित लागत (लाख में)	एस. ओ. आर विवरण
1	कृषि उपज मंडी समिति तखतपुर मंडी क्षेत्रातंतर्गत 10 ग्राम / ग्राम पंचायत अरईबंद, गिरधौना, सिलतरा, भाड़म, सागर, कोड़ासर, भुण्डा, दर्रीकांपा, तुरकाडीह, पोंगरिहा में सांस्कृतिक मंच, लिदरी में 200 मे.टन गोदाम 01 नग, विंध्यासर में 06 नग खुला चबुतरा देवतरा में कृषक कुटीर 09 ग्राम पंचायत जरौंधा, घोरामार, घुटकु भरारी, गनियारी, ढ़नढ़न, पाली, बांधा, खरगहना में बाजार शेड, 35 ग्राम / ग्राम पंचायत जरेली, परसदा, जरौंधा, सिलतरा, टिहुलाडीह, कोपरा, सांवाताल, भकुर्रा नवापारा, डिघोरा, खम्हरिया, जोगीपुर, कुआँ, खपरी, मरहीकांपा, टांड़ा, देवतरा, मेड़पार बाजार, सकेरी, पचबहरा, बोड़सरा परसाकांपा लिम्ही, हॉफा, दैजा, टाड़ा, कठमुड़ा, पकरिया, सैदा, टिकरी, अमने, परसदा, भाड़म, चोरभट्ठी कला, पोंगरिहा में सी.सी. रोड, 03 ग्राम / ग्राम पंचायत मरहीकांपा, घोंघाडीह, मेड़पार बाजार में पुलिया निर्माण ।	579.27	लो.नि.वि. भवन, सड़क, ब्रिज कार्य हेतु दिनांक 01.01. 2015 एवंविद्युत कार्य हेतु दिनांक 01.07.2015 से प्रभावशील एस. ओ. आर.

उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य एवं विशेष शर्तें, धरोहर राशि, निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in वेबसाईट पर निर्धारित तिथि तक देखे जा सकते है।

सही /- सचिव
कृषि उपज मंडी समिति तखतपुर, जिला-बिलासपुर

सही /- भारसाधक अधिकारी
कृषि उपज मंडी समिति तखतपुर, जिला-बिलासपुर

S-43677/2

हरिभूमि क्लासिफाईड तलाश की नई सुबह
epaper : www.haribhoomi.com
लघु विज्ञापन हेतु संपर्क करें : 6263818152

Appointment आवश्यकता

सिक्योरिटीगार्ड

आवश्यकता है- सुरक्षा गार्ड 50 ऊंचाई 5.5 इंच योग्यता 5वी से 12वीं वेतन 12000 से 19500 तक (ESIC, PF, Bonus और रहना फ्री) खाने की सुविधा दस्तावेज (आधार कार्ड, पेन कार्ड, 10वीं अंकसूची, बैंक पासबुक, 8 पासपोर्ट फोटो) कार्यालय शॉप नं. 08 प्रथम तल, कमला सुपर बाजार, तेलघानी चौक, रायपुर छत्तीसगढ़ फोन 0771-4036689 मों. 9770304037, 8120957510.(RO-7305)

आवश्यकता है- रायगढ़, रायपुर में गार्ड की नौकरी हेतु 5,8,10 पास हाईट 5 फीट 6 इंच, 4 फोटो, आधार कार्ड सहित मिले रहने, खाने की सुविधा, वेतन 14500 से 19000 तक MO. 8109070600. (RO-7086)

आवश्यकता है- सिलतरा रायपुर हेतु, फिल्ड अधिकारी 4, सुपरवाइजर 16, सुरक्षा गार्ड 110, कंप्यूटर ऑपरेटर 2 योग्यता 10वीं, स्नातकोत्तर, गार्ड ऊंचाई (5.7) वेतन योग्यतानुसार संपर्क:- ALERT SGS PRIVATE LIMITED, 434, चतुर्थ तल, प्रोग्रेसिव पॉइंट, लालपुर, रायपुर 7747000019, 7746000016, 7747000016.(RO-074)

हार्डवेयर शॉप

आवश्यकता है- रायपुर स्थित हार्डवेयर शॉप में काम करने के लिए लड़के/लड़कियों की फुल टाइम पार्ट टाइम हो सकता है मोबाइल 9406016466 मिलने का समय 10 से 1 (RO-3851)

हरिभूमि क्लासीफाईड छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

फील्ड कार्य

आवश्यकता है- छत्तीसगढ़ के सभी जिला ब्लॉक व ग्रामीण क्षेत्र में फील्ड कार्य करने के लिए लड़के लड़कियों की आवश्यकता है आकर्षक वेतन जल्द सम्पर्क करें- हनुमंत क्रॉप केयर प्रा. लि. 415 गोल्डन ट्रेड सेंटर किशोर मॉल न्यू राजेन्द्र नगर रायपुर (छ. ग.) मो. 9589076007 , 9201754840 (RO-7320)

कुक/ड्रायवर

आवश्यकता है- तेलीबांधा के आगे वी. आई. पी. चौक के पास रायपुर में सभी घरेलू कार्य एवं शाकाहारी खाना बनाने हेतु कुक एंव गाड़ी चलाने हेतु ड्राइवर की आवश्यकता है। ग्रामीणों को प्राथमिकता । पान, गुटका, तंबाखु या किसी तरह का नशा न करने वाले संपर्क करें 9300593000.(RO-7215)

सेल्समैन

आवश्यकता है- रेडीमेड गारमेंट्स शॉप (पंडरी, RAIPUR) मे काम करने के लिए मेहनती स्टाफ लड़का / लड़की की आवश्यकता एवं सेल्समेन की आवश्यकता है मो. 7067048454. (RO-7318)

गार्ड/सुपरवाइजर

आवश्यकता है- भारी संख्या में अतिशीघ्र सिक्योरिटी गार्ड, सुपरवाइजर की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार तत्काल सम्पर्क करें- ए1 जीत सिक्युरिटीज प्राइवेट लिमिटेड, मंगला चौक सीएलसी प्लाजा बिलासपुर 7247244800, 07752448013. (RO-37516)

विज्ञापन बुकिंग टाइम सुबह 10:30 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक

ऑपरेटर/इंचार्ज

Wanted - Requirement of 3 post of Computer operator,Having thorough knowledge,4 posts of Godown Incharge only for experience, Requirement of 5 posts of driver for small vehicles. interested candidates may contact us with a resume. contact Mob.- 8700749996. (RO-611)

ऑफिस कार्य

आवश्यकता है- ऑफिस कार्य हेतु 18 से 28 वर्ष के अविवाहित लड़कों की अवश्यकता है। योग्यता 10 वी 12वी स्नातक पास सैलरी 10,000 रहना खाना फ्री ज्वाइनिंग के बाद कमाए 15,000 से 20,000 स्थानः- म.प. उज्जैन । Co- 9630773028, 9691233111. (RO-329)

आवश्यकता है- ऑफिस में कार्य हेतु अविवाहित लडको की उम्र 18-32, 10th, 12th पास जो आगरा, में रह कर काम कर सके वेतन 10,000/- + कमीशन + बोनस , रहना फ्री शीघ्र संपर्क करे - 6395268809, 7252820491.(RO-319)

आवश्यकता है- ऑफिस कार्य हेतु 10वी, 12वी, ग्रेजुएट, 18-30वर्ष लड़को की शीघ्र आवश्यकता है जो बाहर रहकर कार्य कर सके। वेतन 10000+ कमीशन+ बोनस के साथ 20000 रहना खाना फ्री+ गाड़ी किराया- कोई शुल्क नहीं लगेगा संपर्क करें- 7611101122, 7611101133.(RO-328)

हरिभूमि क्लासीफाईड

दुकान कार्य

आवश्यकता है- किराना दुकान में काम करने हेतु मेहनती लड़कों की आवश्यकता है पढ़ाई बाधा नहीं। आकर्षक वेतन संपर्क:- भगत किराना स्टोर, गोल बाजार, रायपुर मोबाइल नंबर 7828644611. (RO-7322)

आवश्यकता है- हार्डवेयर दुकान में कार्य करने के लिए आठवीं पास लड़के लड़कियों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। संपर्क करें:- जैन हार्डवेयर एंड टूल्स, बाम्बे मार्केट, रायपुर, 9229101124.(RO-398)

कारीगर

आवश्यकता है- अनुभवी महिला/पुरूष कारीगर की आवश्यकता है पता - वस्त्र विन्यास , महोबा बाजार मो.न. - 9300037117, 9669000105.(RO-4181)

मिस्त्री

आवश्यकता है- अपना ढाबा दुर्ग से बालोद रोड ग्राम कुथरेल में 2 मिस्त्री चाहिए (अनुभवी मिस्त्री) वेतन योग्यतानुसार 15000 - 24000, सप्लाई 2 हेल्पर 9000 -12000 संपर्क:- मो.-90984-59847, 93035-79982. (आरो नं.-733)

अन्य

आवश्यकता है- Fraud call से सावधान Airtel 5G कंपनी मे घरबैठे पार्ट/फुलटाईम (SMS जॉब) करके लड़के लड़कियों गृहणियां कमाए (15000-45000)/- महिना लैपटॉप + मोबाइल मुफ्त Call/ WhatsApp/ SMS करें - 8922962153. (RO-842)

नोट - विज्ञापन प्रकाशन के पहले दिन ही करेक्शन मान्य होगा।

Property प्रापर्टी

मकान

मकान बेचना है- प्लाट साइज- 60x24 = 1440 कंस्ट्रक्शन एरिया- 3550 किराया- 30,000/- माह (तीनफ्लोर) वॉलफोर्ड के समीप रिंग रोड नंबर -01, भाटागांव रायपुर (नए बस स्टैंड के समीप) मूल्य- 90 लाख मो. नंबर 9575086006.(RO-7313)

हरिभूमि विज्ञापन प्रकाशन हेतु संपर्क करें 62638-18152

आवश्यक सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेवें व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेन देन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रबंधक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापन दाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नही होंगे।

Healthcare

कार्यालय नगर पालिका परिषद मुंगेली, जिला- मुंगेली (छ.ग.)

क्र. 145/न.पा./ लो.नि.वि./2025-26 मुंगेली, दिनांक 28/04/2025

प्रथम ई-प्रोक्युरमेंट निविदा सूचना

नगर पालिका परिषद मुंगेली द्वारा निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु निम्नानुसार ऑनलाईन ई-निविदा आमंत्रित की जाती है:-

सिस्टम निविदा क्र.	कार्य का नाम	अनु. व्यय राशि (लाख में)	अमानत राशि	कार्य अवधि	रिमार्क
167631	जोनल टेंडर वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु भवन निर्माण/ मरम्मत एवं अन्य सामयिक प्रवृत्ति के कार्य।	25.00	19000	31 मार्च 2025 तक	समक्ष श्रेणी
167637	जोनल टेंडर वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु सी.सी. सड़क निर्माण एवं मरम्मत कार्य।	25.00	19000	31 मार्च 2025 तक	समक्ष श्रेणी
167644	जोनल टेंडर वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु नाली / पुलिया / कल्वर्ट निर्माण एवं मरम्मत कार्य।	25.00	19000	31 मार्च 2025 तक	समक्ष श्रेणी

टीप:- 1. निविदा प्रपत्र नगरीय प्रशासन विभाग के वेबसाईट http://eproc.cgstate.gov.in) में अवलोकन किया जा सकता है। 2. ई - प्रोक्युरमेंट बीड सब्मिट करने की अंतिम तिथि 20.05.2025 को समय शाम 05:30 बजे तक एवं फिजिकल डाक्यूमेंट सब्मिट करने की अंतिम तिथि 22.05.2025 समय शाम 05:30 बजे तक तथा निविदा खोलने की तिथि 23.05.2025 समय दोपहर 12:05 बजे निर्धारित की गई है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी, नगर पालिका परिषद मुंगेली

कार्यालय, कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग संभाग कवर्धा जिला कबीरधाम (छ.ग.)

ज्ञाप क्र./1927/व.ले.लि./2025-26 कवर्धा, दिनांक 28/04/2025

:: भाव पत्र ::

इस संभाग के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में व्ही.आई.पी. आगमन पर एवं शासकीय कार्यक्रमों के आयोजन हेतु होने वाले समारोह हेतु किराया भंडार सामग्री के भाव पत्र (कोटेशन) रजिस्टर्ड/स्पीड पोस्ट के द्वारा बंद लिफाफे में आमंत्रित की जाती है। इच्छुक योग्य टेन्ट हाऊस प्रतिष्ठान निम्नानुसार तिथि में आवेदन प्रस्तुत कर सकते है, विवरण निम्नानुसार है :-

1. आवेदन प्रस्तुत करने की तिथि - 09.05.2025
2. दर प्रस्तुत करने की तिथि - 16.05.2025
3. दर खोलने की तिथि - 19.05.2025

आवेदन पत्र के साथ निम्नानुसार दस्तावेज / प्रमाण पत्र की प्रति प्रस्तुत करना आवश्यक होगा।

आवश्यक अर्हताएँ -

1. टेन्ट हाऊस प्रतिष्ठान के मालिकाना तथा लाईसेंस की प्रति होना चाहिए।
2. जी.एस.टी. पंजीयन की प्रति।
3. टेन्ट हाऊस प्रतिष्ठान का विगत 03 वर्षो में, टेन्ट हाऊस कार्यक्रम संपादन का औसत वार्षिक टर्न ओवर कम से कम रू. 50.00 लाख होना आवश्यक है, तत्संबंध में प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करना होगा।
4. विगत 03 वर्षो में छ.ग. राज्य में संपादित महत्वपूर्ण कम से कम 03 व्ही.आई.पी. (राज्यपाल /मुख्यमंत्री) कार्यक्रम संपादित किये जाने जिसमें प्रति कार्य के लागत कम से कम रू. 30.00 लाख होने का अनुभव प्रमाण-पत्र जो कार्यपालन अभियंता/समकक्ष अथवा उच्च अधिकारी से हस्ताक्षरित हो ।

विस्तृत शर्ते किसी भी कार्य दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में देखी जा सकती है।

कार्यपालन अभियंता
लोक निर्माण विभाग संभाग कवर्धा

G-252600562/3

जैकेट के शेष

शांति के लिए ...

क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों ने सैकड़ों की तादाद में आंदोलनरत हैं तथा उनकी मांग है कि ऑपरेशन कगार पर फौरन रोक लगाई जाए। जारी पर्चे में युद्ध विराम की घोषणा करने व सरकार और माओवादी मिलकर वार्ता के जरिए समस्या का हल निकालने की बात कही गई है।

आतंकवाद को मिलेगा ....

को करारा जवाब देना हमारा राष्ट्रीय संकल्प है'। सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री ने सशस्त्र बलों की क्षमता में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया। एक सूत्र ने मोदी के हवाले से कहा, उन्हें (सशस्त्र बलों को) हमारी जवाबी कार्रवाई के तरीके, लक्ष्य और समय के बारे में फैसला लेने की पूरी अभियानगत छूट है। इस बैठक में प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान भी शामिल हुए। यह बैठक पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में भारत द्वारा उठाए जाने वाले संभावित कदमों पर विचार किए जाने के बीच हुई। पहलगाम के लोकप्रिय पर्यटन स्थल बैसरन में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले में कम से कम 26 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे। प्रधानमंत्री मोदी ने इस हमले में शामिल आतंकवादियों और उनके आकाओं का "पृथ्वी के अंतिम छोर तक" पीछा करने और उन्हें उनकी कल्पना से परे" कड़ी से कड़ी सजा देने का आह्वान किया है। पहलगाम हमला जम्मू-कश्मीर में नागरिकों पर पिछले कई वर्षों में हुआ सबसे घातक हमला है, जिसे लेकर पूरे देश में आक्रोश की लहर है और हमलावरों तथा उनके आकाओं के खिलाफ कठोर जवाबी कार्रवाई की मांग उठ रही है। प्रधानमंत्री की कठोर टिप्पणियों और राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर उनकी सरकार के कड़े रुख के कारण भारत की ओर से करारी जवाबी कार्रवाई की उम्मीदें बढ़ गई हैं। मोदी सरकार ने 2016 में उरी में सेना के जवानों पर आतंकवादी हमले के बाद पाकिस्तान के अंदर 'सर्जिकल स्ट्राइक' की थी। उसने पुलवामा में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के काफिले को निशाना बनाए जाने के बाद पाकिस्तान के बालाकोट में आतंकवादी ठिकानों पर हवाई हमला किया था। पहलगाम हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कदम उठाए हैं, जिनमें पड़ोसी देश के साथ सिंधु जल संधि को स्थगित करना भी शामिल है। सूत्रों ने बताया कि इससे पहले दिन में केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन ने एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की, जिसमें तीनों सेनाओं के प्रमुख और दो अन्य सुरक्षा संगठनों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए थे। बैठक के एजेंडे पर कोई आधिकारिक टिप्पणी नहीं आई है।

तीसरी मंजिल में लिफ्ट ....

एसडीआरएफ की टीम भी मौके पर पहुंची। मशक्कत के बाद युवक को बाहर निकाला गया। तुरंत उसे उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया, जहां से स्थिति नाजुक होने से उसे जिला अस्पताल दुर्ग रेफर किया गया। रास्ते में उसने दम तोड़ दिया। जानकारी के मुताबिक राजा तीसरे फ्लोर में था, जहां लिफ्ट का दरवाजा अपरिहार्य कारणों से खुला हुआ था, लेकिन लिफ्ट नीचे थी। राजा बांदे इसे देख नहीं पाया और सीधे लिफ्ट के भीतर घुस गया। इससे केज में गिर पड़ा। मृतक इतनी सुबह ऊपर क्यों चढ़ा, इसका खुलासा नहीं हो पाया है। बता दें कि पूर्व में भी यहां लिफ्ट में इसी तरह के हादसे में नारियल पानी बेचने वाले युवक की मौत हो गई थी। पुलिस ने बताया कि चौहान स्टेट के गार्ड ने बयान दिया है कि युवक चौहान स्टेट के किसी भी व्यवसायिक परिसर में काम नहीं करता है। वो अचानक ही सुबह ऊपर दिखा।

किसानों से धान ....

अप्रैल तक नीलामी के लिए ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी की गई। खाद्यमंत्री दयालदास बघेल की अध्यक्षता में हुई मंत्रिमंडलीय उप समिति की बैठक में मंगलवार को यह तय किया गया कि नीलामी में धान का बेस रेट 1900 रुपए से 2100 रुपए तक होगा। बैठक में कृषिमंत्री रामविचार नेताम, सहकारिता मंत्री केदार कश्यप, राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा, एसीएस खाद्य ऋचा शर्मा, मार्कफेड के एमडी रमेश शर्मा सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे। ऑनलाइन नीलामी प्रक्रिया में 33 जिलों में से 30 जिलों के संग्रहण केंद्रों में रखे धान की नीलामी की जा रही है। बेस रेट तय होने के बाद अब संग्रहण केंद्रों में रखे धान के लिए भरे गए ऑनलाइन टेंडर के आधार पर आगे की कार्रवाई शुरू होगी। मामले में यह बताया गया है कि बेस रेट से कम बोली आने पर फिर से टेंडर की प्रक्रिया तय की जाएगी।

35 लाख टन ....

जाएगी और ई-ऑक्शन के जरिए प्रक्रिया पूरी की जाएगी। इसके लिए 17 से 23 अप्रैल को टेंडर प्रक्रिया पूरी की गई। अब बेस रेट तय होने के बाद रेट ऑफर देखकर धान का सौदा होगा।

अब नहीं चलेगी प्राइवेट ....

पर एक लाख रुपये से लेकर 10 लाख रुपये तक का कठोर जुर्माना लगाया जाएगा। गुप्ता ने इस कदम को साहसिक व ऐतिहासिक करार देते हुए कहा कि भाजपा सरकार दिल्ली स्कूल शिक्षा पारदर्शिता निर्धारण एवं शुल्क विनियमन विधेयक, 2025 को पारित करने के लिए तत्काल दिल्ली विधानसभा का सत्र बुलाएगी। शिक्षा मंत्री आशीष सूद के साथ मौजूद मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले दिनों इस मुद्दे पर व्यापक रूप से चर्चा हुई और कुछ स्कूलों की गतिविधियों व फीस वृद्धि के नाम पर छात्रों के उत्पीड़न की शिकायतों के कारण अभिभावकों में घबराहट थी। उन्होंने कहा, दिल्ली की पिछली सरकारों ने फीस वृद्धि को रोकने के लिए कोई प्रावधान नहीं किया। निजी स्कूलों द्वारा फीस वृद्धि को रोकने में सरकार की मदद करने के लिए कोई दिशानिर्देश नहीं था। सूद ने कहा कि विधेयक में स्कूल, जिला व राज्य स्तर पर तीन स्तरीय समितियों के गठन का प्रस्ताव है। इससे स्कूल फीस निर्धारित करने की प्रक्रिया में बहुत जरूरी पारदर्शिता वसंरचना आएगी और अभिभावकों को अनियमित बढ़ोतरी से बचाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि पूरी प्रक्रिया समयबद्ध होगी, ताकि अभिभावकों को किसी तरह की परेशानी न हो।

चारधाम यात्रा, 22 ....

यात्रा के लिए श्रद्धालुओं में अपार उत्साह नजर आ रहा है और अब तक देश-विदेश के 22 लाख से अधिक श्रद्धालु अपना पंजीकरण करवा चुके हैं। उत्तरकाशी जिले में देवी गंगा की मूर्ति को मंगलवार दोपहर 12 बजे उनके शीतकालीन प्रवास स्थल मुखबा गांव से गंगोत्री धाम के लिए डोली में रवाना किया गया। पारंपरिक वाद्य यंत्रों ढोल दमाउ, सेना के बैंड की भक्तिमय धुनों और मां गंगा के जयकारों के बीच स्थानीय ग्रामीणों ने देवी की मूर्ति को बेटी की तरह नम आंखों के साथ गंगोत्री के लिए विदा किया। तीर्थ पुरोहित राजेश सेमवाल ने बताया कि भैरव घाटी स्थित भैरव मंदिर में रात्रि विश्राम करने के बाद बुधवा सुबह डोली गंगोत्री धाम पहुंचेगी। उन्होंने बताया कि पूर्वह्ना साढ़े 10 बजे मंदिर के कपाट खोले जाएंगे, जहां अगले छह माह तक श्रद्धालु देवी गंगा के दर्शन कर सकेंगे। सोमवाल ने बताया कि देवी गंगा की डोली कुल 25 किलोमीटर पैदल यात्रा कर धाम पहुंचती है। यमुनोत्री मंदिर समिति के प्रवक्ता पुरुषोत्तम उनियाल ने बताया कि देवी यमनु की डोली अपने शीतकालीन प्रवास स्थल खुशीमठ से बुधवार सुबह यमुनोत्री धाम के लिए रवाना होगी और विधिवत पूजा अर्चना के बाद 11 बजकर 55 मिनट पर मंदिर के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे। इस बीच, उत्तराखंड के पुलिस महानिदेशक दीपम सेठ ने ऋषिकेश पहुंचकर चारधाम यात्रा की सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। सेठ ने ऋषिकेश में मीडिया से बातचीत में बताया कि कश्मीर के पहलगाम की आतंकी घटना के मद्देनजर चारधाम यात्रा में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। उन्होंने बताया, हम यात्रियों को सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेंगे।

पेज एक के शेष

अक्षय तृतीया 100 सालों...

नारायण राजयोग बन रहे हैं। यह दुर्लभ संयोग आकस्मिक धन लाभ और तरक्की के योग बना रहे हैं। अक्षय तृतीय पर मां लक्ष्मी के पूजन का विधान है। पंचांग अनुसार इस मुहूर्त में पूजन, खरीदारी व कोई कोई भी शुभ कार्य करना उत्तम रहेगा। अक्षय तृतीया को आखा तीज के नाम से भी जाना जाता है। अक्षय शब्द का अर्थ कभी कम न होने वाला है। इसलिए इस दिन कोई भी जप, यज्ञ, पितृ-तर्पण, दान-पुण्य करने का लाभ कभी कम नहीं होता तथा व्यक्ति को सदैव प्राप्त होता रहता है। चारों युगों में त्रेता युग का आरंभ भी इसी तिथि से हुआ था। ब्रह्मा पुराण और स्कंद पुराण में अक्षय तृतीया को धन, सौभाग्य और आत्मविश्वास में वृद्धि करने वाला दिन बताया गया है। कल ग्रहों की शुभ स्थिति बनने से हर तरह की खरीदारी और नई शुरुआत लंबे समय तक फायदा देने वाली रहेगी। स्कंद पुराण के अनुसार, अक्षय तृतीया पर खरीदा गया सोना समृद्धि देने वाला होता है।

राज्य में 5000 से...

और दो टीचर ही हैं। वहीं, अरबन एरिया में 7305 शिक्षक जरूरत से ज्यादा हैं। वहीं, 297 स्कूल ऐसे हैं, जहां कोई टीचर नहीं है। इन स्कूलों में फिलहाल आसपास के स्कूलों के टीचरों को अटैच किया गया है। करीब 4000 से ज्यादा स्कूलों को मर्ज किया जा सकता है। रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, रायगढ़ में सबसे अतिशेष शिक्षक हैं। अतिशेष शिक्षकों के मामले प्रायमरी स्कूलों में बस्तर संभाग के जिला मुख्यालयों में सबसे अधिक सरप्लस शिक्षक हैं। छत्तीसगढ़ सरकार ने शिक्षकों की कमी की समस्या को दूर करने स्कूलों और शिक्षकों का युक्तियुक्तकरण करने जा रही है।

राशिफल

मेष – किसी अज्ञात भय से परेशान हो सकते हैं। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। माता के सानिध्य मिलेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

वृष – व्यर्थ के क्रोध से बचें। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। किसी मित्र से वस्त्र उपहार में प्राप्त हो सकते हैं। नौकरी में कार्यक्षेत्र में वृद्धि हो सकती है।

मिथुन – आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। वाणी में मधुरता रहेगी। कार्यक्षेत्र में कठिनाइयां आ सकती है। परिश्रम भी अधिक रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कर्क – आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मन प्रसन्न रहेगा, परन्तु बातचीत में सन्तुलित रहें। नौकरी में परिवर्तन के योग बन रहे हैं। तरक्की भी हो सकती है। आय बढ़ेगी।

सिंह – आत्मविश्वास से लबरेज रहेंगे, परन्तु धैर्यशीलता में कमी आ सकती है। किसी मित्र के सहयोग से नौकरी के अवसर मिल सकते हैं। सेहत का ध्यान रखें।

कन्या – मन में उतार-चढ़ाव रहेंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आय में कमी एवं खर्च अधिक की स्थिति हो सकती है। कार्यस्थल पर व्यर्थ के वाद-विवाद से बचें।

तुला – आत्मविश्वास में कमी रहेगी। बातचीत में सन्तुलन बनाये रखें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भाग-दौड़ अधिक रहेगी।

वृश्चिक – आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। तरक्की के अवसर मिलेंगे। आय में वृद्धि होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा।

धनु – आत्मविश्वास से लबरेज रहेगें। परन्तु अति उत्साही होने से बचें। संयत रहें। माता का साथ मिलेगा। आय भी बढ़ेगी। संतान को स्वास्थ्य विकार हो सकते हैं।

मकर – माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। जीवनसाथी का साथ मिलेगा। बौद्धिक कार्यों से आय में वृद्धि के साधन बन सकते हैं। तरक्की के योग बन रहे हैं।

कुंभ – अपनी भावनाओं को वश में रखें। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परन्तु कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। भाइयों का सहयोग रहेगा।

मीन – शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। तरक्की का मार्ग प्रशस्त होगा।

चीफ जस्टिस ने अधिवक्ता को झिड़का कहा- मत दीजिए राजनीतिक भाषण

कॉलेजियम सिस्टम के खिलाफ याचिका सूचीबद्ध करने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने अधिवक्ता मैथ्यूज नेडुमपारा को कड़ी फटकार लगाई और कोर्ट कार्यवाही के दौरान राजनीतिक बयान देने से बचने की सलाह दी। यह टिप्पणी तब आई जब नेडुमपारा ने न्यायिक नियुक्तियों के लिए कॉलेजियम प्रणाली को चुनौती देने वाली अपनी याचिका को सूचीबद्ध किए जाने का अनुरोध किया। सीजेआई ने कहा, यहां राजनीतिक भाषण मत दीजिए। कॉलेजियम सिस्टम के खिलाफ याचिका सूचीबद्ध करने की मांग करते हुए अधिवक्ता मैथ्यूज नेडुमपारा ने 2022 में दायर अपनी रिट याचिका का उल्लेख करते हुए कहा, मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ ने पांच बार कहा था (कि सूचीबद्ध करें). एनजेएसी समय की मांग है, यह आना ही चाहिए। उपराष्ट्रपति ने भी इसे कहा है और देश की जनता इसकी मांग कर रही है। माननीय न्यायाधीश ने इसे लिस्ट करने का वादा किया है। इस पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना ने कहा, "मेरे मुंह में शब्द न डालिए, बस। कृपया कोर्ट में राजनीतिक भाषण न दें, बस।"

कार्यालय खण्ड चिकित्सा अधिकारी
स्व. श्री मोहनलाल चौधरी जी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरायपाली विकासखण्ड- सरायपाली, जिला- महासमुन्द (छ.ग.)
Phone-07725-227992
E-mail:-bmochcsaraipali@rediffmail.com,

क्र/अ.प्र./निविदा/2025/555 सरायपाली, दिनांक 27/04/2025

:: निविदा सूचना ::

इस कार्यालय के अधीन विकासखण्ड सरायपाली हेतुं वाहन किराया हेतु इच्छुक निविदादाताओं से मुहरबंद निविदा आमंत्रित किया जाना है। निविदा प्रपत्र अधोहस्ताक्षरकर्ता कार्यालय से रू. 1000.00 (एक हजार रूपये) मात्र नगद भुगतान कर कार्यालयीन दिवस व कार्यालयीन समय
में प्राप्त किया जा सकता है।

आवेदन बिक्री की अंतिम तिथि - 20/05/25 अपरान्ह 5.00 बजे तक।
निविदा जमा करने की अंतिम तिथि - 21/05/25 अपरान्ह 3.00 बजे तक।
निविदा खोलने की तिथि 21/05/25 अपरान्ह 4.00 बजे।
स्थानः- कार्यालय खण्ड चिकित्सा अधिकारी, स्व श्री मोहनलाल चौधरी जी, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरायपाली जिला महासमुन्द (छ.ग.)

खण्ड चिकित्सा अधिकारी
स्व. श्री मोहनलाल चौधरी जी
सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरायपाली
जिला - महासमुंद, (छ.ग.)

G-252600545/1

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
ई-निविदा सूचना
विभिन्न अभियांत्रिकी कार्य

भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उन की ओर से वरिष्ठ मंडल अभियंता (समन्वय), दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर द्वारा निम्नलिखित कार्यों के निष्पादन हेतु ई-निविदा आमंत्रित की जाती है:

1. निविदा क्र.: ई/01/एनजीपी/2025-2026 **कार्य का नाम:** (1) बोरतलाव में ट्रैक मशीन साइडिंग में सुविधाओं का प्रावधान। (2) डोंगरगढ़ में कम्युनिटी हॉल में सुधार। **अनुमानित निविदा मूल्य:** ₹ 90,81,929/- **बयाना राशि:** ₹ 1,81,600/-

2. निविदा क्र.: ई/02/एनजीपी/2025-2026 **कार्य का नाम:** (1) ADEN, गोंदिया के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत नियंत्रण LC क्र. 499 और अन्य RUB पर साइड ड्रेन, रोड सरफेसिंग आदि उपलब्ध कर LHS/RUB का सुधार। (2) ADEN, गोंदिया के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत LC क्र. 497 पर कवर शेड, साइड नालियां आदि प्रदान करके LHS/RUB का सुधार। **अनुमानित निविदा मूल्य:** ₹ 4,49,99,256/- **बयाना राशि:** ₹ 3,75,000/-

3. निविदा क्र.: ई/03/एनजीपी/2025-2026 **कार्य का नाम:** नागपुर मंडल के डोंगरगढ़ में गुड्स शेड का उन्नयन / आधुनिकीकरण। **अनुमानित निविदा मूल्य:** ₹ 3,69,01,194/- **बयाना राशि:** ₹ 3,34,500/-

4. निविदा क्र.: ई/04/एनजीपी/2025-2026 **कार्य का नाम:** मंदिर ट्रस्ट डोंगरगढ़ (DGG) के संबंध में कि.मी. 928/35-37 के बीच पैदल यात्री सबवे आकार (3.50 x 3.0 मीटर) का निर्माण। **अनुमानित निविदा मूल्य:** ₹ 2,21,13,337/- **बयाना राशि:** ₹ 2,60,600/-

5. निविदा क्र.: ई/05/एनजीपी/2025-2026 **कार्य का नाम:** ADEN, डोंगरगढ़ (DGG) के अधिकार क्षेत्र में तीसरे लाइन सेक्शन में PJB से BTL के बीच कि.मी. 935.533 (यार्ड को छोड़कर) से कि.मी. 944.438 (यार्ड को छोड़कर) तक बचा हुआ सिविल कार्य।। **अनुमानित निविदा मूल्य:** ₹ 1,97,77,233/- **बयाना राशि:** ₹ 2,48,900/-

उपरोक्त निविदाओं के लिए बोलीदाता अपनी मूल/संशोधित बोलियां दि. **16.05.2025** के **15:00** बजे तक जमा कर सकते है। इन निविदाओं के अंतर्गत मैन्युअल ऑफर्स की अनुमति नहीं है और मैन्युअल ऑफर्स को अस्वीकार कर दिया जाएगा। अन्य विवरण वेब-साइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है।

वरिष्ठ मंडल अभियंता (पूर्व),
दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर
PC/04-16

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

कार्यालय कलेक्टर,(आदिवासी विकास शाखा), जिला- उत्तर बस्तर कांकेर

एन.आइ.टी.क्रमांक/01/आ.वि./निर्माण/2025-26/354 कांकेर, दिनांक 28/04/2025

ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना
(प्रथम सूचना)

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से निम्नांकित कार्य के लिए कार्यालय कलेक्टर, (सहायक आयुक्त, आदिवासी विकास शाखा) जिला उत्तर बस्तर कांकेर के कार्यालय में नीचे दर्शाए गए विवरण के अनुसार एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत पंजीकृत "D" श्रेणी एवं इसमें ऊपर श्रेणी के ठेकेदारों से प्रमुख अभियंता, लोक निर्माण विभाग छत्तीसगढ़ शासन रायपुर द्वारा भवन दर अनुसूची जो 01.01.2015 से प्रभावशील एवं अद्यतन संशोधन सहित एस.ओ. आर. पद्धति के तहत ई-टेंडरिंग के माध्यम से प्रतिशत दर पर निविदा आमंत्रित की जाती है कार्य पूर्ण करने की अवधि 03 माह (वर्षा काल सहित) होगी ।

1. ई निविदा प्रारंभ तिथि - 28.04.2025
2. ऑनलाइन निविदा जमा करने की अंतिम तिथि - 14.05.2025
3. निविदा प्रपत्र की चालान एवं अमानत राशि (एफ.डी.आर.) प्रस्तुत करने हेतु अंतिम तिथि (स्पीड पोस्ट से) - 19.05.2025
4. निविदा खोलने की तिथि - 20.05.2025

क्र.	ऑनलाईन निविदा क्रमांक	कार्य का नाम / स्थान का नाम	निविदा की राशि (लाख में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू. मे)	अमानत राशि (लाख में)
1	2	3	4	5	6
1	167463	एकलब्य आदर्श आवासीय विद्यालय नरहरपुर, जिला कांकेर में ऑल वेदर एप्रोच रोड़ निर्माण कार्य	72.00	3000.00	0.54

उपरोक्त निर्माण कार्य की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी छत्तीसगढ़ शासन की ई-प्रोक्योरमेन्ट वेबसाईट - https://eproc.cgstate.gov.in पर में देखे जा सकते है ।

सहायक आयुक्त,
आदिवासी विकास, कांकेर

G-252600554/1

कार्यालय अधीक्षण अभियंता, लोक निर्माण विभाग, रायपुर मण्डल क्रमांक 1 (छत्तीसगढ़)

निविदा सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है:-

एन.आई.टी. क्र./ सिस्टम टेन्डर नं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत रू. (लाख में)
1	2	3
27/167229	WHITE WASHING, COLOUR WASHING, DISTEMPERING & WORK OF RES. PAINTING AND NON RESIDENTIAL BUILDING AT FOREST COLONY, MANTRI BANGLOW AND COLLECTOR BANGLOWS, UNDER CONSTRUCTION SUB DIVISION-2, RAIPUR	रू. 25.00 लाख
28/167230	S.R./M.O.W./ DEPOSITE WORK AS PER SANCTIONED TIME TO TIME FOR RES. & NON RES.BUILDING, AT JAIL SECTION, UNDER P. W.D. CONSTRUCTION SUB. DIVISION -2 RAIPUR (C.G.)	रू. 30.00 लाख
29/167232	S.R./M.O.W./ DEPOSITE WORK AS PER SANCTIONED TIME TO TIME FOR RES. & NON RES.BUILDING, AT KUTCHERI SECTION, UNDER P. W.D.CONSTRUCTION SUB. DIVISION -2 RAIPUR (C.G.)	रू. 30.00 लाख
30/167233	S.R./M.O.W./ DEPOSITE WORK AS PER SANCTIONED TIME TO TIME FOR BUILDINGS UNDER CENTRAL STORE SUB DIVISION P.W.D. RAIPUR (C.G.)	रू. 15.00 लाख
31/167234	WHITE WASHING, COLOUR WASHING, DISTEMPERING & AND RES. OF NON RESIDENTIAL PAINTING WORK BUILDING AT MEKAHARA AND CONSUMER FORUM, B.Sc NURSING AND MAHILA JAIL, CENTRAL JAIL, KUTCHERI SECTION, UNDER CONSTRUCTION SUB DIVISION - 2, RAIPUR	रू. 30.00 लाख
33/167236	S.R./M.O.W./ DEPOSITE WORK AS PER SANCTIONED TIME TO TIME FOR BUILDING AT ITI SECTION, UNDER_P.W.D. CONSTRUCTION SUB. DIVISION -2 RAIPUR (C.G.)	रू. 15.00 लाख
235/167518	Road Furniture Work On Internal Roads four way in Changorabhatha Ward No 67 & Tikrapara/Math - Para/Chhatisgarh - Nagar At Raipur Distt. Raipur.	रू. 37.06 लाख

एन.आई.टी. क्र.27 सिस्टम टेन्डर नं. 167229, एन.आई.टी. क्र. 28 सिस्टम टेन्डर नं. 167230, एन. आई.टी. क्र.29 सिस्टम टेन्डर नं. 167232, एन.आई.टी. क्र.30 सिस्टम टेन्डर नं. 167233, एन.आई.टी. क्र.31 सिस्टम टेन्डर नं. 167234 एवं एन.आई.टी. क्र. 33 सिस्टम टेन्डर नं. 167234 निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 18.05.2025 समय सायं 5:30 बजे तक एवं एन.आई.टी. क्र. 235 सिस्टम टेन्डर नं. 167518 निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 13.05.2025 समय सायं 5:30 बजे तक

उपरोक्त निर्माण कार्यो की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी https://eproc.cgstate.gov.in पर देखी जा सकती है एवं डाउनलोड की जा सकती है।

अधीक्षण अभियंता.
लोक निर्माण विभागं,
रायपुर मंडल क्र. - 1, रायपुर (छ.ग.)

G-252600565/6

कार्यालय मुख्य अभियंता, लो.नि.वि. राष्ट्रीय राजमार्ग परिक्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

दिनांक 23.04.2025

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन (Online) निविदा आमंत्रित की जाती है :-

क्र.	नि.आ.सू.क्र. दिनांक	सिस्टम आईडी क्र.	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत
1	20/CE/NH /TC/44-09/2025 (1ST Call)	2025 MoRTH_857575_1	Distressed maintenance / repair of BT distress regarding repairing of potholes, rutting of approaches including viaduct road at all 4 Grade Separator between Km. 281.00 to Km.307.600 (Km.286.400 Kumhari, Km.299.00 Transport Nagar, Km.302.00 Power House, Km.304.00 Chandra-Maurya Chowk to Km.305.00 Supela of NH 53 (Old NH-06) on Raipur Durg 4- lane in the State of Chhattisgarh at the risk and cost of the EPC Contractor.	Rs.284.27 Lakhs (i/c 18% GST)

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 07.05.2025 समय शाम 17.30 बजे तक।

2. उपरोक्त निर्माण कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (MORT&H'S) के ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल **https://eprocure.gov.in/eprocure/app** से डाऊनलोड की जा सकती है।

मुख्य अभियंता
लो.नि.वि. राष्ट्रीय राजमार्ग
परिक्षेत्र, रायपुर (छ.ग.)

G-252600559/1

Home First Finance Company India Limited
CIN: L65990MH2010PLC240703 Website: homefirstindia.com
Phone No.: 180030008425 Email ID: loanfirst@homefirstindia.com

धारा 13(2) के तहत मांग सूचना

आप, नीचे उल्लिखित ऋणधारकों ने अनुसूची में उल्लिखित संपत्ति को बंधक रखकर ऋण लिया है और आप, नीचे उल्लिखित ऋणधारक ऋण समझौते के लिए ऋणधारक/सह-ऋणधारक जमानतदार के रूप में खड़े हैं। आपके द्वारा किए गए चूक के परिणामस्वरूप, आपके ऋण खाते को वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन और प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (संक्षेप में सरफेसी अधिनियम) के प्रावधानों के तहत 04-04-2025 को गैर-निष्पादित परिसंपत्ति के रूप में वर्गीकृत किया गया है। हम, होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड ने आपके द्वारा दिए गए पते पर सरफेसी अधिनियम की धारा 13(13) के साथ धारा 13(2) के तहत मांग नोटिस जारी किया है। उक्त नोटिस 28-04-2025 को जारी किए गए हैं और इन नोटिसों में कहा गया है कि आपने आपको स्वीकृत विभिन्न ऋणों के भुगतान में चूक की है। इसलिए, वर्तमान प्रकाशन सरफेसी अधिनियम की धारा 13(2) के प्रावधान और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3(1) के प्रावधान के अनुसार नोटिस देने के

क्र. सं.	खाते, ऋणधारक (ओं) व जमानतदार (ओं) का नाम और पता	लागू की जाने वाली सुरक्षा का विवरण	मांग सूचना की तिथि तक कुल बकाया राशि तथा अतिरिक्त ब्याज और अन्य व्यय (रुपये में)
1.	अनिता शर्मा, शिवप्रसाद शर्मा, लक्ष्मी देवी	1448/B-91, प्रथम तल, छ.ग. हाउसिंग बोर्ड बोरियाकला, रायपुर, 492001 चौहद्दी:- उत्तर- कॉरिडोर, दक्षिण- ब्लॉक नं. बी-92, पश्चिम- फ्लेट नं. 1447, पूर्व- खुला क्षेत्र	3,60,599

आपसे अनुरोध है कि आप इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों के भीतर होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड को उपरोक्त राशि ब्याज और लागत के साथ चुकाएं, अन्यथा होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड ऋणधारकों, बंधककर्ताओं और जमानतदारों की सुरक्षित संपत्तियों को अपने कब्जे में लेने सहित सभी या किसी एक या अधिक सुरक्षित संपत्तियों के खिलाफ उक्त अधिनियम के प्रावधानों के तहत आवश्यक कार्रवाई करेगी। उक्त अधिनियम के तहत होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड को उपलब्ध शक्तियों में शामिल हैं-(1) ऋणधारकों/जमानतदारों की सुरक्षित संपत्तियों को कब्जे में लेने की शक्ति जिसमें सुरक्षित संपत्तियों को जारी करने के लिए पट्टे, बिक्री के असाइनमेंट के माध्यम से हस्तांतरण के अधिकार शामिल हैं (2) पट्टे, असाइनमेंट या बिक्री के माध्यम से हस्तांतरण के अधिकारों सहित सुरक्षित संपत्तियों का प्रबंधन अपने हाथ में लेना और सुरक्षित संपत्तियों को प्राप्त करना।

उक्त अधिनियम की धारा 13(13) के प्रावधानों के अनुसार, आपको होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड की पूर्व सहमति के बिना, बिक्री, पट्टे या अन्यथा (आपके व्यवसाय के सामान्य क्रम के अलावा) किसी भी सुरक्षित संपति को होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड को हस्तांतरित करने से प्रतिबंधित किया जाता है।

स्थान: रायपुर
दिनांक: 30-04-2025

द्वारा हस्ताक्षरित: प्राधिकृत अधिकारी
होम फर्स्ट फाइनेंस कंपनी इंडिया लिमिटेड

कार्यालय नगर पालिका परिषद गोबरा, नवापारा जिला - रायपुर (छ.ग.)
दूरभाष क्रं. 07701-233830 ई.मेलः-cmognawapara@gmail.com

क्रमांक / 443 / लो.नि.वि./ न.पा.प. / 2025 गोबरा नवापारा, दिनांक- 29/04/2025

मैनुअल पद्धति से द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना

नगर पालिका परिषद गोबरा नवापारा क्षेत्रांतर्गत माननीय प्रभारी मंत्री महोदय के द्वारा विधानसभा क्षेत्र अभनपुर (प्रभारी निधि) मद से कुल 09 कार्यों की स्वीकृति प्रदान की गई है, उपरोक्त कार्य CGPWD Road and Building SOR 2015 & Electrical SOR 01.06.2020 से किया जाना है। इसके लिए लोक निर्माण विभाग में एकीकृत पंजीयन अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से सील बंद लिफाफे में रजिस्ट्री / स्पीड पोस्ट (डाक) के माध्यम से मैनुअल पद्धति से निविदा से दिनांक 14.05.2025 आमंत्रित की जाती है। विवरण निम्नानुसार हैः-

1. निविदा प्रपत्र हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि - 05.05.2025 (सायं 5.00 बजे तक)
2. निविदा प्रपत्र प्रदाय करने की अंतिम तिथि - 09.05.2025 (सायं 5.00 बजे तक)
3. निविदा प्रपत्र जमा करने की अंतिम तिथि - 14.05.2025 (सायं 5.00 बजे तक)
4. निविदा खोलने की तिथि - 15.05.2025 (सुबह 11.00 बजे)

क्र.	कार्य का नाम	अनु. ला. राशि रू. (लाख में)
1	2	3
1	वार्ड क्रं. 01 में शिव मंदिर के पास (गोबरा बस्ती) रंगमंच निर्माण कार्य	5.00
2	वार्ड क्रं. 03 में सी.सी. रोड निर्माण कार्य	2.00
3	वार्ड क्रं. 06 के विभिन्न गलियों में सी.सी. रोड निर्माण कार्य (कुल 02 कार्य)	5.00
4	वार्ड क्रं. 12 में सी.सी. रोड निर्माण कार्य	4.94
5	वार्ड क्रं. 13 में सी.सी. रोड निर्माण कार्य	4.94
6	वार्ड क्रं. 14 में सी.सी. रोड निर्माण कार्य	4.94
7	वार्ड क्रं. 15 के विभिन्न गलियों में सी.सी. रोड निर्माण कार्य (कुल 03 कार्य)	5.00
8	वार्ड क्रं. 19 में गोवर्धन साहू घर से खूबलाल साहू घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य	4.94
9	वार्ड क्रं. 20 के विभिन्न गलियों में सी.सी. रोड निर्माण कार्य (कुल 05 कार्य)	5.00

निविदा प्रपत्र निकाय से प्रदाय किया जायेगा। उपरोक्त निर्माण कार्यो की विस्तृत जानकारी, कार्यालय अवधि एवं समय में लोक निर्माण शाखा से अथवा विभागीय वेबसाईट www.uad.cg.gov.in से देखी जा सकती है।

मुख्य नगर पालिका अधिकारी
नगर पालिका परिषद गोबरा नवापारा

शब्द पहेली - 5852

बाएँ से दाए-
1. जानकारी-4
4. मांसाहार का उलट-4
8. 'जुम्मा चुम्मा दे दे' गीत वाली फिल्म-2
9. कायाकल्प-5
10. पिता के छोटे भाई-2
13. कहानी लिखने वाला-5
15. नाम रखना-5
17. बेवक्त, अकाल-5
20. प्रयास, कोशिश-5
23. टोंटी, नलका-2
24. कामदेव, पुष्कर-2,3
25. डर, भय-4
28. शोर-शराबा-4
29. बेवफा, व्यभिचारी-4

ऊपर से नीचे
2. बिंदु, बिंदी, शून्य-2
3. गोलाकार-3
4. सम्मिलित होना-3,2
5. घाटा, नुकसान-2
6. मूर्ख, बेवकूफ-4
7. बिना कारण, बेवजह-4
11. राजा की पत्नी-2
12. वहम, संदेह-2
14. दुर्घटना-3
16. खाना बनाने की जगह, किचन-3
17. एकाएक, सहसा-4
18. अलमस्त-2
19. कमल ककड़ी, कमल डंडी-3,2
20. आरामदायी-5
21. सम्मान-2
22. भलमानसता-4
26. सद्, अच्छा-2
27. मृत्यु, प्रारब्ध, न्याय निर्णय-2

शब्द पहेली -5851 का हल

सूडोकू नवताल - 5862

मध्यम

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकू नवताल - 5861 का हल

लोक साहित्य
विनोद कुमार वर्मा

छत्तीसगढ़ी भाषा के समृद्धि में डा. शेष के भूमिका

डा. शंकर शेष ने हिन्दी साहित्य के साथ ही साथ छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छत्तीसगढ़ी शताब्दियों से एक लोक भाषा रही है और उसमें साहित्य सृजन की गौरवशाली परम्परा भी बनी हुई है। डा. शंकर शेष ने जहां भारतीय आर्य भाषाओं में छत्तीसगढ़ी का स्थान शीर्षक से पुस्तक का प्रणयन किया, वहीं उनकी हस्तलिखित पांडुलिपि छत्तीसगढ़ी का

भाषाशास्त्रीय अध्ययन का प्रकाशन वर्ष 2010 में छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी ने किया। ग्रियर्सन और धमतरी के व्याकरणाचार्य काव्योपाध्याय हीरालाल तथा बिलासपुर के व्याकरणाचार्य जगन्नाथ प्रसाद भानू की परंपरा को गतिशील बनाने वालों में डा. शंकर शेष का नाम श्रद्धा से लिया जाता है। छत्तीसगढ़ी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में अनेक मनीषियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उनमें से एक नाम डा. शंकर शेष है। आपका मानना था कि भाषा कोई भी हो, वह अपनी जमीन से उपजती है और पनपती है। हर भाषा समय के साथ अपना रंग रूप बदलती है। विश्व की अनेक जनजातीय बोलियां अत्यंत तेजी से विलुप्त हो रही है, उसका कारण यह है कि उनमें समय के अनुरूप बदलाव नहीं आया। वस्तुतः इसका परिणाम यह है कि आज छत्तीसगढ़ी भाषा संक्रमण के दौर से गुजर रही है, खासकर छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य में अराजकता की स्थिति है, ऐसे ऐसे नए शब्द बनाए और लिखे जा रहे हैं जो बोली ही नहीं जा नहीं जाती। वास्तव में जो बोली जाती है वही भाषा है।

ऐतिहासिक
ध्रुव सिंह ठाकुर ' कोटमिहां '

छत्तीसगढ़ में राणा प्रताप के वंशज

आज ले चार सौ साल पहिली दिल्ली के मुगल सम्राट अकबर के शासन रीहिस। वोह सेना भेज के छोटे राजा मन ल गुलाम बना ले। अकबर ह अपन सेनापति मान सिंह ल राणा प्रताप ल गुलामी स्वीकार करे ल कीहिस। राणा प्रताप कोनो भी शर्त में गुलामी स्वीकार नी करिस। ओहि बीच विधि के विधान ले बड़ तकलीफ झेलिस राणा

प्रताप हा। ओहि बीच मेवाड़ के बेपारी भामाशाह ह अकबर ले लड़े बर राणा प्रताप के पूरा सहायता करीस। राणा प्रताप अपन पांच हजार सेना ले के चित्तौड़ में हमला कर दिस। अकबर डहन ले मानसिंह सेना ले के लड़ई करिस। बिक्कट लड़े के बाद महाराणा प्रताप हा जीतत चित्तौड़ के किला ल छोड़के सब किला ल जीत लिस। ए लड़ई में महाराणा प्रताप के घोड़ा जेकर नाव चेतक रीहिस, वोकर भूमिका महत्वपूर्ण रीहिस। अपंग होय के बाद घालव अपन आखिरी सांस तक राजा ल लड़ई में सहयोग करे में कोनो कमी नी करिस। समे बदलीस, महाराणा प्रताप के वंशज मन देश भर में बगरगे। एकर संग कतको मन छत्तीसगढ़ में आके बसगे। इहा एमन ल राजपूत क्षत्रिय कहे जाथे। एमन अपन क्षत्र धरम के पालन करत कमजोर, असहाय मन ल नियाव देवाथे। छत्तीसगढ़ में कई जगा राणा प्रताप के मूरती लगे हे। बिलासपुर अऊ रायपुर समेत कई जगा में राणा प्रताप के जयंती के दिन बड़का जुलूस निकाल के वोकर वीरता, शौर्यता के सुरता करे जाथे। छत्तीसगढ़ के राजपूत क्षत्रिय मन अपन पुरखा के क्षत्र धरम ल अभी तक निभावत हे।

पुस्तक समीक्षा

ठग अऊ जग

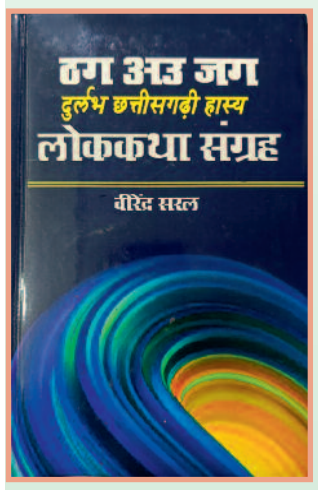

कृति के नाव
ठग अऊ जग

लेखक
वीरेन्द्र सरल

प्रकाशक
कल्पना प्रकाशन नई दिल्ली

पुस्तक समीक्षा
डा परदेशी राम वर्मा

मूल्य
चार सौ पचास रुपए

छत्तीसगढ़ी लोककथाओं के संग्रह का प्रकाशन हुआ। इसमें छत्तीसगढ़ के प्रतिभाशाली रचनाकारों के द्वारा शब्दांकित लोक कथाएं हैं। इसके संपादन का दायित्व मुझे मिला। उस दायित्व को पूरा करने के लिए छत्तीसगढ़ी लोककथाओं के विराट संसार को झांककर फिर फिर देखने का अवसर मिला। मेरे द्वारा संपादित छत्तीसगढ़ की लोककथाएं देश के अन्य प्रान्तों की लोककथाओं की सिरीज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस किताब की विशेषता है कि इसमें दुर्लभ छत्तीसगढ़ी हास्य लोककथाएं बत्तीस लोककथाएं हैं।छत्तीसगढ़ी लोककथाओं के विराट संसार से वीरेंद्र सरल ने हास्य कथाओं को अपने ढंग से नए अंदाज में लिखा है। पीढ़ियों से लोककथाएं श्रुति परंपरा से जीवित रहीं। आज वही दादा दादी नानी नाना से सुनी हुई लोककथाएं कल्पनाशील लेखकों के द्वारा शब्दांकित होकर संग्रह के रुप में नई पीढ़ी तक पहुंच रही है। मनोरंजन के अपार विपुल साधनों के इस युग में भी लोककथाएं लिखी और पढ़ी सुनी सुनाई जा रही है।

छत्तीसगढ़ अंचल के सरगुजा तहसील अंबिकापुर अंतर्गत आने वाले गांव पुहपुटरा, लखनपुर, केनापार आदि में लोक एवं आदिवासी जातियों द्वारा अभ्यास की जाने वाली भित्तिचित्र ऐसी लोक कला है जो गांव की महिलाओं द्वारा कच्ची मिट्टी से बनी झोपड़ियों की दीवारों पर गोबर, चॉक मिट्टी से बनाई जाती है। इस क्षेत्र में फसल कटाई, ऋतु परिवर्तन, धार्मिक अवसरों पर अपने इष्ट देव के प्रति आस्था और मान्यताओं के अनुसार दीवारों की कलाकृतियों में निरन्तर नवीन कलाकृतियां देखने को मिलती हैं।

हर वर्ष बनाए जाते हैं सरगुजा
अंचल में भित्तिचित्र

मनेंद्रगढ़, चिरमिरी, भरतपुर के कई ग्रामों में भी ऐसी ही नवीन कलाकृतियां देखने को मिलती हैं। कहीं रक्षाबंधन में भाई की कलाई में राखी बांधती बहन दिखाई देती हैं तो कहीं वन्य जीव दिखाई देते हैं। दिवाली के समय जनजातियों द्वारा भित्ति चित्रों की सजीव कलाकृतियां बनाई जाती हैं। ऐसे समय कहीं भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास काल के बाद अपने राज्य वापसी का सुखद एवं उल्लासपूर्ण स्मृतियों को भी कलाकृतियों से सजाई जाता है कहीं जलते दीप, कहीं धान की बालियों की कलाकृतियां बनाई जाती हैं। इन कलाकृतियों के पीछे मूल कारण में घर की सुख समृद्धि की कामना होती है। दीवारों पर बनाई इन कलाकृतियों में पास पड़ोस का अति परिचित संसार अपने सामाजिक विश्वासों की ओर मूल संस्कारों की अकुंठित, सरल और आडम्बरहीन अभिव्यक्ति है। सुदूर आदिवासीय क्षेत्रों में जहां कि सजावट आदि के साधन अपर्याप्त होते थे, लोग वहां प्रचलित विभिन्न त्योहारों व धार्मिक अवसरों के समय अपने घरों की सज्जा हेतु दीवारों में कच्ची मिट्टी द्वारा पेड़ पौधों , पशु पक्षियों आदि की आकृतियां बना कर व उनमें बहुत ही मनोरम रंगों से रंग कर अपने घरों को आज भी सजाते हैं।

ग्रामीण भित्तिचित्र परंपरागत प्राचीन कलाओं का जीवंत दस्तावेज है। दीवारों पर बने इन चित्रों का संदेश बहुत व्यापक होता है। भित्ति चित्रों की कुछ झलक प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से भी मिलती जुलती है। आदिवासी समुदायों में इस चित्र को काफी पवित्र माना जाता है, इसमें उनकी आस्था और मान्यता जुड़ी होती है इन्हीं भित्तिचित्रों में उनकी पारंपरिक जीवन शैली और लोक परंपरा का स्वरूप उभर कर सामने आता है।

परंपरा : सतीश उपाध्याय

धार्मिकः कमल नारायण

देवसील में आज भी रामायणकालीन प्रमाण देखे जा सकते हैं

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम के दंडकारण्य और दक्षिण कोसल से संबंधित अनेक प्रमाण उपलब्ध हैं जिनके जनश्रुति के अनुसार सीतामढ़ी -कनवाई आज देवसील के नाम से विख्यात है। इसी क्षेत्र में मनेंद्रगढ़, चिरमिरी, भरतपुर जिले में हरचौका धाम के छतौड़ा आश्रम में कुछ समय बिताए और दक्षिण भारत के रामेश्वर धाम की तर्ज पर अपनी आध्यात्मिक शक्ति के अनेक प्रमाण उजागर किए। उस काल में छतौड़ा को शिक्षा का विशेष केंद्र माना जाता था। छतौड़ा जनकपुर से 35 कि मी दूर कोटाडोल मार्ग पर है। इन गुफाओं के भित्तिचित्रों के अवशेष शिक्षा के प्राचीन अध्याय की कहानी है। यह स्थल त्रेता युग में ऋषि मुनियों और तपस्वियों का सर्वाधिक पसंदीदा स्थल रहा है। सीतामढ़ी का कनवाई क्षेत्र ही देवशील है । इसी स्थान पर घने जंगल में सिद्ध बाबा आश्रम स्थापित है। चट्टानों से निर्मित सिद्ध बाबा आश्रम के पास तीन चार फीट ऊंची दी की बांबी है। आध्यात्मिक शांति के लिए पर्यटक इस स्थान पर अवश्य आते हैं। मानी जाती है कि माता सीता जब सीतामढ़ी में रसोई में भोजन तैयार करती थीं तब देवता भी भोजन ग्रहण करते थे। इसी परम्परा के अनुसार आज भी देवताओं को यहां प्रसाद चढ़ाने की परंपरा है। आज यह स्थान पूरी तरह आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व का स्थल बन चुका है।

आस्था
सतीश शर्मा

अपार श्रद्धा है गढ़भेड़ा बाबा में

जिला धमतरी राष्ट्रीय राजमार्ग क्र 43 के कोड़ेबोड़ और बिरेझर से 5-5 कि मी पूर्व दिशा में ग्राम सिररी के पास स्थित है। गढ़भेड़ा तालाब के ऊंचे टीले में गढ़भेड़ा बाबा का मठ बना हुआ है। इस बाबा के सम्बन्ध में कई किंवदंती प्रचलित हैं। जिसके अनुसार बहुत पहले गांव के तालाब के ऊंचे टीले पर एक महात्मा आया और उस टीले के ऊपर समाधि लगा कर बैठ गया। वह महात्मा हमेशा साधना में लीन रहता था। कालान्तर में वह महात्मा समाधिस्ट हो गया। तब इस बाबा के नाम से तालाब और गांव की महत्ता बढ़ती चली गई। बाबा के अनेक चमत्कार की घटनाएं भी गांव के बुजुर्ग बताते रहे हैं। बाबा के इस स्थल पर मठ का स्वरूप दिया गया है। भक्तों का इस मठ में आना जाना लगा रहता है। भक्तों का मानना है कि बाबा पीड़ितों की मनोकामना पूरी करते हैं। 90 के दशक से कार्तिक पूर्णिमा के दिन बाबा के इस स्थल पर विशाल मेला भरता है। आसपास के

इस स्थल पर अनेक बड़े औषधीय पेड़ो का रोपण किया गया है जिससे यहां का वातावरण रमणीय और हरा भरा लगता है। यह तालाब अब पूरी तरह से धार्मिक स्थल का रूप ले चुका है, क्योंकि वर्ष भर धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। दूर दूर से भक्त गण बाबा का आशीर्वाद लेने यहां पहुंचते रहते हैं। इसके साथ ही देवी देवताओं के मंदिर भी इस तालाब के किनारे देखे जा सकते हैं। भक्तों की आस्था बढ़ने से इस स्थल पर धार्मिक क्रियाकलापों से संबंधित कुछ न कुछ निर्माण कार्य होते ही रहते हैं। ग्राम के कुल देवता के रूप में भी ग्रामीणों की मान्यता है।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

संस्कृति
बागेश्वर पात्र

हल्बा समाज में सुख चिवड़ा का महत्व

हल्बा समाज के उत्पत्ति का सम्बन्ध महाभारत के प्रसंग रूक्मणी हरण से भी जोड़ा जाता है। रूक्मणी हरण के समय जिन योद्धाओं ने बलराम के पक्ष में युद्ध किया था, वे बलराम के प्रिय अस्त्र हल को धारण करने लगे। हल वाहक होने के कारण यह शब्द बाद में कुछ सुधार के साथ अपभ्रंश के रूप में हल्बा में परिवर्तित हो गया। हल और बाहना से हल्बा उत्पत्ति कृषि कार्य में हल की उपयोगिता और चिवड़ा के पारंपरिक उपकरण बाहना से मिलकर हल्बा शब्द का निर्माण हुआ है। हल्बा मूलतः कृषक जनजाति है। अत्यधिक अन्न उत्पादन से शेष बचे धान को हलबिन महिलाएं उबालकर हांडी में धीमे आंच में तपाकर मूसल और चाटू की सहायता से बाहना में कुटती हैं। इस प्रक्रिया में चिवड़ा उत्पादित होता है। इस चिवड़ा को हल्बा जाति की महिलाएं बाजार में बेचकर घर परिवार की अर्थ व्यवस्था में योगदान देती हैं। चिवड़ा

कूटना हल्बा जाति की महिलाओं का पारंपरिक व्यवसाय है। बस्तर के हल्बा जनजाति में सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने में सुख चिवड़ा का महत्वपूर्ण योगदान है। यहां हल्बा समाज के अलावा अन्य समाजों में भी मांगलिक कार्य विशेषकर माहला (सगाई), विवाह के विभिन्न रस्म पूरे होने के पश्चात चिवड़ा गुड़ देने का रिवाज है। चिवड़ा गुड़ ने बस्तर के सभी समाजों को एक सूत्र में पिरोकर सामाजिक सदभाव में मिठास घोलने का काम सदियों से किया है। इसलिए बस्तर में इसे सुख चिवड़ा के नाम से जाना जाता है। सरगी ' साल ' पत्तों के दोनों में चिवड़ा के साथ गुड़ मिलाकर देने का सांकेतिक अर्थ रस्म विशेष की पूर्णता को बयान करता है।बस्तर के कुछ क्षेत्र विशेष में मुरिया गोंड समाज के लोग नवाखानी पर्व के अवसर पर हलबिन महिला के हाथ का बना चिवड़ा ही अपने कुल देवता में अर्पित करते हैं।

आरबीआई ने बैंकों से कहा, एटीएम में 100 और 200 रुपए के नोट भी रखें

लोग जब एटीएम से पैसा निकालते हैं तो ज्यादा तर 500 के नोट ही निकलते हैं

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

लोग जब भी एटीएम से कैश निकालने जाते हैं तो ज्यादातर ऐसा होता है कि 500 रुपए के ही नोट ज्यादा निकलते हैं। 500 के नोटों को लेने के बाद लोगों को अक्सर चेंज के लिए भटकना पड़ता है। लेकिन अब लोगों की मुश्किलों को कम करने के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने बैंकों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि एटीएम से 100 रुपए और 200 रुपए के नोट भी निकलें।

केंद्रीय बैंक ने कहा कि जनता को इन नोटों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए ऐसा करना जरूरी है। बैंकों और व्हाइट लेबल एटीएम परिचालकों (डब्ल्यूएलएओ) को इस निर्देश को चरणबद्ध तरीके से लागू करना होगा। गैर-बैंकिंग संस्थाओं ने संचालित एटीएम को 'व्हाइट लेबल एटीएम' (डब्ल्यूएलए) कहा जाता है।

इस्तेमाल किए जाने वाले नोटों तक पहुंच बढ़े

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने एक परिपत्र में कहा, 'अक्सर इस्तेमाल किए जाने वाले मूल्यवर्ग के बैंक नोट तक जनता की पहुंच बढ़ाने के लिए यह फैसला किया गया है कि सभी बैंक और व्हाइट लेबल एटीएम परिचालक (डब्ल्यूएलएओ) यह सुनिश्चित करेंगे कि उनके एटीएम से नियमित आधार पर 100 रुपए और 200 रुपए के नोट भी निकलें।'

100-200 के नोटों की ज्यादा है मांग

परिपत्र के मुताबिक 30 सितंबर, 2025 तक 75 फीसदी एटीएम (ऑटोमेटेड टेलर मशीन) में कम से कम एक कैसेट से 100 रुपए या 200 रुपए मूल्यवर्ग के बैंक नोट निकलने चाहिए। आरबीआई ने इसके लिए 31 मार्च, 2026 तक का समय दिया है। बैंक इस समय तक अपने एटीएम में इस वर्ग के चैंबर की व्यवस्था कर सकते हैं।

बैंक अधिकारियों में मचा हड़कंप

आरबीआई की तरफ से बैंकों को एटीएम में ज्यादा से ज्यादा 100 और 200 रुपए के नोटों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए कहा गया है। यह आदेश बैंकों और व्हाइट लेबल एटीएम ऑपरेटर दोनों को सिस्टेमेटिक तरीके से लागू करना होगा। इस आदेश के बाद देश के बैंकों और अधिकारियों में हड़कंप मचा हुआ है। क्योंकि इस आदेश के बाद बैंकों को एटीएम में इसकी व्यवस्था करनी होगी।

खबर संक्षेप

सेंट्रल बैंक के लाभ में 28 फीसदी का इजाफा

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया का जनवरी-मार्च तिमाही में शुद्ध लाभ 28 प्रतिशत बढ़कर 1,034 करोड़ रुपये हो गया। फंसे कर्जों में कमी आने से बैंक का मुनाफा बढ़ा है। बैंक ने वित्त वर्ष 2024-25 की चौथी तिमाही के नतीजों के बारे में शेयर बाजार को सूचना दी। एक साल पहले की समान तिमाही में उसने 807 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया था। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने कहा कि आलोच्य तिमाही में उसकी कुल आय एक साल पहले के 9,699 करोड़ रुपये से बढ़कर 10,433 करोड़ रुपये हो गई। इस दौरान बैंक की ब्याज आय बढ़कर 8,619 करोड़ रुपये हो गई जो पिछले साल की समान अवधि में 8,337 करोड़ रुपये थी।

महिंद्रा लाइफस्पेस के शुद्ध लाभ में 19 फीसदी की वृद्धि

नई दिल्ली। रियल्टी कंपनी महिंद्रा लाइफस्पेस डेवलपर्स लि. का शुद्ध लाभ मार्च 2025 को समाप्त तिमाही में 19 प्रतिशत बढ़कर 85.09 करोड़ रुपये रहा। एक साल पहले इसी तिमाही में इसका शुद्ध मुनाफा 71.48 करोड़ रुपये था। कंपनी ने कहा कि पिछले वित्त वर्ष की जनवरी-मार्च तिमाही में कुल आय मामूली रूप से बढ़कर 55.44 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही में 54.60 करोड़ रुपये थी। वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान, कंपनी का शुद्ध लाभ घटकर 60.94 करोड़ रुपये रहा। जो इससे पिछले वित्त वर्ष 2023-24 में 97.95 करोड़ रुपये था। पिछले वित्त वर्ष में कुल आय बढ़कर 463.87 करोड़ रुपये हो गई जो वर्ष 2023-24 में 279.12 करोड़ रुपये थी।

अमेरिका ने एक बार फिर प्राथमिक निगरानी सूची में रखा

बौद्धिक संपदा संरक्षण पर भारत को अमेरिका ने निगरानी सूची में डाला

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

अमेरिका ने भारत को बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) के संरक्षण एवं अनुपालन के लिहाज से सबसे चुनौतीपूर्ण प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बताते हुए सोमवार को उसे एक बार फिर अपनी 'प्राथमिक निगरानी सूची' में रख दिया।

■ अमेरिका ने भारत की प्रगति को संतोषजनक नहीं बताया

अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि (यूएसटीआर) की '2025 स्पेशल 301' रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले एक साल में बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण और प्रवर्तन के मामले में भारत की प्रगति संतोषजनक नहीं रही है। हालांकि रिपोर्ट कहती है कि भारत ने अपनी बौद्धिक संपदा प्रणाली को मजबूत करने के लिए काम किया है लेकिन लंबे समय से चली आ रही कई आईपी चिंताओं पर अब भी खास प्रगति नहीं हो पाई है।

खास बातें

- भारत ने अपनी बौद्धिक संपदा प्रणाली को मजबूत करने काम किया
- लंबे समय से चली आ रही आईपी चिंताओं पर खास प्रगति नहीं हो पाई

सूची में चीन, भारत सहित 25 देश

रिपोर्ट में भारत सहित आठ देशों को अपनी 'प्राथमिक निगरानी सूची' में रखा गया है। इस सूची में चीन, इंडोनेशिया, रूस, अर्जेंटीना और वेनेजुएला जैसे देश भी शामिल हैं। अमेरिकी रिपोर्ट में पाकिस्तान और तुर्की सहित 25 देशों को भी शामिल किया गया है।

भारत सबसे चुनौतीपूर्ण प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में

रिपोर्ट में कहा गया है, /"भारत आईपी के संरक्षण और प्रवर्तन के संबंध में दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना हुआ है...भारत 2025 में प्राथमिकता निगरानी सूची में बना हुआ है।/"

पेटेंट मुद्दे भारत में चिंता का विषय बने हुए

रिपोर्ट के मुताबिक, पेटेंट मुद्दे भारत में विशेष चिंता का विषय बने हुए हैं। पेटेंट निरस्त होने का संभावित खतरा और भारतीय पेटेंट अधिनियम के तहत पेटेंट पात्रता मानदंडों का प्रक्रियात्मक और विवेकाधीन इस्तेमाल विभिन्न क्षेत्रों की कंपनियों को प्रभावित करता है।

पेटेंट पाने भारत में लंबा इंतजार करना पड़ता है

अमेरिकी रिपोर्ट कहती है कि भारत में आवेदकों को आम तौर पर पेटेंट पाने के लिए लंबा इंतजार और अत्यधिक रिपोर्टिंग प्रावधानों का सामना करना पड़ता है। हितधारकों का भारतीय पेटेंट अधिनियम की व्याख्या में अस्पष्टता पर चिंता व्यक्त करना जारी है।/"

भारत आईसीटी उत्पादों पर उच्च सीमा शुल्क लगाता है

यूएसटीआर की रिपोर्ट कहती है कि भारत सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) उत्पादों, सौर ऊर्जा उपकरण, चिकित्सा उपकरणों, दवाओं और पूंजीगत वस्तुओं जैसे आईपी-गहन उत्पादों पर उच्च सीमा शुल्क लगाता है।

समग्र बौद्धिक संपदा अनुपालन नाकाफी

रिपोर्ट के मुताबिक, आईपी कार्यालय के संचालन और प्रक्रियाओं में सुधार के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम सराहनीय हैं लेकिन समग्र बौद्धिक संपदा अनुपालन नाकाफी है। इसमें यह भी कहा गया है कि अमेरिका भारत के साथ आईपी मामलों पर बातचीत जारी रखने का इरादा रखता है, जिसमें व्यापार नीति मंच के बौद्धिक संपदा कार्य समूह के माध्यम से बातचीत भी शामिल है।

स्वतंत्र समीक्षा में कुछ अनियमितता नहीं मिली, अमेरिका में बिजली प्रोडक्ट के लिए आधिकारियों को घूस देने के आरोप लगे थे

अमेरिका में रिश्वत मामले में अदाणी ग्रीन को क्लीन चिट

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

अमेरिका में अदाणी ग्रुप पर चल रहे रिश्वत के मामले में बड़ा अपडेट आया है। अदाणी ग्रुप ने खुद इससे जुड़ी जानकारी दी है। ग्रुप ने कहा कि अमेरिका में उसके खिलाफ लगे आरोप की स्वतंत्र समीक्षा में कुछ अनियमितता नहीं मिली है। अदाणी ग्रुप की कंपनी अदाणी ग्रीन ने सोमवार को इस बारे में जानकारी दी है।

गौतम अदाणी और उनके भतीजे और कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर विनीत जैन पर अमेरिका में बिजली प्रोडक्ट के लिए आधिकारियों को घूस देने के आरोप लगे। ग्रुप की ओर से ऑफिसर्स को 236 मिलियन डॉलर की रिश्वत देने का आरोप लगा है। जिस पर अब अदाणी ग्रुप ने स्वतंत्र समीक्षा में कुछ गलती न मिलने की बात कही है। आरोपों को नकारा है।

विनीत जैन को का कार्यकाल एक्सटेंड

अदाणी ग्रीन ने कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर विनीत जैन पर लगे आरोपों के बीच उन्हें 10 जुलाई को फिर से 5 सालों के लिए डायरेक्टर बनाया। कंपनी ने कहा कि अपने 15 साल के कार्यकाल में जैन ने शानदार काम किया है। उन्होंने एनर्जी सेक्टर में कंपनी को नई उचाइंयों तक पहुंचाया है।

OFFICE OF THE COMMISSIONER MUNICIPAL CORPORATION RAIPUR (C.G.)

e-Procurement Tender Notice
Main Portal : http://eproc. cgstate.gov.in
(Second Call)

NIT NO: 46/NNR/Electrical/RMC/2025 **RAIPUR, DATED : 29/04/2025**

Online bids are invited for the following works of works up to Date 15/05/2025 at 17:30 hours.

Sr. No.	System Tender No.	Name of work	Amount of the Estimate (In Lacs)	Cost of Tender form	Earnest Money Deposit (In Lacs)	Eligible class of contract or/firm	Time allowed for Completion	SOR Applicable
1	167651	साईंस सेंटर के पीछे से रिंग रोड नं. 03 तक एवं मोवा मुख्यमार्ग से अशोका आईकॉन तक जाने वाली रोड़ में विद्युत पोल एवं एलईडी लाईट लगाये जाने का कार्य।	128.87 Lacs	3000.00	1,00,000.00	"C" & ABOVE	06 Month	PWD ELECTRICAL SOR 2020

The details can be viewed and downloaded online directly from the Government of chhattisgarh. e-Procurement Portal https: //eproc.cgstate.gov.in from 29/04/2025, 17:30 Hours (IST) on wards.

For more details on the tender and bidding process you may please visit the above mentioned portal.

Note:- (1) All eligible/interested contractors are mandated to get enrolled on e-Procurement portal (2) Contractors can contact Help Desk for any clarification of their doubts regarding the process of Electronic Procurement System. *Help Desk at Toll Free No. 18002582502* or through Email ID helpdesk.eproc@cgswan.gov.in (3) For More Details please download NIT details. (4) Contact no. 7898844336

घरों से निकलने वाले गीला और सूखा कचरे को सफाई (मित्र) वाहन को देवें

EXECUTIVE ENGINEER
MUNICIPAL CORPORATION RAIPUR (C.G.)

ई० प्रोक्यूरमेंट सेल, कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा

अतिअल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0:–05 2025.26
ई–प्रोक्योरमेन्ट नोटिस

ई–टेन्डर रेफरेन्स नं0–05/2025-26/EE/BCD/GARHWA दिनांक–29.04.2025

1. कार्य का विस्तृत विवरणी

क्र0सं0	कार्य का नाम	परिमाण पत्र की राशि
1	Renovation of Administrative Building, Work Shop, Canteen, Generator Room, Boundary Wall, P.C.C Road in the Campus of ITI Jhagarakharn, Block Bhawnathpur Distt. Garhwa for the year 2025-26.	` 2,26,15,200.00

1. कार्य पूर्ण की अवधि :– 09 (नौ) माह
2. वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि :– 06.05.2025 11:00 बजे
3. बिड प्राप्ति के लिए अन्तिम तिथि / समय :– 13.05.2025 11:00 बजे
4. निविदा प्रकाशित करने वाले कार्यालय का नाम एवं पताः– कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा।
5. निविदा खोलने की तिथि / समय एवं स्थान :– 15.05.2025 11:30 बजे नोडल पदाधिकारी, ई0 प्रोक्यूरमेंट सेल, मुख्य अभियंता का कार्यालय, झारखण्ड,राँची लिंक टैंक रोड, पिन कोड–834001
6. प्रोक्योरमेन्ट पदाधिकारी का सम्पर्क संख्या :– 9955921643
7. ई–प्रोक्योरमेन्ट सेल का हेल्पलाईन संख्या :– 8210456132
9. नोट– केवल ई–निविदा की स्वीकार किया जायेगा।
10. प्राक्कलित राशि घट घट बढ़ सकती है। अग्रधन की राशि परिमाण विपत्र की राशि के अनुसार होगी।
11. परिमाण विपत्र एवं EMD की राशि केवल ऑनलाईन माध्यम से ही स्वीकार होगा। ऑनलाईन माध्यम से किये गये भुगतान की पद्धति वेबसाइट पर आवश्यक रूप से अपलोड करेगें।
12. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाता में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो सारी जबावदेही संबंधित निविदाता की होगी।
13. विस्तृत जानकारी http://jharkhandtenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमण्डल, गढ़वा।

PR.NO.351375 Building(25-26):D

कार्यालय छत्तीसगढ़ राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित

"वन धन भवन" सेक्टर 24, अटल नगर, नवा रायपुर (छत्तीसगढ़)
दूरभाष : (0771) 2513100 से 2513110 25131002513110
E-mail: mfpfed.cg@nic.in; Website: www.cgmfpfed.org
GST No.-22AABAC5137E2ZC

अधिसूचना क्रमांक MFP /Raw Material /2025 /I दिनांक 29.04.2025

वित्तीय वर्ष 2025-26 हेतु कच्ची औषधि / स्पाइसेस / भस्म / तेल / रसायन एवं अन्य सामग्री क्रय हेतु ऑनलाईन ई- निविदा आमंत्रित

ई-निविदा ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण एवं खुलना निविदायें निम्न तालिका में दर्शित तिथियों को केवल ई-प्रोक्युरमेन्ट पोर्टल पर https://cgmfpfedtenders.abcprocure.com ऑनलाईन जमा किया जा सकता है। विवरण निम्नानुसार है :-

निविदा चक्र	जिस तिथि से निविदा सूचना डाउनलोड की जा सकती है	ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की तिथि	ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	ऑनलाईन तकनीकी निविदा खोलने की तिथि
प्रथम	30.04.2025	20.05.2025	29.05.2025	29.05.2025
द्वितीय	12.06.2025	16.06.2025	19.06.2025	19.06.2025
तृतीय	26.06.2025	01.07.2025	04.07.2025	04.07.2025

निविदा सूचना मय निविदा फार्म, सामग्री की सूची तथा अन्य आवश्यक निर्देशों का अवलोकन संघ मुख्यालय के वेबसाइट-www.cgmfpfed.org अथवा ई-प्रोक्यूरमेन्ट पोर्टल https://cgmfpfedtenders.abcprocure.com के माध्यम से प्राप्त किया जावे।

ई-निविदा के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की सहायता हेतु कृपया हमारे सर्विस प्रोवाइडर **e-Procurement Technologies Ltd., Ahmedabad** से निम्न विवरण पर सम्पर्क करें।

दूरभाष क्रमांक :- Landline Number 0796813-6848-6849-6850-6871-6809
पंजीयन हेतु ई-मेल- info@abcprocure.com
पंजीयन हेतु - +91-6353217080, +91-9099090830
तकनीकी सहायता हेतु ई-मेल - support@abcprocure.com

S-43686/1 प्रबंध संचालक

शेयर बाजार मामूली बढ़त के साथ बंद

मुंबई। वैश्विक स्तर पर तनाव से उपजी चिंताओं के बीच निवेशकों के सतर्क रुख अपना लेने से मंगलवार को स्थानीय शेयर बाजार उतार-चढ़ाव भरे कारोबार में मामूली बढ़त के साथ बंद हुए। हालांकि रिलायंस इंडस्ट्रीज, इन्फोसिस और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज जैसी प्रमुख कंपनियों में भारी खरीदारी और विदेशी संस्थागत निवेशकों के प्रवाह ने घरेलू बाजार को समर्थन देने का काम किया। बीएसई का 30 शेयरों पर आधारित मानक सूचकांक सेंसेक्स 70.01 अंक चढ़कर 80,288.38 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 442.94 अंक बढ़कर 80,661.31 पर पहुंच गया था लेकिन बिकवाली के दबाव में नीचे आ गया। निफ्टी भी 7.45 अंक यानी 0.03 प्रतिशत की मामूली बढ़त के साथ 24,335.95 अंक पर बंद हुआ। जियोजित इन्वेस्टमेंट लि. के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, /"भारत-पाकिस्तान सीमा पर तनाव को लेकर उपजी भू-राजनीतिक चिंताओं के बीच सतर्कता के कारण बाजार में काफी हद तक उतार-चढ़ाव देखने को मिला।

सोना 1,050 रुपए चढ़ा चांदी 3,500 रुपए उछली

नई दिल्ली। अक्षय तृतीया से पहले आभूषण विक्रेताओं और स्टॉकिस्टों की ताजा लिवाली के कारण राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में मंगलवार को सोने की कीमत 1,050 रुपए बढ़कर 99,450 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गई। अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने यह जानकारी दी। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाने वाला अक्षय तृतीया इस साल 30 अप्रैल को है। सोमवार को 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना 1,000 रुपये घटकर 98,400 रुपये प्रति 10 ग्राम पर रहा था। 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाले सोने का भाव 1,100 रुपये उछलकर 99,000 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। जबकि पिछले दिन यह 97,900 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। इस साल अब तक सोने की कीमतों में पिछले साल 31 दिसंबर के 78,950 रुपये से 20,500 रुपये प्रति 10 ग्राम यानी 26 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।

HDFC BANK — एच.डी.एफ.सी. बैंक लिमिटेड

शाखाः अलास्का टॉवर, लोधीपारा रोड, शंकर नगर, रायपुर, फोन : 0771-4243149/240
CIN L65920MH1994PLC080618 Website: www.hdfcbank.com

मांग–सूचना

वित्तीय संपत्तियों के प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 (अधिनियम) की धारा 13(2) के तहत, सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पढ़ें।

जबकि अधोहस्ताक्षरी प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण के तहत एचडीएफसी बैंक लिमिटेड (पूर्ववर्ती एचडीएफसी लिमिटेड का माननीय एनसीएलटी–मुंबई द्वारा दिनांक 17 मार्च 2023 के आदेश द्वारा अनुमोदित समामेलन की एक योजना के आधार पर एचडीएफसी बैंक लिमिटेड के साथ विलय हो गया है) (एचडीएफसी) का प्राधिकृत अधिकारी है। वित्तीय संपत्ति और सुरक्षा हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 और सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13 (12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उक्त अधिनियम की धारा 13 (2) के तहत मांग नोटिस जारी किए गए।, यहां नीचे सूचीबद्ध उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारियों/कानूनी प्रतिनिधियों से संबंधित नोटिस/नोटिस की तारीख से 60 दिनों के भीतर संबंधित मांग नोटिस/नोटिस में उल्लिखित राशि का भुगतान करने का आह्वान किया गया है। नीचे दिए गए विवरण के अनुसार. अधोहस्ताक्षरी ने इन नोटिसों को उक्त उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारियों/कानूनी प्रतिनिधियों के अंतिम ज्ञात संबंधित पते के परिसर में चिपकाया है। उक्त नोटिस की प्रतियां अधोहस्ताक्षरी के पास उपलब्ध हैं, और उक्त उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारी/कानूनी प्रतिनिधि, यदि चाहें तो, किसी भी कार्य दिवस पर संबंधित प्रति अधोहस्ताक्षरी से प्राप्त कर सकते हैं। सामान्य कार्यालय समय.

उपरोक्त के संबंध में, एक बार फिर उक्त उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारियों/कानूनी प्रतिनिधियों को नोटिस दिया जाता है कि वे इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 60 दिनों के भीतर एचडीएफसी को भुगतान करें। यहां नीचे दी गई राशियां उनके संबंधित नामों में अतिरिक्त ब्याज के साथ दी गई हैं। जैसा कि उक्त डिमांड नोटिस में बताया गया है, नीचे कॉलम (सी) में उल्लिखित संबंधित तारीखों से लेकर भुगतान और/या वसूली की तारीख तक, ऋण समझौते और उक्त उधारकर्ता द्वारा निष्पादित अन्य दस्तावेजों/लेखों, यदि कोई हो, के साथ पढ़ा जाए। . ऋण के उचित पुनर्भुगतान के लिए सुरक्षा के रूप में, निम्नलिखित सुरक्षित संपत्ति को क्रमशः उक्त उधारकर्ता द्वारा एचडीएफसी के पास गिरवी रखा गया है।

सुरक्षित संपत्ति को भुनाने के लिए उपलब्ध समय के संबंध में, उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारी/कानूनी प्रतिनिधि का ध्यान अधिनियम की धारा 13 की उप–धारा (8) के प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है।

क्रं.	ऋणी/जमानतदार का नाम एवं पता	बकाया राशि	मांग सूचना तिथि	बंधक संपत्ति का विवरण
(अ)	(ब)	(स)	(द)	(इ)
1.	**श्री ठाकुर प्रशांत,** मकान नंबर 91, कॉलोनी लेबर कॉलोनी, तुलसीपुर, राजनांदगांव–491441. **श्री ठाकुर प्रशांत,** मेन रोड दारापारा, दारापारा – बीजापुर S.O., छत्तीसगढ़, पिन – 494444. **श्री ठाकुर प्रशांत,** पुलिस विभाग, बीजापुर– दारापारा, मेन रोड, दारापारा, बीजापुर – 494226. **श्री ठाकुर गंगाधर,** मकान नंबर 91, लेबर कॉलोनी, कॉलोनी तुलसीपुर, राजनांदगांव, छ.ग. 491441.	₹ 7,87,861/- as on 31-Mar-25	16-Apr-2025	समस्त एवं आंशिक भाग फ्रीहोल्ड भूमि जिसका प्लॉट क्षेत्रफल–68.26 वर्ग मीटर और निर्मित क्षेत्रफल–346.73 वर्ग फीट, एस.आई.एच.एस.–91, लेबर कॉलोनी, तुलसीपुर, राजनांदगांव तहसील और जिला–राजनांदगांव छ.ग., **चौहद्दीः–**पूर्व –5.55 मीटर गली, पश्चिम–5.55 मीटर रोड, उत्तर–12.30 मीटर एस.आई.एच.एस.–90, दक्षिण–12.30 मीटर एस.आई.एच.एस.–92.
2.	**श्री सोनी जगदीश** पिता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) कानूनी उत्तराधिकारी, कानूनी प्रतिनिधि, उत्तराधिकारी एवं नियुक्तिकर्ता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) साथ ही सह–उधारकर्ता, प्लॉट क्रमांक बी–18, खसरा क्रमांक 137(भाग), प.ह.नं. 69, मौजा अमलीडीह, ऋषभ नगर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद वार्ड–46, रायपुर–492001. **श्री सोनी जगदीश** पिता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) कानूनी उत्तराधिकारी, कानूनी प्रतिनिधि, उत्तराधिकारी एवं नियुक्तिकर्ता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) साथ ही सह–उधारकर्ता, प्लॉट क्रमांक बी–18, ऋषभ नगर, पवन विहार कालोनी के पास, अमलीडीह, रायपुर–492001. **श्रीमती सोनी बेन कोकिला** पति श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) कानूनी उत्तराधिकारी, कानूनी प्रतिनिधि, उत्तराधिकारी एवं नियुक्तिकर्ता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) साथ ही सह–उधारकर्ता, प्लॉट क्रमांक बी–18, खसरा क्रमांक 137(भाग), प.ह.नं. 69, मौजा अमलीडीह, ऋषभ नगर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद वार्ड–46, रायपुर–492001. **श्रीमती सोनी गायत्री** पिता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) कानूनी उत्तराधिकारी, कानूनी प्रतिनिधि, उत्तराधिकारी एवं नियुक्तिकर्ता श्री सोनी किशोर कुमार (मृतक पश्चात) प्लॉट क्रमांक बी–18, खसरा क्रमांक 137(भाग), प.ह.नं. 69, मौजा अमलीडीह, ऋषभ नगर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद वार्ड–46, रायपुर–492001. **मेसर्स श्री गायत्री ज्वेलर्स,** प्रोपराइटर **श्री सोनी जगदीश** के माध्यम से, प्लॉट क्रमांक बी–18, खसरा क्रमांक 137(भाग), प.ह.नं. 69, मौजा अमलीडीह, ऋषभ नगर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद वार्ड–46, रायपुर–492001.	₹12,98,964/- as on 31-Mar-25	16-Apr-2025	समस्त एवं आंशिक भाग का मकान जिसका क्षेत्रफल 525 वर्ग फीट, खसरा नंबर 137 और 137/1 का भाग, प.ह.–114, प्लॉट नंबर बी 18, ऋषभ नगर, पवन विहार कॉलोनी के पास, ग्राम– अमलीडीह तहसील और जिला– रायपुर छ.ग.–492001. **चौहद्दीः–** उत्तर– प्लॉट नंबर बी–17, दक्षिण – प्लॉट नंबर बी–19, पूर्व – प्लॉट नंबर बी–13, पश्चिम –रोड।
3.	**बनर्जी हिमांशु,** सेलिनो पैराडाइज़ ब्लॉक ए, फ्लैट–503, फ्लोर–5वीं, स.क्र., खसरा नंबर 653; प.ह.नं.109; ग्राम– दलदल सिवनी, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492001. **बनर्जी हिमांशु,** सी 101, जीटी होम नेचुरा स्काई टॉवर, दलदल सिवनी, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492001. **बनर्जी हिमांशु,** हैवेल्स इंडिया लिमिटेड, 311-314, वॉलफोर्ट ओजोन, फाफाडीह, रायपुर, छत्तीसगढ़492001. **बनर्जी चंदना,** सेलिनो पैराडाइज़ ब्लॉक ए, फ्लैट–503, फ्लोर–5वीं, स.क्र., खसरा नंबर 653; प.ह.नं.109; ग्राम– दलदल सिवनी, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492001. **बनर्जी चंदना,** सी–101, जीटी होम नेचुरा स्काई टावर, दलदल सिवनी, रायपुर छत्तीसगढ़ 492001.	₹ 30,44,738/- as on 31st Mar 2025 For Credit Card:- Rs. 133404.86/- as on 07th Mar 2025	25-Apr-25	सेलिनो पैराडाइज़ ब्लॉक ए, फ्लैट–503, फ्लोर–5वीं, क्रमांक, खसरा नंबर 653; प.ह.नं.109;, ग्राम– दलदल सिवनी, रायपुर, छत्तीसगढ़।
4.	**सिंह ओंकार नाथ,** खसरा नंबर 1274 भाग, नया खसरा नं. 1274/14, प.ह.नं. 37, प्लॉट नंबर 290/1, हाउस शीट नंबर 15, मौजा तोरवा, हेमू नगर, बिलासपुर–छ.ग. 495001. **सिंह ओंकार नाथ,** फ्लैट नंबर–1 ए2, आदित्य एन्क्लेव, रोड नंबर 04, आदित्यपुर–2, खरसावां, झारखंड 833219. **सिंह ओंकार नाथ,** आरएसबी ट्रांसमिशन (आई) लिमिटेड, एनएस–25, छठा चरण, गम्हरिया जमशेदपुर 832108. **सिंह मनोज कुमार,** खसरा नंबर 1274 भाग, नया खसरा नं. 1274/14, प.ह.नं. 37, प्लॉट नंबर 290/1, हाउस शीट नंबर 15, मौजा तोरवा, हेमू नगर, बिलासपुर–छ.ग. 495001. **सिंह मनोज कुमार,** फ्लैट नंबर–1 ए2, आदित्य एन्क्लेव, रोड नंबर 04, आदित्यपुर–2, ।रसावां, झारखंड 833219. **सिंह सावित्री,** खसरा नंबर 1274 भाग, नया खसरा नं. 1274/14, प.ह.नं. 37, प्लॉट नंबर 290/1, हाउस शीट नंबर 15, मौजा तोरवा, हेमू नगर, बिलासपुर–छ.ग. 495001. **सिंह सावित्री,** फ्लैट नंबर– 1 ए2, आदित्य एन्क्लेव, रोड नंबर 04, आदित्यपुर–2, खरसावां, झारखंड 833219. **सिंह प्रीति,** खसरा नंबर 1274 भाग, नया खसरा नं. 1274/14, प.ह.नं. 37, प्लॉट नंबर 290/1, हाउस शीट नंबर 15, मौजा तोरवा, हेमू नगर, बिलासपुर–छ.ग. 495001. **सिंह प्रीति,** फ्लैट नंबर–1 ए2, आदित्य एन्क्लेव, रोड नंबर 04, आदित्यपुर–2, खरसावां, झारखंड 833219.	₹31,37,016/- as on 31st Mar 2025 For Credit Card:- Rs. 4,73,987.84/- as on 07th Mar 2025	25-Apr-25	खसरा नंबर 1274 भाग, नया खसरा नं. 1274/14, प.ह.नं. 37, प्लॉट नंबर 290/1, हाउस शीट नंबर 15 मौजा तोरवा, हेमू नगर, बिलासपुर–छ.ग.
5.	**दादू दयाल बंजारे** खसरा 1123/7, पुराना नंबर 1123/2, (भाग), फोन नं. 21/25/35, प्लॉट नंबर 2230, पुराना नंबर 45, हाउस शीट नंबर 26, मौजा मंगला, वार्ड नंबर 14, मिनीमाता नगर बिलासपुर–छ.ग. 495001. **दादू दयाल बंजारे** पिता स्व. शिव राम बंजारे, 43,2, सेंदरी, जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़ 495690. **दादू दयाल बंजारे** पंचायत एवं ग्रामीण विकास, कार्यालय जनपद पंचायत सक्ती रोड, जांजगीर चांपा 495668. **बंजारे मोंगरा बाई,** खसरा 1123/7, पुराना नंबर 1123/2, (भाग), फोन नं. 21/25/35, प्लॉट नंबर 2230, पुराना नंबर 45, हाउस शीट नंबर 26, मौजा मंगला, वार्ड नंबर 14, मिनीमाता नगर बिलासपुर–छ.ग. 495001. **बंजारे मोंगारा बाई** पिता स्व. शिव राम बंजारे, 43,2, सेंदरी जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़ 495690.	₹ 24,26,662/- as on 31st Mar 2025 For Credit Card:- Rs. 1,27,991.29/- as on 07th Mar 2025	25-Apr-25	खसरा 1123/7, पुराना नंबर 1123/2, (भाग), प.ह. क्रमांक 21/25/35, प्लॉट क्रमांक 2230, पुराना क्रमांक 45, हाउस शीट क्रमांक 26, मौजा मंगला, वार्ड क्रमांक 14, मिनीमाता नगर बिलासपुर–छ.ग. 495001.

*अतिरिक्त ब्याज के साथ। भुगतान और/या वसूली की तारीख तक किए गए आकस्मिक खर्च, लागत, शुल्क जैसा लागू हो आदि।

यदि उक्त उधारकर्ता उपर्युक्त के अनुसार एचडीएफसी को भुगतान करने में विफल हो जाते हैं, तो एचडीएफसी उक्त अधिनियम की धारा 13 (4) और लागू नियमों के तहत उपरोक्त सुरक्षित संपत्ति/अचल संपत्ति के खिलाफ कार्रवाई करेगा, जो पूरी तरह से जोखिम में है। उक्त उधारकर्ता(ओं)/कानूनी वारिस(ओं)/कानूनी प्रतिनिधियों(ओं) की लागत और परिणाम के बारे में।

उक्त उधारकर्ता/कानूनी उत्तराधिकारी/कानूनी प्रतिनिधि को उक्त अधिनियम के तहत उपरोक्त सुरक्षित संपत्ति/अचल संपत्ति को हस्तांतरित करने से प्रतिबंधित किया गया है, चाहे वह बिक्री, पट्टे या अन्यथा के माध्यम से हो। एचडीएफसी की पूर्व लिखित सहमति। कोई भी व्यक्ति जो अधिनियम या उसके तहत बनाए गए नियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता है या उल्लंघन के लिए उकसाता है, वह अधिनियम के तहत प्रावधान के अनुसार कारावास और/या दंड के लिए उत्तरदायी होगा।

स्थान : रायपुर, राजनांदगांव, बीजापुर, बिलासपुर, जांजगीर–चांपा
दिनांक : 30.04.2025
पंजीकृत पता– एचडीएफसी बैंक हाऊस, सेनापती बापट मार्ग, लोवर पर्ल (पश्चिम), मुंबई–400020
कृते / प्राधिकृत अधिकारी
एचडीएफसी बैंक लिमिटेड

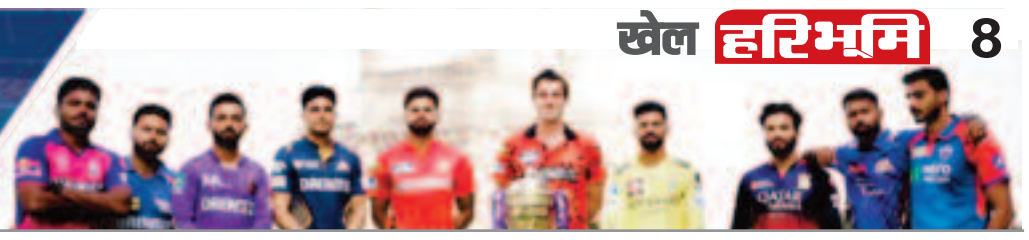

पहली भिड़ंत में पंजाब से मात खा चुकी चेन्नई को बदला चुकाने लगाना होगा दमखम

एजेंसी ▶▶| चेन्नई

इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के 49वें मैच में चेन्नई सुपरकिंग्स का सामना पंजाब किंग्स से आज 30 अप्रैल को चेन्नई में होगा। पंजाब किंग्स ने अपने 9 में से 5 मैच जीते हैं और 3 में शिकस्त (बेनतीजा- 1) झेली है। वहीं, चेन्नई ने 9 में से सिर्फ 2 मैच जीते हैं और 7 में शिकस्त का सामना किया है। प्वाइंट टेबल पर श्रेयस अय्यर की कप्तानी वाली टीम पंजाब किंग्स 5वें स्थान पर है। वहीं सीएसके ने सिर्फ 2 मैच जीते हैं और महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी वाली टीम 10वें पायदान पर है। पंजाब किंग्स और सीएसके के बीच होने वाला यह मैच आज 30 अप्रैल को एमए चिदंबरम क्रिकेट स्टेडियम, चेन्नई में शाम 7.30 बजे से खेला जाएगा।

लगभग बराबरी का रहा है मुकाबला

अब तक दोनों टीमों के बीच मैचों में कड़ा मुकाबला देखने को मिला है। आईपीएल में ये दोनों टीमें कुल 31 मैचों में आमने-सामने थी, जिसमें से 16 मैच सीएसके ने जीते और 15 मैच पंजाब ने अपने नाम किए। आईपीएल 2024 में दोनों टीमें 2 मुकाबलों में आपस में भिड़ी थी, जिसमें दोनों ने 1-1 मैच अपने नाम किए थे। आईपीएल 2025 की पहली भिड़ंत में पंजाब किंग्स ने 18 रन से जीत दर्ज की थी।

ऐसी हो सकती है पंजाब किंग्स की टीम

बता दें कि पंजाब किंग्स का पिछला मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था। उस मैच में प्रियांश आर्य और प्रभसिमरन सिंह ने अर्धशतक लगाए थे। इस सलामी जोड़ी ने अब तक अच्छा प्रदर्शन किया है और पंजाब की टीम अगले मुकाबले में भी टीम से ये उम्मीद करेगी।

ऐसे उतर सकती है धोनी ब्रिगेड

चेन्नई सुपर किंग्स की टीम इस सीजन में अब तक प्रभाव छोड़ने में असफल रही है। सीएसके को अपने आखिरी मैच में एसआरएच के खिलाफ 5 विकेट से हार मिली थी। शेख रशीद और आयुष म्हात्रे की सलामी जोड़ी एक बार फिर से मैदान पर उतर सकती है।

इन खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर होंगी नजरें

पंजाब किंग्स के सलामी बल्लेबाज प्रियांश ने 9 पारियों में 35.88 की औसत और 200.62 की स्ट्राइक रेट के साथ 323 रन बनाए हैं, जिसमें 1 शतक और 1 अर्धशतक शामिल हैं। प्रभसिमरन ने 9 पारियों में 32.44 की औसत और 168.78 की स्ट्राइक रेट के साथ 292 रन बनाए हैं। वहीं चेन्नई सुपर किंग्स के नूर ने 9 मैचों में 17.78 की औसत से 14 विकेट लिए हैं। खलील 9 मैचों में 12 विकेट ले चुके हैं।

त्रिकोणीय सीरीज

प्रतिका, हरमन, जेमिमा-स्मृति ने बरपाया कहर, दक्षिण अफ्रीका को 15 रन से हराया

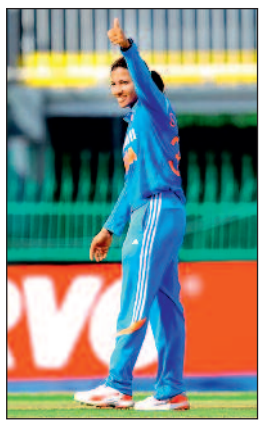

एजेंसी ▶▶| कोलंबो

इस समय खेली जा रही त्रिकोणीय सीरीज 2025 में भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने अपने दूसरे मुकाबले में दक्षिण अफ्रीका महिला क्रिकेट टीम को 15 रन से हराते हुए लगातार दूसरी जीत दर्ज की। कोलंबो में खेले गए मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 276/6 का स्कोर बनाया। जवाब में दक्षिण अफ्रीकी टीम तजमीन ब्रिट्स के शतक (109) के बावजूद 261 रन पर ढेर हुई।

भारत की अच्छी शुरुआत

भारत को प्रतिका रावल (78) और स्मृति मंधाना (36) ने अच्छी शुरुआत दिलाई। वहीं मध्यक्रम में हरमनप्रीत कौर (41) और जेमिमा रोड्रिग्स (41) ने उम्दा पारियां खेलते हुए टीम का स्कोर 250 के पार पहुंचाया। जवाब में दक्षिण अफ्रीका से लौरा वोल्वार्ड्ट (43) और शतकवीर ब्रिट्स (108) ने 140 रन की साझेदारी की। हालांकि, इन दोनों के अलावा अन्य कोई बल्लेबाज बड़ी पारी खेलने में नाकाम रही और टीम को शिकस्त मिली। भारत से स्नेह राणा ने 5 विकेट लिए।

स्नेह राणा ने पहली बार चटकाए 5 विकेट

भारत की जीत में स्नेह राणा की अहम भूमिका रही। इस ऑफ स्पिनर ने अपने 10 ओवर के कोटे में 43 रन देते हुए 5 विकेट लिए। उन्होंने लारा गुडाल और ब्रिट्स जैसी प्रमुख बल्लेबाजों को पवेलियन की राह दिखाई। यह राणा का वनडे क्रिकेट में पहला 5 विकेट हॉल रहा। उनके नाम अब 29 मैचों में 29.00 की औसत और 4.58 की इकॉनमी रेट से 37 विकेट लिए हैं।

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
बेंगलुरु	10	7	3	14
मुंबई	10	6	4	12
गुजरात	9	6	3	12
दिल्ली	10	6	4	12
पंजाब	9	5	3	11
लखनऊ	10	5	5	10
कोलकाता	10	4	5	9
राजस्थान	10	3	7	6
हैदराबाद	9	3	6	6
चेन्नई	9	2	7	4

नारायण और चक्रवर्ती ने नाइट राइडर्स को दिल्ली पर 14 रन की जीत दिलाई

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

जीत के साथ केकेआर की प्लेऑफ की उम्मीदें जीवंत

सुनील नारायण और वरुण चक्रवर्ती की फिरकी के जादू से कोलकाता नाइट राइडर्स ने इंडियन प्रीमियर लीग में मंगलवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स को 14 रन से हराकर प्ले ऑफ में जगह बनाने की अपनी उम्मीदों को जीवंत रखा। इस हार के बावजूद दिल्ली की टीम 10 मैच में 12 अंक के साथ चौथे स्थान पर बनी हुई है।

नाइट राइडर्स इतने ही मुकाबलों में नौ अंक के साथ सातवें स्थान पर है। दिल्ली की पिछले चार मैच में यह तीसरी हार है। इससे पहले अक्षर ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया जिसके बाद नारायण और गुरबाज ने तीन ओवर में 48 रन जोड़कर नाइट राइडर्स को तेज शुरुआत दिलाई। गुरबाज ने स्टार्क पर दो चौकों से शुरुआत की जबकि नारायण ने दुष्मंता चमीरा (46 रन पर एक विकेट) पर दो छक्के और एक चौका मारा जिससे ओवर में 25 रन बने। गुरबाज ने स्टार्क के अगले ओवर में भी दो चौके और एक छक्का मारा लेकिन अंतिम गेंद पर विकेटकीपर पोरेल को कैच दे बैठे। गुरबाज ने 12 गेंद का सामना करते हुए पांच चौके और एक छक्का मारा। नारायण ने मुकेश कुमार पर चौके के साथ चौथे ओवर में टीम के रनों का अर्धशतक पूरा किया।

दिल्ली की टीम 109 रन पर हुई ढेर

नाइट राइडर्स के 205 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए दिल्ली की टीम नारायण (29 रन पर तीन विकेट) और चक्रवर्ती (39 रन पर दो विकेट) की बलखाती गेंदों के सामने डु प्लेसी (62 रन, 45 गेंद, सात चौके, दो छक्के) के अर्धशतक और कप्तान अक्षर पटेल (43 रन, 23 गेंद, चार चौके, तीन छक्के) के साथ उनकी चौथे विकेट की 76 रन की साझेदारी के बावजूद नौ विकेट पर 190 रन ही बना सकी।दिल्ली की ओर से डु प्लेसी और अक्षर के अलावा विपराज निगम (38 रन, 19 गेंद, पांच चौके, दो छक्के) ही 20 रन के आंकड़े को हार कर पाए।

कोलकाता ने खेली बेहतरीन पारी

नाइट राइडर्स की टीम इससे पहले अंगकृष रघुवंशी 44 रन और रिंकू सिंह 36 रन की उम्दा पारियों और दोनों के बीच पांचवें विकेट के लिए 61 रन की साझेदारी से नौ विकेट पर 204 रन के चुनौतीपूर्ण स्कोर तक पहुंचने में सफल रही। सलामी बल्लेबाजों नारायण (27) और रहमानुल्लाह गुरबाज (26) तथा कप्तान अजिंक्य रहाणे (26) ने भी उपयोगी पारियां खेली। मिचेल स्टार्क (43 रन पर तीन विकेट) दिल्ली के सबसे सफल गेंदबाज रहे। कप्तान अक्षर पटेल (27 रन पर दो विकेट) और लेग स्पिनर विपराज निगम (41 रन पर दो विकेट) ने बीच के ओवरों में प्रभावी गेंदबाजी की।

दिल्ली टीम शुरुआत में लड़खड़ा गई

लक्ष्य का पीछा करने उतरे दिल्ली की शुरुआत खराब रही। अभिषेक पोरेल (04) ने बाएं हाथ के स्पिनर अनुकूल रॉय (27 रन पर एक विकेट) की पारी की पहली गेंद पर चौके से खाता खोला लेकिन अगली गेंद पर रसेल को कैच थमा बैठे। डु प्लेसी ने वैभव अरोड़ा पर छक्का जड़ने के बाद हर्षित राणा का स्वागत तीन चौकों के साथ किया।

स्कोर बोर्ड

कोलकाता नाइट राइडर	रन	गेंद	4	6
रहमानुल्लाह का पोरेल बो स्टार्क	26	12	5	1
सुनील नारायण पगबाधा बो विपराज	27	16	2	2
अजिंक्य रहाणे पगबाधा बो अक्षर	26	14	4	1
अंगकृष रघुवंशी का नायर बो चमीरा	44	32	3	2
वेंकटेश अय्यर का विपराज बो अक्षर	07	05	1	0
रिंकू सिंह का स्टार्क बो विपराज	36	25	3	1
आंद्रे रसेल रन आउट	17	09	2	1
रोवमैन पावेल पगबाधा बो स्टार्क	05	05	1	0
अनुकूल रॉय का चमीरा बो स्टार्क	00	01	0	0
हर्षित राणा नाबाद	00	01	0	0
वरुण चक्रवर्ती नाबाद	01	01	0	0
अतिरिक्त:15 , कुल: 20 ओवर में 204/9 रन				
विकेट पतन: 1-48, 2-85, 3-91, 4-113, 5-174, 6-177, 7-203, 8-203, 9-203				
गेंदबाजी: स्टार्क 4-0-43-3, चमीरा 3-0-46-1, मुकेश 2-0-17-0 विपराज 4-0-41-2, अक्षर 4-0-27-2, कुलदीप 3-0-27-0				

दिल्ली कैपिटल्स	रन	गेंद	4	6
अभिषेक पोरेल का रसेल बो रॉय	04	02	1	0
फाफ डु प्लेसी का रिंकू बो नारायण	62	45	7	2
करुण नायर पगबाधा बो अरोड़ा	15	13	2	0
लोकेश राहुल रन आउट	07	05	1	0
अक्षर पटेल का राणा बो नारायण	43	23	4	3
ट्रिस्टन स्टब्स बो नारायण	01	03	0	0
विपराज निगम बो रसेल	38	19	5	2
आशुतोष का नारायण बो चक्रवर्ती	07	06	0	1
मिचेल का गुरबाज को चक्रवर्ती	00	01	0	0
दुष्मंता चमीरा नाबाद	02	03	0	0
कुलदीप यादव नाबाद	01	1	0	0
अतिरिक्त : 10, कुल: 20 ओवर में 190/9 रन				
विकेट पतन: 1-4, 2-43, 3-60, 4-136, 5-138, 6-146, 7-160, 8-160, 9-189				
गेंदबाजी: रॉय 4-0-27-1, अरोड़ा 2-0-19-1, राणा 4-0-49-0 चक्रवर्ती 4-0-39-2, नारायण 4-0-29-3, रसेल 2-0-22-1				

ऑरेंज कैप

साई सुदर्शन
456 रन
गुजरात

पर्पल कैप

जोश हेजलवुड
18 विकेट
बेंगलुरु

खबर संक्षेप

आईएम विजयन को डिप्टी कमांडेंट के पद पर पदोन्नत किया गया

तिरुवनंतपुरम। केरल सरकार ने भारतीय फुटबॉल के दिग्गज खिलाड़ी आई एम विजयन के लिए मालाबार स्पेशल पुलिस बटालियन में डिप्टी कमांडेंट का अतिरिक्त पद सृजित करने और खेल में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें इस पद पर नियुक्त करने का आदेश पारित किया। विजयन वर्तमान में मालाबार विशेष पुलिस बटालियन में सहायक कमांडेंट हैं।

ओलंपिक पदक विजेता भाकर, कुसाले म्यूनिख विश्व कप के लिए भारतीय टीम में

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक के सितारे मनु भाकर और स्वप्निल कुसाले को मंगलवार को एशियाई खेलों की मौजूदा चैंपियन पलक के साथ आठ जून से शुरू होने वाले आईएसएसएफ राइफल, पिस्टल विश्व कप के म्यूनिख चरण के लिए 23 सदस्यीय भारतीय टीम में शामिल किया गया। भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ ने टीम की घोषणा की, जिसमें भाकर दो व्यक्तिगत स्पर्धाओं (महिलाओं की 10 मीटर और 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा) में जगह बनाने वाली एकमात्र सदस्य हैं।

प्रतियोगिताओं में कोई बदलाव नहीं

टीम के कुल 13 सदस्य म्यूनिख जाने वाली टीम में भी हैं। इसमें महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन (3पी) और 25 मीटर पिस्टल प्रतियोगिताओं में कोई बदलाव नहीं हुआ है। राष्ट्रीय टीम में पुरुष एयर राइफल में संदीप सिंह की वापसी हुई है। कुसाले और संदीप पेरिस खेलों में भाग लेने के बाद पहली बार प्रतिस्पर्धा करते दिखेंगे।

26 मई से 8 जून तक चलेगी लीग

26 मई से 8 जून तक चलने वाली इस लीग में पृथ्वी के अलावा शिवम दुबे, तुषार देशपांडे, शार्दुल ठाकुर और सरफराज खान भी आइकन खिलाड़ी होंगे। बता दें कि पिछले कुछ समय से शॉ के बल्ले से रन नहीं निकले हैं लेकिन इसके बाद भी उन्हें इसमें शामिल किया गया है।

टी20 मुंबई लीग 2025 के आइकन खिलाड़ी

श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव, अजिंक्य रहाणे, पृथ्वी शॉ, शार्दुल ठाकुर, तुषार देशपांडे, शिवम दुबे, सरफराज खान।

सम्मान

पृथ्वी शॉ बने मुंबई लीग के आइकन खिलाड़ी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

क्रिकेटर पृथ्वी शॉ के लिए आईपीएल 2025 का ऑक्शन निराशाजनक रहा लेकिन अब उन्हें एक बड़ा सम्मान मिला है। टी-20 लीग तीसरे सीजन के लिए मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन ने आइकन खिलाड़ियों की लिस्ट जारी की है। इसमें लगातार टीम से बहर चल रहे पृथ्वी शॉ को आइकन खिलाड़ियों की लिस्ट में शामिल किया गया है। इस सूची में उनके साथ श्रेयस अय्यर, सूर्यकुमार यादव और अजिंक्य रहाणे जैसे दिग्गज भी हैं।

लगभग 6 साल बाद वापसी कर रही टी20 मुंबई लीग में पृथ्वी शॉ को आइकन खिलाड़ी बनाया गया है। उनके साथ इस सूची में शामिल अन्य खिलाड़ी आईपीएल में शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। सूर्यकुमार यादव ने मुंबई इंडियंस के लिए 10 मैचों में 427 रन बनाए हैं।

पृथ्वी शॉ का उतार-चढ़ाव भरा रहा है करियर

महज 25 साल के पृथ्वी शॉ का क्रिकेट करियर उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें आईपीएल 2025 के ऑक्शन से पहले रिलीज कर दिया था। ऑक्शन में कोई भी फ्रेंचाइजी ने उन पर दांव नहीं लगाया। कई फैंस को लगता था कि चेन्नई सुपर किंग्स में ऋतुराज गायकवाड़ की जगह पृथ्वी फिट हो सकते थे लेकिन सीएसके ने युवा आयुष म्हात्रे को चुना। हालांकि, पृथ्वी ने पिछले सीजन में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में मुंबई के लिए 9 मैचों में 197 रन बनाए और टीम को चैंपियन बनाने में मदद की।

नौसेना हाफ मैराथन विजेता रामेश्वर मुंजाल डोपिंग के कारण पांच साल के लिए प्रतिबंधित

नई दिल्ली। नौसेना के धावक रामेश्वर मुंजाल को मंगलवार को विश्व एथलेटिक्स की एथलेटिक्स इंटीग्रिटी यूनिट ने प्रतिबंधित पदार्थों की जांच में पॉजिटिव आने के बाद पांच साल का प्रतिबंध लगा दिया। उनके प्रतिबंध की अवधि 14 अप्रैल, 2025 (अनंतिम निलंबन की तिथि) से शुरू हुई। मुंजाल ने पिछले साल आठ दिसंबर को मुंबई में नौसेना हाफ मैराथन का खिताब जीता था। लेकिन अब उनसे यह खिताब छीन लिया गया है क्योंकि प्रतियोगिता के दौरान उनके नमूने में एरिथ्रोपोटिन और दरबेपोएटिन पाया गया था। यह दोनों प्रतिबंधित पदार्थ की सूची में आते हैं। इस 27 साल के खिलाड़ी ने तब एक घंटे नौ मिनट और तीन सेकंड के समय के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया था।

सभी प्रकार के स्किन एवं बाल संबंधी समस्याओं का निदान, मुंहासे, झांई, झुर्रियों का इलाज, अनचाहे बालों हेतु लेजर ट्रीटमेंट
सिंघानिया स्किन केयर
Makeover Skin, Hair & Aesthetic Centre
36, प्रथम तल, गुरूकुल कॉम्प्लेक्स कालीबाड़ी, रायपुर 0771-4053311
Email:bsinghania111@yahoo.co.in
रानी सती मंदिर के पास, केनाल लिंकिंग रोड, रवीनगर, राजातालाब, रायपुर
मो. 94252-14479
0771-4020411
www.makeoverraipur.com
त्वचा व बाल संबंधी समस्याओं का इलाज

निवेद चेस्ट & आई केयर
डॉ. देवी ज्योति दाश
M.D. DNB PULMONARY MEDICINE (DELHI) (Gold medalist)
डॉ. नमित नंदे
MS Ophthalmology
उपलब्ध सुविधायें: एलर्जी, अस्थमा, निमोनिया, फिजीयॉथेरेपी, धुम्रपान नियंत्रण स्लिप स्टडी और आईसीयू केयर
आई केयर सुविधायें: मोतियाबिंद, काला मोतिया, डायबिटिक रेटिनॉपैथी और मेडिकल रेटिना
24, Central Avenue, Ground Floor, Below SBI Personal Banking Branch, Choubey Colony, Raipur (C.G.), Mob.: 0711-4337888,7697752001

कान, नाक, गला, एलर्जी एवं वर्टिगो (चक्कर) कोअब्लेशन एवं लेजर सर्जरी हॉस्पिटल
डॉ. जाऊलकर
ई.एन.टी. हॉस्पिटल
(ISO 9001-2000 Certified)
सेन्ट्रल एवेन्यू चौबे कालोनी प्रगति कॉलेज रायपुर (छ.ग.)
फोन: 0771-4044551
समय: सुबह 9.30 से 4.30 तक

सुविधाएं: पी.एफ.टी. ब्रांकोस्कोपी स्लीप स्टडी
डॉ. राठौर चेस्ट क्लिनिक
दमा, टी.बी., छाती एवं एलर्जी रोग विशेषज्ञ
स्पेशलिस्ट : खासी, श्वॉस, दमा, टी.बी., निमोनिया, एलर्जी फेफड़े का कैंसर, खर्राटे व नींद
गरचा कॉम्प्लेक्स, कचहरी चौक, जेल रोड, रायपुर
मो. 7999450384, 7042974029
समय : दोपहर 2.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक (रविवार अवकाश)

उपलब्ध विशेषताएं
• लेप्रोस्कोपिक एवं जनरल सर्जरी
• जनरल मेडीसीन • ऑर्थोपेडिक्स
• जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी
• ऑन्कोलॉजी (सर्जिकल)
• गायनेकोलॉजी
अग्रवाल हॉस्पिटल
(मल्टीस्पेशियेलिटी सेन्टर)
जी.ई.रोड, आर.के.सी. कॉम्प्लेक्स के सामने, रायपुर (छ.ग. 492001)
फोन: +91-0771-4088107/108, ईमरजेंसी नंबर 9109187755, डॉ. सजन अग्रवाल - 9329101037
लेप्रोस्कोपिक सर्जरी में सभी प्रकार की हार्निया, अपेन्डिक्स, पित की थैली, बच्चादानी आदि से संबंधित ऑपरेशन सभी तरह की कैंसर सर्जरी एवं कीमोथेरेपी की सुविधा उपलब्ध
OPD समय - शाम 4 से 6 बजे

मनोरोग नशा उन्मूलन एवं यौन रोग विशेषज्ञ
प्रभा मनोचिकित्सा क्लिनिक
मो. 9977247553
नया पता : शॉप नं. 119, प्रथम तल, लालगंगा निडास, फाफाडीह, रायपुर
समय : सुबह 11.00 से शाम 5.00 बजे तक
सिरदर्द, मिर्गी, मानसिक तनाव, घबराहट, असामान्य व्यवहार, डिप्रेशन, शीर्ष पतन, आदि, हर माह के प्रथम रविवार को कवर्धा में 12.00 से 4.00 एवं 8.30 से 10.30 बेमेतरा में

अष्टविनायक हॉस्पिटल
बच्चों के सभी ऑपरेशन किये जाते हैं।
* आयुष्मान कार्ड / राशन कार्ड द्वारा ऑपरेशन संभव *
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.) 7987225800, 9301744425
बच्चों के विशेषज्ञ सर्जन
डॉ. रितेश रंजन
(MCH, पीडियाट्रिक सर्जन)

डायबिटीज / शुगर संबंधी सभी समस्याएं, थायराइड, मोटापा, प्रेग्नेंसी डायबिटिस, फुलबॉडी चेकअप, डायबिटिक सेक्स रोग, नसों की सुन्नता।
डायबिटिक क्लीनिक
Dr. Satyajeet Sahu Advance Dibetes & Thyroid care centre
Diabetic Clinic
Appointments No. 7724035770 9329004557 9303724304
17, गुरूकुल कॉम्पलेक्स, कालीबाड़ी रायपुर, समय - सुबह 10 से 5, शाम 6 से रात 9 बजे तक

सुविधाएं: मेडिसिन, पॉलीट्रामा, बर्न एण्ड प्लास्टिक लाप्रोस्कोपिक सर्जरी, जनरल सर्जरी, स्पाईन एण्ड न्यूरो सर्जरी, आर्थो, कैंसर (कीमोथैरेपी व सर्जरी), स्त्री रोग, जोड़ प्रत्यारोपण
पाल जी
स्वास्तिक नर्सिंग होम
बर्न एण्ड पॉलीट्रामा सेंटर मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल
(आयुष्मान भारत स्कीम के तहत निःशुल्क ईलाज की सुविधा उपलब्ध)
श्यामनगर जल विहार कॉलोनी पानी टंकी के पास तेलीबांधा मरीन ड्राइव के पीछे
मो. 7991031330
मो. 0771-4347172

डॉ. मनोज अग्रवाला
एमडी (सीएमसी वेल्लोर) (गोल्ड मेडलिस्ट)
स्किन क्लिनिक
रोग: • मुहासें • सोरासिस • स्किन एलर्जी • पिगमेंटेशन • विटिलियो / ल्यूकोडरमा • पीआरपी थेरेपी • एलोपेसिया • अर्टीकेरिया • फंगल इंफेक्शन • टैली कंसल्टेशन • लेजर थेरेपी
2 चौबे कॉलोनी, रायपुर (छत्तीसगढ़) 0771-4003777, 77778-76292

बांठिया हॉस्पिटल
राजा तालाब रोड, रायपुर (छ.ग.)
फोन: 0771-2425009, 2424737
आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत हार्ट की एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी एवं सिरियस मरीजों का ईलाज

विज्ञापन हेतु संपर्क करें :
7987119756, 9303508130

Symbol of Trust
at
Since 1957
AT PALACE
Kotwali Chowk
follow us on @atjewels.in
शुभ अक्षय तृतीया
JITNA SONA UTNA CHANDI
*VALID FOR 30-04-2025 ONLY
देवी लक्ष्मी के आशीर्वाद से आप और आपका परिवार, सभी बाधाओं से मुक्त हो, तथा धन, धान्य एवं सन्तान से सम्पन्न हो। आपके समृद्ध, सम्पनता और सफलता की मनोकामनाओ के साथ
AT परिवार की ओर से
अक्षय तृतीया की उन्नत शुभकामनाएँ
25%* OFF ON MAKING CHARGES FOR DIAMOND & POLKI JEWELLERY
50%* OFF 5 TO 10 LAKHS
75%* OFF 10 TO 25 LAKHS
100%* OFF ON MAKING CHARGES FOR DIAMOND & POLKI JEWELLERY
शुद्ध हाथो से, शुद्धता के साथ 67 वर्षो से
स्वयं के कारखाने में निर्मित 100% शुद्ध आभूषण
ब्राइडल एवं अन्य आभूषणों में हर बार एक्सक्लूसिव कलेक्शन
*T&C Apply
An ISO 9001:2015 Company
अनोपचंद तिलोकचंद
ज्वेलर्स प्रा.लि.
खुशियों की शुरुआत सुबह 9:00 बजे से!
SCAN & ADD US ON SOCIAL MEDIA
VALET PARKING AVAILABLE
AT पैलेस, सिटी कोतवाली, रायपुर
Call : 94255 62811, 0771 4025343
Website www.atjewels.in
MAGNIFICENT FLAGSHIP STORE A.T. Palace
at BUILDCON PRIVATE LIMITED
रायपुर AT पैलेस सिटी कोतवाली चौक
रायपुर अनूप प्लाजा, सदर बाजार
रायपुर न्यू क्लॉथ मार्केट, गेट नं. 2, पंडरी
बिलासपुर लिंक रोड, सी.एम.डी. चौक
कोरबा पावर हाउस रोड
गोंदिया गाँधी प्रतिमा के पास
Eighty JEWELLERS EIGHTY JEWELLER

विरासत

छत्तीसगढ़ के महापुरुषों की गौरवगाथा

छत्तीसगढ़ की पावन धरती स्वतंत्रता संग्राम के कई अमर सपूतों की गवाह रही है। इन्हीं में से एक नाम है बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव का। बाबू साहब एक ऐसे निर्भीक और दूरदर्शी स्वतंत्रता सेनानी थे। जिनके नेतृत्व में कंडेल नहर सत्याग्रह ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। छोटेलाल श्रीवास्तव ने कंडेल नहर सत्याग्रह आंदोलन शुरू किया, जो अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह था, जिन्होंने किसानों पर बहुत अधिक कर लगाया था और कर वसूलने के लिए क्रूरता की थी। आंदोलन के जोर पकड़ने के साथ ही महात्मा गांधी ने 21 दिसंबर 1920 को कंडेल गांव का दौरा किया था। महात्मा गांधी ने कंडेल पहुंचकर सत्याग्रह को समर्थन दिया था। इस घटना के बाद अंग्रेजी हुकूमत को झुकना पड़ा था।

कंडेल नहर सत्याग्रह के सूत्रधार बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव

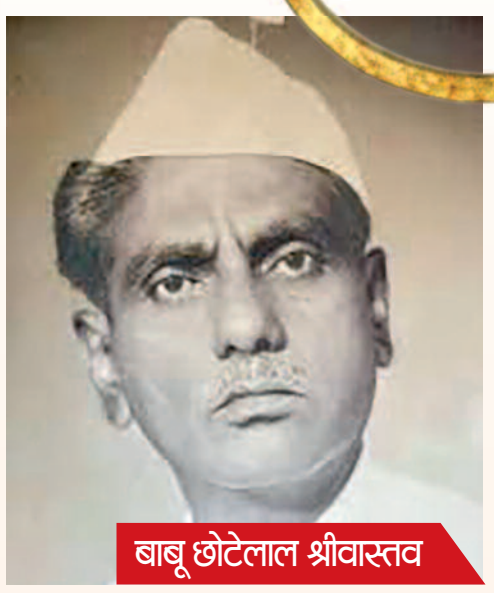

बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव

कायस्थ परिवार में हुआ था बाबू साहब का जन्म

दुबली पतली काया सांवला रंग नेत्रों में गहरी शांति और ज्योति लिए निष्कपट किन्तु निर्मोक व्यक्तित्व के स्वामी का नाम छोटे लाल श्रीवास्तव था। छत्तीसगढ़ में स्वाधीनता का जो युध्द लड़ा गया उसकी अग्रिम पंक्ति योध्दाओं में से एक बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव थे। लोग उन्हे अत्याधिक आदर के कारण बाबू साहब के नाम से संबोधित करते थे। बाबू साहब का जन्म 1889 में धमतरी तहसील के कंडेल ग्राम के संपन्न कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता गुलाब बाबू कंडेल तथा भोथली ग्राम के मालगुजार थे। माता रेवती बाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। छोटेलाल बाबू के कारण उनके जन्म स्थान कंडेल ग्राम का नाम स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में अमर हो चुका है।

छात्र जीवन में खेती बाड़ी संभालने की जिम्मेदारी

सन 1910 ई. में छोटेलाल बाबू धमतरी के मेनोनाइट मिशन स्कूल में शिक्षा ले रहे थे उसी वर्ष उनके पित्ता का निधन हो गया। छोटेलाल बाबू को छात्र जीवन त्याग कर गांव में खेती बाड़ी संभालने के लिए बाध्य होना पड़ा। धमतरी में भी उनका एक बड़ा घर था। छात्र जीवन की समाप्ति के बाद वे पं. सुंदर लाल शर्मा तथा पं नारायण राव मेघावाले के संपर्क में आए और उन्होने सार्वजनिक तथा राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। धमतरी वाले अपने घर में वे निर्धन तथा अनाथ बालकों को निःशुल्क शिक्षा देते थे। शिक्षा ही नहीं उनके भोजन, वस्त्र आदि के सुविधाएं भी अपने खर्च से जुटाते थे।

अपने ही खर्च से सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना की

सन 1915 में बाबू लाल साहब ने धमतरी नगर में अपने ही खर्च और परिश्रम से सार्वजनिक श्रीवास्तव पुस्तकालय की स्थापना की। यह पुस्तकालय आगे चलकर राष्ट्रीय गतिविधियों और देश भक्ति को प्रेरणा का केन्द्र बनाया गया। इस पुस्तकालय में अमृत बाजार पत्रिका, विश्व मित्र, प्रताप, चित्रमय जगत, अभ्युदय, सरस्वती आदि पत्रिकाऐं मंगायी जाती थी। राष्ट्रीयता के प्रचार में इन पत्र-पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। चित्रमय जगत पूना से निकलता था और उसके सम्पादक पं. माधव राय सप्रे थे। सन-1915 में ही उन्होने की अपने घर में सप्ताहिक गोष्ठी के आयोजन का आरंभ किया। प्रत्येक रविवार को इस गोष्ठी में साहित्यिक, राजनीतिक और सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर चर्चा होती थी।

राष्ट्रीय विद्यालय और खादी उत्पादन केंद्र की स्थापना

महात्मा गांधी के आह्वान पर छात्रों ने सरकारी स्कूलों का त्याग कर दिया जुलाई सत्र 1921 में इस छात्रों की शिक्षा के लिये धमतरी में बाबू सहाब के प्रयासो से राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गई शाला का संचालन बाबू साहब के हाथों में रहा शाला का सारा खर्च भी वे खुद उठाते थें। स्वयं भी अध्यापन कार्य करते थे 1924 तक बाबू साहब ने अपने खर्च में विद्यालय का संचालन किया। खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना सन 1921 में ही स्वदेशी प्रचार अभियान के अंतर्गत बाबू ने अपनी ही घर में एक खादी उत्पादन केन्द्र की स्थापना की इस केन्द्र का भार सारा खर्च भी खुद उठाते थे।

कंडेल नहर सत्याग्रह से मिली ख्याति

छोटेलाल बाबू को सार्वाधिक ख्याति कंडेल नहर सत्याग्रह के कारण मिली। सन 1920 में नहर विभाग के अधिकारी नहर पानी का अनुबंध करने के लिए दबाव डालना शुरू किया। जब ग्रामीणों ने अनुबंध को स्वीकार नहीं किया तब अधिकारी ने किसानों को अन्याय तरीको से सताना शुरू किया। 4 अगस्त सन 1920 में नहर अधिकारियों ने कंडेल ग्रामवासियों पर नहर से पानी चुराने का आरोप लगाया। यह आरोप सर्वथा निराधार था। यह अधिकारियों का षड्यंत्र था जो ग्रामीणों को अनुबंध स्वीकार ना करने के कारण फंसाने के लिए रचा गया था। ग्रामवासियों ने सफाई दी कि सावन के महिने में जब इस क्षेत्र में भारी वर्षा हुई है तो कृषक नहर काट कर पानी क्यों चुराएगें। खेत तो वर्षा के पानी से ही लबालब थे किन्तु ग्रामीणों के सफाई पर ध्यान ना देकर कण्डेल ग्रामवासियों पर सामुहिक रूप से 4050.00 की राशि का जुर्माना कर दिया गया। जुर्माना वसूल ना होने पर कृषको के मवेशियों को कुर्क करने की नोटिस दे दी गई। जब स्थिति यहां तक पहुंच गई तब छोटेलाल बाबू ने कृषको का नेतृत्व अपने हाथों में ग्रहण किया। बाबू साहब ने कृषकों को संगठित होकर शासन की इस अन्यायपूर्ण कार्यवाही का जमकर विरोध करने का आव्हान किया। बाबू साहब ने नहर अधिकारियों की चुनौती स्वीकार की, उन्होंने ग्रामीणों की सभाएं ली और संकल्प किया कि कोई ग्रामीण जुर्माने की राशि नहीं पटाएगा भले ही सरकार उनकी मवेशियों को कुर्क कर ले। बियासी के दिन थे और मवेशियों के कुर्क हो जाने से जो भी नुकसान होने वाला था उसे ग्रामीण बर्दाश्त करने को तैयार थे। नहर आधिकारियों ने अर्थदण्ड ना पटाने पर कंडेल ग्राम के कृषकों कि मवेशियां कुर्क कर ली और उन्हें नीलाम कर जुर्माने कि राशि वसूल करने की घोषणा कर दी गई। बाबू साहब ने तहसील व अन्य नेताओं से परामर्श किया। निर्णय लिया गया कि शासन के इस अविवेक पूर्ण निर्णय और अन्याय का विरोध किया जावेगा और गांव-गांव जाकर कुर्क शुदा मवेशियों को नीलामी में कोई बोली ना बोले इसके लिए जनमानस तैयार किया जाए।

धमतरी के कोष्टापारा के बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव चौक स्थित उनका पुराना निवास

रूद्री जंगल सत्याग्रह

अगस्त 1930 में रूद्री के निकट नवागांव में जंगल सत्याग्रह आरंभ करने का निर्णय लिया गया। 1300 सत्याग्रहियों को प्रशिक्षण दिया गया सत्याग्रह समिति के पं. नारायण राव मेघावाले डिक्टेटर नियुक्त किए गए। 22 अगस्त से सत्याग्रह प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया किन्तु उसी दिन सुबह नारायण राव मेघावाले, नत्थूजी जगताप को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। मेघा वाले ने जेल जाते जाते अपनी जगह पर बाबू साहब को डिक्टेटर नियुक्त किया। उसी दिन तहसील कचहरी के मैदान में एक आम सभा का आयोजन किया गया बाबू साहब ने गिरफ्तारी का विरोध किया और सत्याग्रह को शांति पूर्वक चलाने में जनता की सहयोग की अपील की गई। दूसरे दिन सत्याग्रहियों का जत्था रूद्री के लिए रवाना हुआ। उसी समय बाबू साहब को पुलिस ने 144 धारा नोटिस थमा दिया बाबू साहब पर भला ऐसी नोटिसों का क्या प्रभाव पड़ता वे सत्याग्रहियों के साथ आगे बढ़ गये बाबू साहब को गिरफ्तार कर रायपुर जेल भेज दिया एक वर्ष का सश्रम कारावास तथा 1000/- रू. की जुर्माना की सजा दी गई।

गांधी जी का धमतरी आगमन

अन्य नेताओं के प्रयास से संस्कृत पाठशाला की स्थापना

सन 1925 में छोटे लाल बाबू तथा अन्य नेताओं के प्रयास से संस्कृत पाठशाला की स्थापना की गई इस शाला के संचालन के लिए ट्रस्ट की स्थापना की बाबू साहब उनके मंत्री नियुक्त किये गये सन 1925 को इस संस्था का भवन भी बन गया। सन 1935 में पं. सुन्दर लाल शर्मा मेधावाले नत्थूजी जगताप और छोटेलाल बाबू के सहयोग से धमतरी में एक अनाथलय की स्थापना की गई।

औषधि बनाकर करते थे निःशुल्क जनसेवा

कंडेल नहर सत्याग्रह आंदोलन न केवल छत्तीसगढ़ बल्कि पूरे भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हुआ। उनका जीवन सादगी, सेवा और स्वावलंबन का उदाहरण था। उनकी बहन खेती-बाड़ी संभालती थीं, जबकि बाबू साहब आयुर्वेदिक औषधियां स्वयं तैयार करते और लोगों का निःशुल्क इलाज करते थे।

-यतीश विजय कुमार श्रीवास्तव, प्रपौत्र

सेवा और समर्पण की मिसाल थे बाबू साहब

वे हमेशा दूसरों के बारे में सोचते थे, और उनका हृदय दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानता था। वे निस्वार्थ भाव से लोगों की मदद करते थे, चाहे कोई बीमार हो, जरूरतमंद हो या असहाय बाबू साहब बिना किसी भेदभाव के सहायता के लिए आगे आ जाते थे।

-अमितेश श्रीवास्तव, प्रपौत्र

1937 में संभाली धमतरी पालिका की जिम्मेदारी

सन 1937 में छोटेलाल बाबू धमतरी नगर पालिका के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने मात्र जनसेवा की भावना से उस पद को स्वीकार किया। बाबू साहब अच्छे चिकित्सक भी थे सूर्य किरण तथा प्राकृतिक विकित्सा पद्धति से उन्होंने अनेक रोगियों की निःशुल्क सेवा की। अगस्त 1942 में बाबू साहब फिर से गिरफ्तार कर रायपुर जेल भेज दिये गये, बाद में उन्हें नागपुर जेल में रखा गया। छोटेलाल बाबू त्याग बलिदान सेवा के प्रतीक थे। राष्ट्रीय विद्यालय और खादी केन्द्र के संचालन में उन्हें 20 हजार रुपए का कर्ज चुकाना पड़ा। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में बाबू साहब राजनीति से विरक्त होकर अपने ग्राम कंडेल में रहने लगे थे 18 जुलाई को 86 वर्ष की आयु में बाबू साहब के स्वाधीनता संग्राम के तीर्थ स्थल कंडेल ग्राम में निधन हो गया धमतरी के नागरिकों को उसके निधन का समाचार मिला नगर में बाबू साहब का शव धमतरी लाया गया तथा सारा नगर शोक यात्रा में शामिल हुआ।

गांधी जी का कंडेल आगमन

जब नहर अधिकारियों के कानों में महात्मा गांधी के कंडेल आगमन का समाचार मिला तो उनके कान खड़े हुए वे दौड़े-दौड़े कंडेल पहुंचे। बापू के आने के पहले ही रकम की वसूली रद्द कर दी। फिर वह स्वर्णिम दिन 21 दिसम्बर सन 1920 आया जब पूज्य बापू महात्मा गांधी धमतरी होते हुए इस पावन धरती कंडेल में कुछ समय के लिए आए। गांधी जी के साथ पं. सुंदर लाल शर्मा पंडित रविशंकर शुक्ल मौलाना शौकत अली मौजूद थे। हजारी लाल जैन इस गाड़ी को चला रहे थे। गांधी जी बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव के मकान के सामने चबूतरे में बने मंच पर पहुंचे वहां बापू ने धमतरी और कंडेल की सत्याग्रही जनता को संबोधित किया और अंत में बाबू साहब ने गांधी जी का आभार प्रदर्शन किया। बाबू साहब ने गांधी जी से कंडेल थोड़े समय के लिए चलने की प्रार्थना की जिसे पूज्य बापू गांधी जी ने स्वीकार कर लिए।

आज रात 8 से 9 बजे

अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीतियों का डटकर विरोध

बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव जी का योगदान अमिट है। उन्होंने अपने साहस और नेतृत्व से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई। खासतौर पर कंडेल नहर सत्याग्रह के माध्यम से बाबू छोटेलाल जी ने अंग्रेजों के अन्यायपूर्ण नीतियों का डटकर विरोध किया।

-डॉ. रमन सिंह, विधानसभा अध्यक्ष, छत्तीसगढ़

अन्याय और शोषण के खिलाफ बिगुल फूंका

बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव ने अंग्रेजी शासन द्वारा किसानों पर थोपे गए अन्याय और शोषण के खिलाफ उन्होंने विरोध का बिगुल फूंका। इस आंदोलन ने न केवल किसानों के अधिकारों की रक्षा की, बल्कि देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम को भी प्रोत्साहित किया। उनके निरंतर प्रयास और संघर्ष के परिणामस्वरूप महात्मा गांधी का छत्तीसगढ़ आगमन संभव हुआ।

-अजय चंद्राकर, वरिष्ठ विधायक, पूर्व मंत्री

अपने खर्च किए कई कल्याणकारी कार्य

बाबूजी ने अपने खर्च से कई लोक कल्याणकारी कार्य किए। लाइब्रेरी, स्कूल, कालेज, गौशाला, खादी उत्पादन केंद्र खोले। नहर सत्याग्रह, सिहावा-रूद्री जंगल सत्याग्रह, नागपुर झंडा सत्याग्रह में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

-ओंकार साहू, विधायक धमतरी

अंग्रेजों के खिलाफ नहर सत्याग्रह किया

बाबू जी ने नहर टैक्स माफ कराने अंग्रेजों के विरूद्ध नहर सत्याग्रह किया। इस आंदोलन में समूचे क्षेत्र की जनता ने भाग लिया और अंग्रेजों का असहयोग किया। एक साल तक चले इस आंदोलन के बाद अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा और कृषकों का टैक्स माफ करना पड़ा।

-इंदर चोपड़ा ,पूर्व विधायक महासमुंद

किसानों के हक के लिए सरकार से भिड़ जाते थे

बाबू छोटेलाल श्रीवास्तव धमतरी में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के जन्मदाता हैं। अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध बिगुल फूंकने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। पूरे अंचल की जनता उनकी एक आवाज पर इकट्ठे हो जाती थी। गरीब, मजदूर, कृषकों के हक के लिए सरकार से भिड़ जाते थे।

-रामू जगदीश रोहरा, महापौर धमतरी

खादी केंद्र की स्थापना से दिया स्वदेशी को बढ़ावा

बाबू साहब ने छत्तीसगढ़ में न केवल कंडेल नहर सत्याग्रह के माध्यम से ब्रिटिश शासन का विरोध किया, बल्कि वे किसानों की आवाज बनकर सामने आए। उन्होंने स्वदेशी आंदोलन को भी बल दिया। उन्होंने खादी केंद्र की स्थापना कर ग्रामवासियों को आत्मनिर्भरता की राह दिखाई।

-विनोद कुमार पाठक, प्रिंसिपल

ईमानदार, निर्भीक और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता

बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव कंडेल गांव के मालगुजार थे और जनता के बीच एक ईमानदार, निर्भीक और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता के रूप में पहचाने जाते थे। कंडेल नहर सत्याग्रह में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी।

-डॉ. हेमवती ठाकुर, सहायक प्राध्यापक इतिहास

शिक्षा के क्षेत्र में भी निभाई ऐतिहासिक भूमिका

कंडेल नहर सत्याग्रह छत्तीसगढ़ के इतिहास में वह ज्वाला थी, जिसने देशव्यापी असहयोग आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की। बाबू साहब केवल एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे, बल्कि समाज के जागरूक शिक्षक और विचारशील संगठनकर्ता भी थे।

-डॉ. चन्द्रशेखर चौबे, रिटायर्ड प्रिंसिपल

संघर्षशील स्वतंत्रता सेनानी

बाबू साहब की उपस्थिति में लोगों का मन स्थिर और निश्चिंत हो जाता था। वे न केवल एक संघर्षशील स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि एक सरल, सहज व्यक्तित्व के धनी भी थे।

-मुर्हाराम कमलवंशी, स्थानीय

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक अनिल कुमार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से मुद्रित एवं हरिभूमि काम्पलेक्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक धनंजय वर्मा, संपादक (समन्वय) ब्रत्मवीर सिंह। RNI No. CHHHIN/2002/07457, फोन : 0771-4242222, e-mail:raipur@haribhoomi.com